रहस्य-रोमांच विशेषांक

नवम्बर 95

मूल्य - 18/-

मंत्र-तंत्र-यंत्र

विज्ञान
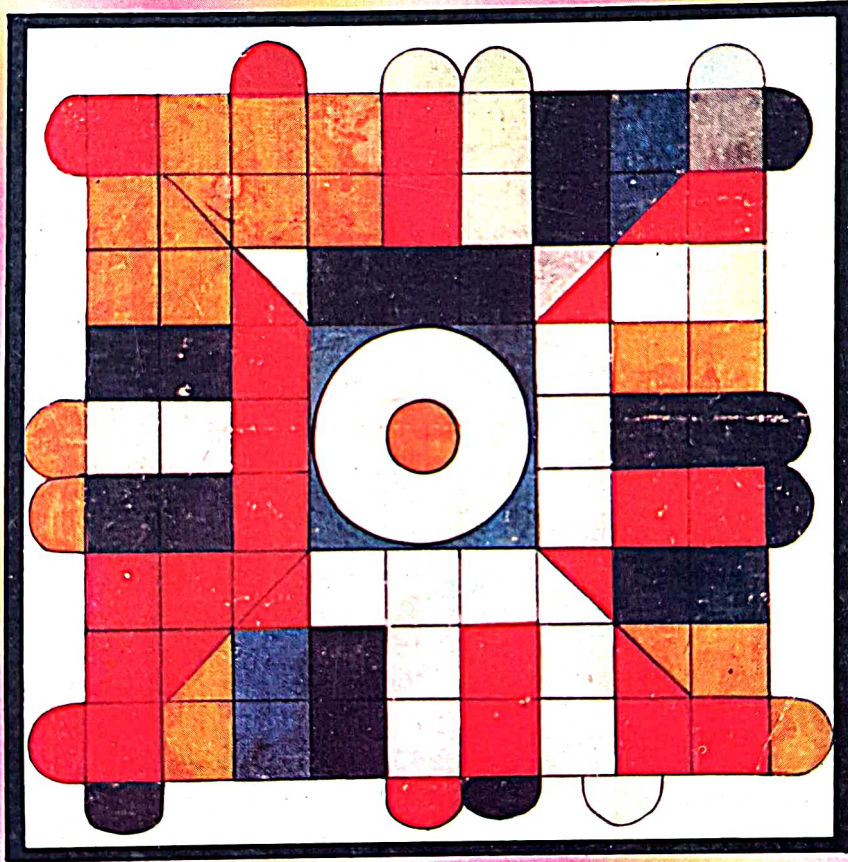
दिव्यपात

अपराजिता सिद्धि

भैरव साधना

हाई लाइफ

दीक्षा : जीवन की समस्याओं से छलांग लगाने की क्रिया

राजनीतिक विस्फोट

अगले छः महीनों में

अनमोल कृतियां. . .

ज्ञान को, विद्वत्ता को नापने का कोई पैमाना नहीं होता. . . कि मेरे पास इतना ज्ञान है, सामने वाले के पास इतनी विद्वत्ता है. . . ज्ञान और विद्वत्ता को बढाने के लिए ही तो आवश्यकता है अच्छे साहित्य के अध्ययन करने की. . .

ज्ञान की गरिमा से युक्त . . . सम्पूर्ण जीवन को जगमगाने वाले

अद्भुत और अनिवर्चनीय ग्रंथ

पूज्य गुरुदेव "डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी" के आशीर्वाद से युक्त
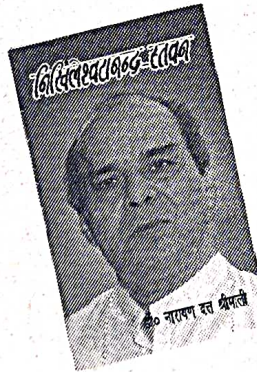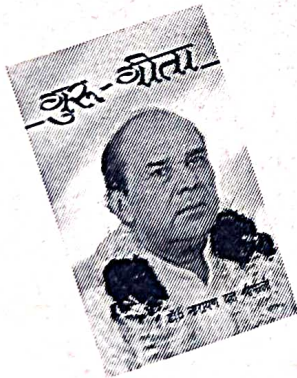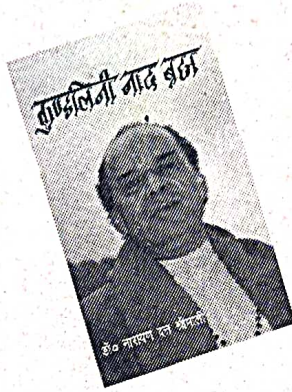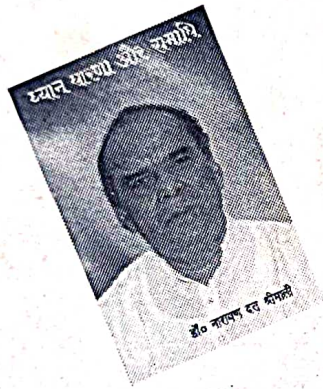
अहं ब्रह्मास्मि	240/-
गुरु गीता	150/-
मूलाधार से सहस्त्रार तक	150/-
लक्ष्मी साधना	150/-
परकाया प्रवेश	150/-
कुण्डलिनी नाद ब्रह्म	96/-
फिर दूर कहीं पायल खनकी	96/-
ध्यान, धारणा और समाधि	96/-
निखिलेश्वरानन्द स्तवन	96/-
महालक्ष्मी साधना एवं सिद्धि	30/-
विश्व की अलौकिक साधनाएं	30/-
मुहूर्त ज्योतिष	30/-
भौतिक सफलताएं : साधना एवं सिद्धियां	30/-
स्वर्ण तंत्रम्	30/-

अंग्रेजी कृतियां

Meditation	240/-
Kundalini Tantra	240/-

विशेष योजना : 31 दिसम्बर 95 तक 300/- तक के साहित्य मंगाने पर डाक व्यय में छूट प्रदान की जायेंगी।

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7196700

मंत्र-तंत्र-यंत्र-विज्ञान, डॉ0 श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

आनो भद्रा : क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

रहस्य-रोमांच विशेषांक
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
राजनीतिक विस्फोट
अगले छः महीनों में

वर्ष 15 अंक 11
नवम्बर 1995 पृष्ठ 80

प्रधान संपादक
नन्दकिशोर श्रीमाली
सह सम्पादक मण्डल
डॉ. श्यामल कुमार बनर्जी, सुभाष शर्मा, गुरु सेवक, गणेश वटाणी, नागजी भाई
संयोजक
कैलाश चन्द्र श्रीमाली
वित्तीय सलाहकार
अरविन्द श्रीमाली
मूल्य (भारत में)
एक प्रति : 18/-
वार्षिक : 180/-

सम्पर्क
सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034,
फोन : 011-7182248
फेक्स : 011-7196700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज०)
फोन : 0291-32209
फेक्स : 0291-32010

प्रकाशक एवं स्वामित्व श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली द्वारा नव शक्ति इन्डस्ट्रीज, C-13, न्यू रोशनपुरा, नजफगढ़ दिल्ली से मुद्रित तथा मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर से प्रकाशित।

विषय सूची

साधना

ज्योतिष

सद्गुरुदेव

दीक्षा

स्तुति

विवेचना

विशेष

स्तम्भ

रिपोर्ताज

प्रार्थना

रहस्यं सर्वस्वं प्रतिपदति तंत्रस्य सकलं,
प्रयोक्तव्यं मंत्रं निगदति च सततं श्रुतिनुतम्।
समस्तं यंत्राणां प्रकटयति देवार्चन विधिं;
अतस्तं कल्याणं विदधतु च वै साधनवताम्।।

यह रहस्य रोमांच अंक तंत्र से सम्बन्धित सभी रहस्यों को प्रतिपादित करके शास्त्रोक्त सभी साधनात्मक मंत्रों को उजागर करता है, यंत्रों से सम्बन्धित, सभी देवार्चन विधि को भी स्पष्ट रूप से प्रतिपादित करता है, इसी मंगलकामना के साथ यह पत्रिका निरन्तर साधकों का कल्याण सम्पादन करती हुई, लोकहितैषिणी बनी रहे।

. . . भावना . . .

- शरीर एक दीपक ही तो है।
- यदि इसमें भावना का तेल और प्रेम की बाती तथा विरह की अग्नि न हुई तो . . .
- जीवन का क्या अर्थ रह जायेगा?
- जिस स्थान पर भावनायें हैं, वहां निश्चित ही ईश्वर का वास है. . .
- और ईश्वर की सत्ता कोई मामूली सत्ता नहीं है, वह तो विराट है।
- और इस विराट को पहिचानने के लिए हमें अपने अन्दर उतरना ही पड़ेगा . . .
- समर्पण की, त्याग की, विश्वास की, श्रद्धा की और भक्ति की सीढ़ी लेकर भावना के धरातल पर।
- और जव हम भावना के धरातर पर उतरते हैं, तो सम्पूर्ण प्रकृति रसमय हो जाती है।
- पक्षियों का कलरव, नदियों का रुनझुन करता शोर, सितारों की झंकार . . .
- सभी कुछ तो एक लय में आवद्ध होकर हृदय को लुभाने लगती है।
- तव हमारा सम्पूर्ण जीवन आनन्दमय हो जाता है. . . एक अवर्णनीय आनन्द की वर्षा जीवन में होने लगती है।
- और तव सफल होता है यह मानव जीवन, गुरु का साहचर्य।

मुझसे कोई पूछे तुम कहां रहना चाहोगे, तो मैं उस स्थान पर रहना पसन्द करूंगा, जहां के प्राणियों में प्रेम की भावना का साम्राज्य होगा और गुरुदेव की आशीर्वादयुक्त शीतल छाया होगी।

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका में प्रकाशित लेखों से संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी स्थान, नाम या घटना का किसी से कोई संबंध नहीं है। यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय, तो उसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते या उनके बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना संभव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के वारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या संपादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बारे में, असली या नकली के वारे में अथवा प्रभाव या न प्रभाव होने के वारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें, सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद - विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में १८०/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या वंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंच वर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ आदि की जिम्मेवारी साधक की स्वयं होगी तथा साधक कोई ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करे, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित एवं विज्ञापित आयुर्वेदिक औषधियों का प्रयोग पाठक अपनी जिम्मेवारी पर ही करें। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी, संन्यासी या लेखकों के मात्र विचार होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री आप अपनी इच्छानुसार कहीं से भी मंगा सकते हैं। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) वताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस संवंध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस संवंध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि उससे संवंधित लाभ तुरंत प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस संवंध में किसी प्रकार की कोई आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस संवंध में किसी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

कृपया ध्यान से पढ़ें

इस माह में प्रकाशित दीक्षाओं के लिए निर्धारित तिथि ''प्रिंटिंग मिस्टेक'' के कारण गलत छप गयी है। कवर के अंतिम पृष्ठ पर प्रकाशित दीक्षाओं की तिथि निम्न प्रकार से परिवर्तित की गई है, अतः यहां प्रकाशित दिनांक पर ही साधक एवं पाठक दीक्षा प्राप्त करने के लिए गुरुधाम में आयें–

दिनांक ७ से १० दिसम्बर १९९५	
०७-१२-१९९५	ब्रह्मत्व सिद्धि दीक्षा
०८-१२-१९९५	कृष्णत्व सौन्दर्य प्राप्ति दीक्षा
०९-१२-१९९५	अष्ट लक्ष्मी प्राप्ति दीक्षा
१०-१२-१९९५	सम्पूर्ण रोग निवारण दीक्षा

दिनांक २१ से २४ दिसम्बर १९९५	
२१-१२-१९९५	ब्रह्माण्ड सम्मोहन दीक्षा
२२-१२-१९९५	सर्व ग्रह शांति दीक्षा
२३-१२-१९९५	ऐश्वर्य लक्ष्मी प्राप्ति दीक्षा
२४-१२-१९९५	शीघ्र ऋण मुक्ति दीक्षा

ये दीक्षाएं पूज्यपाद गुरुदेव केवल ''गुरुधाम'' दिल्ली में ही उपरोक्त दिवसों पर प्रदान करेंगे।

श्री गोवर्धन वी. वर्मा

परम पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में

२१ नवम्बर १९९५

बैंगलौर

प्रत्यक्ष लक्ष्मी वेंकटेश्वर साधना शिविर

★ विविध दुर्लभ दीक्षाएं – जो जीवन की समस्याओं को मिटाने में सहायक है।

★ दिव्यपात – विश्व की दुर्लभ आध्यात्मिक चेतना कुण्डलिनी जागरण।

★ प्रत्यक्ष लक्ष्मी प्रयोग – जो ऋणहर्त्ता, धनप्रदाता लक्ष्मी सिद्धि में सहायक है।

शिविर शुल्क - ३३० - – स्थान व अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें–

श्री गोवर्धन वी. वर्मा, मकान नं० १०५, २ रा माला, ३ रा मेन रोड, ७ वां क्रास के पास, चामराजपेट, बैंगलोर-५६००१८
टेलीफोन : ०८०-६६०६०५२ (घर), ०८०-२२१५६०१ (ऑफिस)

न मे शक्तिर्देवः समविषम भावं विगलितं,
रहस्यं नैवं ते परिगदितुमखिलं परिगतं।
न मे श्रद्धाभक्तिः बहुविधतमोध्वंसनविधौ;
परं लब्धुं कामः निखिल! निखिलं ज्ञानमनघम्।।
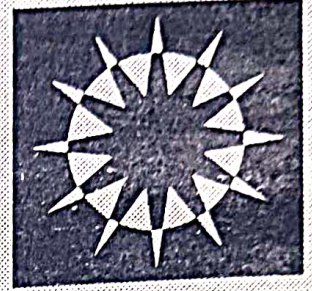
"हे गुरुदेव! मेरे मन में उठने वाले अनेक निरर्थक विचारों को निरस्त करने के लिए मुझ मे सामर्थ्य नहीं है, आपके साधनात्मक दिव्य एवं अलौकिक रहस्यों को भी मैं नहीं जानता हूं। अज्ञानजनित प्रबल अन्धकार को दूर करने के लिए श्रद्धा और भक्ति भी मुझमें नहीं है, फिर भी आपके उस पावनतम ज्ञान को प्राप्त करने के लिए मैं प्रबल आकांक्षी हूं।"

जब पहली बार मानव ने एक साथ मिलकर रहना प्रारम्भ किया, तो अपने समाज को व्यवस्थित रूप से चलाने के लिए कई नियम और कई मान्यताओं को बनाया। ऋग्वेदकालीन युग में जीवनयापन का जो आयाग निर्धारित किया गया था, उसी के अनुसार उस युग में व्यक्ति पुरुषार्थ करता था। धीरे-धीरे युग बदला तो मान्यताएं भी बदलीं, क्योंकि आने वाली पीढ़ी ने कुछ नियमों को अपनी सुविधानुसार ढाल लिया और जिनमें परिवर्तन करना सम्भव नहीं हुआ, उन नियमों को या तो उसी रूप में अपना लिया या फिर छोड़ दिया।

धर्म के क्षेत्र में परिवर्तन करना किसी भी पीढ़ी के लिए सम्भव नहीं हो सका; हां, इतना अवश्य हुआ कि अनेक नये-नये सम्प्रदाय बन गये, लेकिन उनकी मान्यताएं अपने पुराने रूप में ही उनके विचारों पर छायी रहीं। फलस्वरूप वे मान्यताएं जो कभी समाज
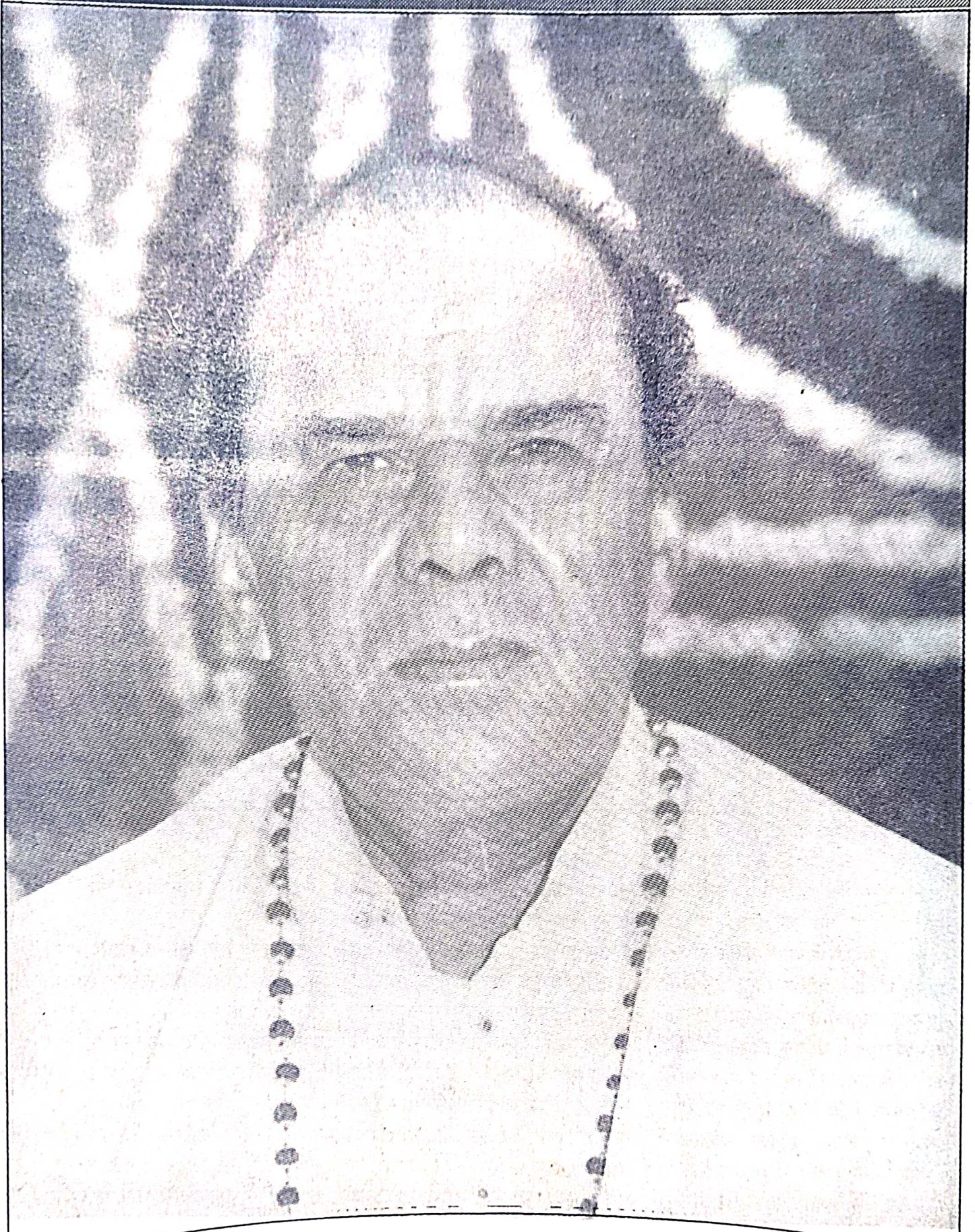
पूज्यपाद गुरुदेव

के लिए उपयोगी मानी जाती रही हैं, परिवर्तित न होने के कारण धीरे-धीरे लोगों के मानस के किसी कोने में दुबक कर रह गयीं।

— और यदि किसी ने उन मान्यताओं पर चल कर दिखाने का प्रयास किया भी, तो उसे रूढ़िग्रस्त करार दे दिया गया। यही कारण है, कि पूजा-पाठ, साधना-आराधना मात्र बूढ़े और असहाय लोगों के अवलम्बन के रूप में परिभाषित होने लगा।

आद्यगुरु शंकराचार्य ने धर्म की इस दुर्दशा को रोकने का प्रथम प्रयास किया; तत्कालीन समाज पूजा-पाठ एवं साधना को सम्मानपूर्वक दृष्टि से देखते हुए अपने जीवन का अंग बना ले, अतः उन्होंने धर्म के स्वरूप में परिवर्तन किया।

— और जब समाज ने साधनाओं का उपनिषद् के रूप में सरलीकरण होते देखा, तो इसे ललक कर अपनाया, फलस्वरूप साधना और सिद्धियां मात्र साधु-संन्यासियों की धरोहर न बन कर गृहस्थ साधकों के जीवन का भी आधार बन गयीं।

समाज के उतार-चढ़ाव के साथ अनेकों परिवर्तन धार्मिक मान्यताओं में भी हुए और परिवर्तन होना भी चाहिए। अतः वर्तमान समय में भी युग के अनुसार जीवन का नव निर्माण करने के लिए आवश्यक है, कि साधना विधियों का पुनः सरलीकरण किया जाय, जिससे भौतिकता की दौड़ में शामिल व्यक्ति सहजता से इसे अपना सके।

— क्योंकि व० आदिम युग तो अब है नहीं, कि नदी के किनारे बैठें और वर्षों तक मंत्रों का जप करते रहें या फिर घर से निकल पड़ें जंगल की ओर।

आज का मनुष्य प्रत्येक कार्य को वैज्ञानिक दृष्टि से परख रहा है, ऐसे समाज में आज एक छोटा-सा बच्चा भी अत्यधिक महत्त्वाकांक्षी हो गया है, वह भी उन्नति के शिखर पर पहुंचना चाहता है, काल को अपने नियन्त्रण में कर उससे आगे निकल जाना चाहता है, मात्र अपने समाज, अपने देश में ही नहीं, पूरे विश्व के सामने अपना कद इतना ऊंचा करना चाहता है, जिससे लोग उसके ज्ञान, उसके नाम को पहिचान सकें, अपने जीवन में उतार सकें।

इतना सब कुछ पाना मात्र व्यक्ति के अपने परिश्रम द्वारा ही सम्भव नहीं है, उसे दैवी बल की आवश्यकता पड़ती ही है और जब मनुष्य का परिश्रम और दैवी बल दोनों साथ-साथ प्रभावी होते हैं, तो निश्चित रूप से वह व्यक्ति अपनी उच्च महत्त्वाकांक्षा को पूरा करता हुआ, जीवन का नव निर्माण करने में सक्षम हो जाता है। इस कारण से भी साधना की परम्पराओं को परिवर्तित करने की आवश्यकता है। जैसे प्राचीन काल में युद्ध के लिए जिन अस्त्रों का प्रयोग किया जाता था, उन अस्त्रों के बल पर वर्तमान युग में युद्ध नहीं जीता जा सकता, आज युद्ध जीतने के लिए आधुनिक आयुधों का होना आवश्यक है। इतना अवश्य है कि प्राचीन काल में प्रयोग में लाये जाने वाले अस्त्रों का परिवर्तित स्वरूप ही आज उपयोग में लाया जा रहा है।

साधना पद्धतियों के साथ ही साथ व्यक्ति को भी चाहिए कि वे एक नवीन साधक के रूप में अपने साधनात्मक जीवन का नव निर्माण करें और पूर्णरूप से दैवी सहायता प्राप्त कर अपने जीवन के अभाव एवं कष्ट को दूर कर भौतिक एवं आध्यात्मिक रूप से पूर्णता प्राप्त करें।

पूर्णता प्राप्त करने के लिए वेदकाल में भी एक मान्यता सर्वसम्मत थी और आज भी यह उतनी ही पुष्ट और परिपक्व है। साधनात्मक ग्रन्थों में यह स्पष्ट रूप से लिखा है, कि पत्थर से बनी मूर्तियों पर जल चढ़ाने की अपेक्षा जीवित-जाग्रत गुरु के पास बैठना ज्यादा उचित है।

— और यह मान्यता प्रत्येक युग में अपनी दृढ़ता के साथ स्थायी बनी ही रहेगी, क्योंकि साधनाओं का परिवर्तित एवं प्रभावी रूप समझाने और सिखाने वाले व्यक्ति की आवश्यकता तो पड़ेगी ही . . . और **गुरु किसी मानव शरीर को नहीं कहते, गुरु तो वह होता है, जो साधक को सड़ी-गली मान्यताओं के पंक में से निकाल ले और कमल-पुष्प की तरह विकसित कर दे।**

जब साधक के पास ऐसे तेजस्वी गुरु का आशीर्वाद होगा, तभी वह पुरातन मान्यताओं के दलदल को समाप्त कर सकेगा और सिर्फ अपना ही नहीं पूरे समाज का नवनिर्माण करने में सक्षम हो सकेगा।

गुरु का तात्पर्य है— 'पूर्णता'; गुरु का तात्पर्य है— 'सिद्धि'; गुरु का तात्पर्य है— 'सर्वोच्चता'।

युग के अनुसार परिवर्तन एक स्वाभाविक क्रिया है। समाज में अपने-आप को प्रतिस्थापित करने के लिए आवश्यक है, कि बदलाव की धारा के साथ ही बहते हुए अपने विचार, अपनी क्रिया-पद्धति, अपनी पूरी जीवन प्रक्रिया को बदलें; जो समय की धारा के साथ नहीं बह पाता, उसे समय और समाज पीछे छोड़कर आगे निकल जाता है, फिर उस बिछड़े व्यक्ति का जीवन बीतता है कठिनाइयों से जूझते हुए . . . समय के अनुसार चलने वाला ही तो जीवन के नव निर्माण की प्रक्रिया अपना सकता है........

और ये आप भी हो सकते हैं . . .

गुरुत्व तो सही अर्थों में ज्ञान का वह मानसरोवर है, जिसमें डुबकी लगा कर कौआ भी हंस बनने की प्रक्रिया प्राप्त कर लेता है, गुरुत्व साधना का वह आश्रय-स्थल है, जिसके सान्निध्य में शववत् जीवन जीने वाला व्यक्ति भी 'शिव' बन जाता है और सिद्धियों को हस्तगत कर लेता है।

आवश्यकता है गुरुत्व को समझने की, आवश्यकता है गुरु के ज्ञान को आत्मसात् करने की, आवश्यकता है उनके चरणों के निकट बैठने की . . . और जब साधक ऐसा करने में सफल हो जाता है, फिर गुरु तो हर समय तैयार हैं ही साधक का नव निर्माण करने लिए, उद्यत हैं ही पूर्णता देने के लिए।

यह इस पीढ़ी का सौभाग्य है, कि उसके पास एक ऐसे ही जीवित-जाग्रत गुरु हैं, जिनके श्री चरणों की कृपा - छाया तले बैठ कर साधना के ज्ञान को अपने अन्दर नवीन रूप में स्थापित किया जा सकता है।

मुझे यहां उनका विशेष परिचय देने या उस अद्वितीय व्यक्तित्व का भव्य वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मात्र भारतवर्ष ही नहीं, पूरा विश्व ही उस विराट हिमालयवत् व्यक्तित्व से परिचित है। आज जब भी साधना और सिद्धि प्राप्त करने या इसके विधि-विधान के बारे में सहजता से ज्ञान प्राप्त करने की बात आती है, तो सबकी आंखें उन्हीं पर केन्द्रित हो जाती हैं।

आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व जब सनातन धर्म लड़खड़ा रहा था, अपनी दुरूहता के कारण लोगों के मानस से विस्मृत होता जा रहा था, ऐसे संक्रमण काल में ही जगद्गुरु शंकराचार्य जी ने इसकी जड़ों को मजबूत करने का भार अपने कंधों पर किशोरावस्था में उठा लिया और चार धामों की स्थापना की तथा वेदों के मूलभूत तथ्य को उपनिषदों के रूप में ढाल कर जन सामान्य का ध्यान इसकी तरफ केन्द्रित किया। हम आज भी और आने वाले समय में भी शंकराचार्य के ऋणी रहेंगे।

और आज जब मानव २१वीं सदी में छलांग लगाने के लिए अपने-आप को हर तरह से तैयार कर रहा है, वैज्ञानिक अनेकों प्रकार के अस्त्रों एवं वाहनों का निर्माण कर रहे हैं, तरह-तरह के भौतिक प्रसाधनों से मनुष्य के बाह्य जीवन-संसार को सुखमय बनाने की वस्तुएं उपलब्ध करा रहे हैं . . . बहुत कुछ देन है विज्ञान की आधुनिक मानव को— लेकिन विज्ञान जितना अधिक बाह्य रूप से व्यक्ति को सुखी बनाना चाह रहा है, व्यक्ति आन्तरिक रूप से उतना ही बेचैन और चिन्तित होता जा रहा है, क्योंकि उसके मन का आनन्द खो गया है, वह भूल गया है, कि थोड़ा-सा समय अपनी आन्तरिक प्रसन्नता के लिए भी देना चाहिए, वह एक मशीनी मानव की तरह हर पल-हर क्षण काम करता जा रहा है।

ऐसा नहीं है, कि उसे अपने अन्तर्मन का ध्यान नहीं है, ध्यान तो है, लेकिन समय नहीं है, क्योंकि अन्तर्मन तो तभी आनन्दित हो सकता है, जब उसकी इच्छानुसार वातावरण मिले . . . और यह वातावरण अन्तर्मन को केवल मात्र अपने इष्ट के प्रति ध्यान, प्रेम और लगन से ही प्राप्त हो सकता है।

साम्प्रदायिकता के कारण आज व्यक्ति ने अपने-आप को अलग-अलग धर्मों से बंधा हुआ मान लिया है, लेकिन पिपासु तो प्रत्येक सम्प्रदाय, प्रत्येक धर्म का व्यक्ति है ही, क्योंकि यदि वेदकाल की ओर दृष्टिपात किया जाय, तो स्पष्ट हो जायेगा, कि प्रत्येक सम्प्रदाय या स्वयं को अलग धर्म का मानने वाला व्यक्ति मूलतः एक ही धर्म 'सनातन धर्म' से जुड़ा हुआ है।

तभी तो सभी अपने-अपने इष्ट को पाने का प्रयत्न करते दिखाते हैं, उसके लिए तड़पते हैं। प्रयास तो करते हैं, लेकिन शास्त्रों में वर्णित विधियां इतनी लम्बी और दुरूह लगती हैं, कि वे अपने मन की बात को अपने भीतर ही समेट कर बैठ जाते हैं।

मानव की इस छटपटाहट को समझा एक छोटे-से बालक ने और निकल पड़ा साधना का वह सुगम मार्ग तलाश करने के लिए जिस पर चल कर, क्षुधित और पिपासित व्यक्ति अपने अन्तर्मन की भूख-प्यास को शांत कर सके। इस मार्ग की तलाश में वह किशोर दर-दर हिमालय की उपत्यकाओं में भटका, जहां भी उसे पता चलता कि उस स्थान पर कोई संन्यासी साधनारत है, तो वह किशोर उसके पास अवश्य जाता।

ज्ञान की खोज में विचरता वह किशोर धीरे-धीरे युवक हो गया, लेकिन उसने अपने लक्ष्य को छोड़ा नहीं। अन्य युवकों की तरह अगर वह युवक चाहता, तो अपनी पत्नी और बच्चों के साथ आराम से जीवन व्यतीत कर सकता था, लेकिन उसने सोचा— "मेरा जन्म तो इन भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति के लिए नहीं हुआ है, मेरा जन्म तो इसलिए हुआ है, कि मैं प्रत्येक व्यक्ति को, जो मेरे सम्पर्क में आये, उसके अन्तर्मन को प्रसन्नता दे सकूं और निश्चित रूप से मैं ऐसा करने में सफल हो जाऊंगा, चाहे भले ही मुझे अपना सारा यौवन इन पहाड़ों के मध्य रहते हुए ही क्यों न व्यतीत कर देना पड़े।"

अपने मन में इस धारणा को दृढ़ कर वह युवक ज्ञान के मार्ग की सतत तलाश करता रहा, लेकिन उसने अपने गृहस्थ का कर्त्तव्य भी नहीं छोड़ा और कुछ समयान्तराल पर आकर थोड़ा-सा समय अपने परिवार

के बीच में भी व्यतीत करता, जिससे उसकी पत्नी और बच्चों को सामाजिक प्रताड़ना न सहनी पड़े .... और पुनः अपने प्रयास को सार्थक बनाने हेतु आध्यात्मिक रूप में जंगलों और पहाड़ों की ओर लौट जाता।

इस प्रकार उस युवक ने अपने जीवन के अमूल्य पन्द्रह-बीस वर्ष इस कार्य में लगा दिये और प्राप्त कर ली ज्ञान की वह निर्मल ज्योति, जिसके आलोक में वह पूरे विश्व का पथ-प्रदर्शन करने में समर्थ हो सका।

तपस्या और साधना को न सिर्फ उसने प्राप्त किया, अपितु प्रत्येक साधना को स्वयं सम्पन्न भी किया, जिससे उस साधना में आने वाली बाधाओं को समझ कर उनसे मुक्ति का उपाय प्राप्त कर सके। अपनी लगन और परिश्रम के बल पर वह युवक अध्यात्म की परम स्थली, अध्यात्म की केन्द्रिय धुरी "सिद्धाश्रम" तक पहुंचा। वहां पहुंच कर उस युवक ने सिद्धाश्रम के संस्थापक "परमपूज्य स्वामी सच्चिदानन्द जी" का प्रधान शिष्य बनने का गौरव प्राप्त किया। स्वामी सच्चिदानन्द जी के अपने हजारों वर्षों के जीवन काल में मात्र तीन शिष्य ही बन सके हैं, क्योंकि उनके द्वारा ली जाने वाली परीक्षा की कसौटी पर सहज ही किसी का सफल होना सम्भव नहीं है।

कुछ समय सिद्धाश्रम में रहकर वहां के योगियों व तपस्वियों द्वारा की जाने वाली साधना को उसने समझा और कुछ समय पश्चात् उस युवक ने उनके सहयोग से साधना के सरल विधान को निर्मित किया। सिद्धाश्रम के साधकों को समाज के हितार्थ साधना की सुगम विधि खोजने के लिए शोधरत किया एवं वर्तमान भौतिकतावादी समाज की समस्याओं के समाधान हेतु दैवी बल को सुगमता से प्राप्त करने के विधान को लेकर जब वह पुनः समाज में लौटा .... और अपने कार्य को मूर्तरूप देने का प्रयास करने लगा, तो उसके सामने भौतिकता की धुंध से घिरे हुए समाज ने अनेकों कठिनाइयों के बांध खड़े कर दिये, लेकिन वह युवक घबराया नहीं।

उसने सोच लिया, कि जो दरवाजा पिछले पचास वर्षों से बन्द पड़ा है, उसे खोलना सहज नहीं है, बहुत परिश्रम करना होगा, क्योंकि बंद पड़े इस दरवाजे पर इतनी जंग लग गई है, जिसको छुड़ाना सहज नहीं है। इस बात को समझ कर उस युवक ने अपने मन में निर्णय लिया, कि योजनाबद्ध रूप से इस कार्य को पूर्णता देने का प्रयास करूंगा, तभी सफल हो सकूंगा।

फलस्वरूप उसने अपना यह कार्य ज्योतिष के माध्यम से प्रारम्भ किया, क्योंकि कोई भी व्यक्ति चाहे वह गांव का एक भोला-भाला किसान हो अथवा कोई बहुत बड़ा ऑफिसर अथवा कोई राजनेता– प्रत्येक को अपना भविष्य जानना अच्छा लगता है, लेकिन ज्योतिष का ज्ञान अपनी दुरूहता के कारण कुछ लोगों की संकुचित मानसिकता में जकड़ा पड़ा था और वे लोग भोली जनता को बहुत सरलता से मूर्ख बनाकर अपना उल्लू सीधा कर लिया करते।

अतः उस युवक ने सर्वप्रथम ज्योतिष के सहज रूप को किताबों के माध्यम से जनता के सम्मुख रखा और जिसका परिणाम यह हुआ, कि जनता ने खुले हृदय से उन पुस्तकों का स्वागत किया। धीरे-धीरे वह युवक अपने ग्रन्थों के माध्यम से जन-मानस में अपनी स्थायी छवि बनाने में सफल हो गया और आज स्थिति यह आ गई है, कि यदि किसी भी पुस्तक पर उस युवक का नाम अंकित हो, तो वह पूर्ण प्रामाणिक मानी जाने लगी है।

ज्योतिष को दृढ़ता के साथ इस समाज में स्थापित कर उस युवक ने साधना के प्रति लोगों की आस्था बनाने के लिए प्रयास किया और आधुनिक व्यक्ति की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर, उसने छोटे-छोटे साधना शिविरों का अपने घर पर ही आयोजन करना प्रारम्भ किया।

इस कार्य के लिए भी उसे अत्यधिक परिश्रम करना पड़ा, क्योंकि सहज ही व्यक्ति उस युवक की बात पर भरोसा नहीं कर पाता था, लेकिन फिर भी उसे भरोसा करना पड़ता, क्योंकि ये शब्द उस व्यक्ति के होते, जिसके प्रति उसके मन में अथाह आस्था है, अतः लोगों ने सोचा, कि करके देखते हैं, हर्ज ही क्या है!

और धीरे-धीरे वह युवक "गुरुजी" के नाम से लोगों द्वारा पुकारा जाने लगा और आज उनके श्री चरण-सान्निध्य को प्राप्त कर प्रत्येक व्यक्ति ने उन्हें अपने हृदय में इष्ट रूप में स्थापित कर लिया है।

अपने आप में हिमालयवत् विराटता और सागरवत् गम्भीरता को समेटे हुए वह परमादरणीय, प्रातःस्मरणीय व्यक्तित्व हैं– "परम पूज्य गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी"।

इनके अथक प्रयास से ही आज साधना अपने अत्यन्त सरल रूप में लोगों के सामने प्रस्तुत है और प्रत्येक व्यक्ति अपनी समस्या का समाधान प्राप्त करने में अपने परिश्रम के साथ-साथ दैवी बल को भी प्रयुक्त करने लगा है।

पूज्य गुरुदेव ने जब लोगों द्वारा साधनात्मक ज्योति से अपने जीवन को आलोकित करते हुए देखा,

तो उन्होंने निर्णय लिया, कि इस ज्ञान के आलोक को मैं पूरे भारत, पूरे विश्व में फैलाऊं, जिससे प्रत्येक इसके प्रकाश में अपनी समस्याओं का समाधान प्राप्त कर सकें। फलस्वरूप उन्होंने **सन् १६८१ में ''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान'' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया और आज पन्द्रह वर्षों के इस प्रकाशन काल में यह पत्रिका जन सामान्य की इतनी अधिक प्रिय हो गयी है, कि माह का आरम्भ हुआ नहीं, कि लोग इसके आगमन की प्रतीक्षा में पलक-पांवड़े बिछाये बैठे रहते हैं।**

पन्द्रह वर्षों की यह यात्रा बहुत सहज नहीं है, क्योंकि गुरुदेव को समाज की अनेक आलोचनाओं को झेलना पड़ा, लोगों ने न जाने कितने अभद्रतापूर्ण शब्दों का भी प्रयोग किया, तरह-तरह के कुचक्रों को भी रचा और आज भी ये आलोचक अपने प्रयास में लगे हुए हैं, क्योंकि उनके रूढ़िग्रस्त विचारों को साधना के इस सुगम विधान द्वारा आघात पहुंचा है, जितनी आसानी से वे लोगों को ठग लिया करते थे, आज वह सम्भव नहीं रहा, ऐसी स्थिति में ऐसे लोग कर भी क्या सकते हैं, सिवाय आलोचना करने के।

फिर भी गुरुदेव ने उनकी आलोचना, उनके व्यंग्य बाणों को अपने ऊपर झेला और धीर-गंभीर बने ज्ञान की इस पवित्र गंगा को सहज प्रवाहित रहने के लिए मार्ग प्रशस्त करते रहे . . . और आज भी कर रहे हैं। गुरुदेव से जुड़े शिष्यों का यह कर्त्तव्य है, कि वे अपने गुरुदेव के इस प्रयास में जैसे भी हो सके, जितना भी हो सके, सहयोग दें और इसे पीढ़ी दर पीढ़ी स्थाई बनाये रखें। ऐसी स्थिति पुनः नहीं आनी चाहिए, जैसी कि शंकराचार्य के सिद्धाश्रम गमन के बाद आयी, वैसे भी शंकराचार्य को ऐसे शिष्य नहीं मिले, जो उनके द्वारा प्रदीप्त ज्ञान की मशाल को दृढ़ता से थाम सकें।
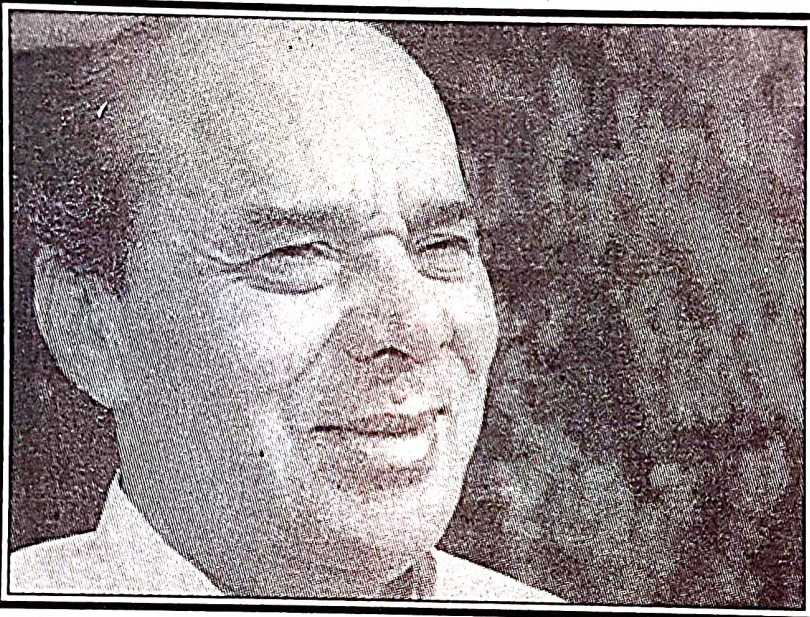
— क्या यही स्थिति दोबारा उत्पन्न हो जायेगी?

. . . रह-रह कर यह प्रश्न एक चिन्ता बन कर गुरुदेव के मस्तिष्क में कौंध जाता . . . और इस प्रश्न के समाधान के लिए ही उन्होंने जगह-जगह साधना शिविरों का आयोजन करना प्रारम्भ कर दिया, जिससे जो व्यक्ति उन तक नहीं पहुंच सकता है, वह उनके पास पहुंचे।

— और पहली बार इस समाज ने समुद्र की गोमुख यात्रा देखी, क्योंकि आज तक यही होता रहा है, कि गंगा समुद्र के पास जा कर उससे एकीकृत होती है; प्यासा कुंए के पास जाता है, लेकिन इस बार ठीक विपरीत प्रक्रिया ही हो रही है, क्योंकि समुद्र ने गोमुख तक की यात्रा करनी प्रारम्भ कर दी है, कुंआ प्यासे के पास पहुंच रहा है।

विभिन्न स्थानों पर आयोजित साधना शिविरों में पूज्यश्री ने साधना कराने के साथ ही साथ अपनी तपस्या ऊर्जा को दीक्षा और 'शक्तिपात' द्वारा लोगों को देना प्रारम्भ किया। शिष्यों और साधकों की प्रार्थना पर पिछले दो वर्षों से प्रत्येक माह दीक्षा कार्यक्रम का आयोजन गुरुधाम में भी हो रहा है।

गुरुदेव तो अपनी तरफ से पूरा प्रयास कर ही रहे हैं, प्रत्येक दीपक को सूर्य बनाने का; अब तो यह दीपक के सामर्थ्य को परखने का अवसर है, कि वह अपने गुरु के प्रयास को किस हद तक सार्थक बनाने में प्रस्तुत हो सकता है।

साधना शिविरों में गुरुदेव स्वयं अपने संरक्षण में साधना के अति गुह्य रहस्यों को समझाते हुए उन साधनाओं को सम्पन्न कराते हैं, जिसे आज तक कोई गृहस्थ व्यक्ति करने का साहस नहीं करता था।

उन्होंने दस महाविद्याओं के पूजन क्रम को अत्यन्त सहज और गृहस्थोपयोगी रूप में साधकों के समक्ष रखा; इन महाविद्याओं की साधना करना तो दूर, गृहस्थ व्यक्ति पूजन करने से भी घबराता है, क्योंकि यंत्र निर्माण, सर्वतोभद्र मण्डल निर्माण, यंत्र का आवरण पूजन आदि ऐसे गूढ़ विधान हैं, जिन्हें सम्पूर्णता के साथ कोई विद्वान पंडित ही सम्पन्न करा सकता है। पूज्य गुरुदेव ने इन सभी विधानों को अत्यन्त संक्षिप्त व सरल रूप में

गृहस्थ साधकों के सम्मुख रखा है।

इस प्रकार के पूजन का पूर्ण प्रामाणिक होना इसलिए सम्भव है, क्योंकि ये पूजन-विधान सिद्धाश्रम के श्रेष्ठ ऋषियों द्वारा निर्मित और परीक्षित हैं, साथ ही गुरुदेव के द्वारा बताये गए मंत्र में सम्वन्धित दैवी शक्ति की पूरी तेजस्विता समाहित रहती है।

कुण्डलिनी जागरण की क्रिया जो कभी योगियों की धरोहर थी, उसे भी अत्यन्त सुगम कर दिया है पूज्य गुरुदेव ने, तभी तो आये दिन पत्रिका कार्यालय को कुण्डलिनी जागरण के अनुभवों से सम्वन्धित अनगिनत पत्र प्राप्त होते रहते हैं।

पूज्यश्री के कार्यों के किन-किन पक्षों को आपके सामने स्पष्ट करूं, निर्णय लेना कठिन है, क्योंकि उनके जीवन का कोई भी पक्ष, कोई भी क्षण ऐसा नहीं है, जो कि अपने-आप में एक विशेष कारण न छुपाये हो। यदि पूज्यपाद के सामाजिक जीवन का वर्णन करूं, तो साधनात्मक क्षेत्र का वर्णन नहीं कर सकती और यदि साधनात्मक पक्ष को लेकर चलूं, तो सामाजिक पक्ष को सम्यक्तः स्पर्श नहीं कर पाती हूं; क्योंकि पूज्य गुरुदेव के जीवन का प्रत्येक पक्ष इतना सबल और विशद है, कि प्रत्येक पक्ष पर एक ग्रन्थ लिखा जा सकता है।

फिर भी मैंने प्रयास किया है, और अपने प्रयास के अन्तर्गत मैंने एक विशेष क्रिया का अनुभव भी किया है —

पूज्य गुरुदेव का साधनात्मक क्षेत्र अत्यधिक विशाल है। वे अपने बाह्य रूप से तो साधकों का मार्गदर्शन करते ही हैं, आन्तरिक रूप से भी वे प्रतिपल साधनात्मक चिन्तन प्रदान करते रहते हैं, कहने का तात्पर्य यह है, कि उनके जीवन का प्रत्येक पल किशोरावस्था से लगाकर वर्तमान समय तक मानव कल्याण के लिए ही व्यतीत हो रहा है।

आज तक जितने भी महा-पुरुष, संत एवं गुरु हुए हैं, उन सभी लोगों ने समाज सुधार की प्रक्रिया को ही अपनाया है और अपने कार्यों से मानव को सुखी बनाने का ही प्रयास करते रहते हैं।

इन सभी महापुरुषों की कार्य पद्धति लगभग एक जैसी ही है। वे कुलीन और सम्भ्रान्त घरों को ही प्रारम्भिक मार्गदर्शन के रूप में चुनते हैं और उनके बाद जव वे अपना ध्यान मध्यम वर्गीय लोगों की तरफ ले जाते हैं, तव तक उनके पृथ्वी ग्रह से जाने का समय आ जाता है और अपना कार्य बीच में ही छोड़कर उन्हें जाना पड़ता है। अतः जितने सुधार की आवश्यकता होती है, वे नहीं कर पाते हैं, क्योंकि इस मानव समाज का एक वहुत बड़ा वर्ग इससे अछूता रह जाता है।

किन्तु पूज्य गुरुदेव की कार्य प्रक्रिया मैंने इसके सर्वथा विपरीत देखी है। गुरुदेव ने ज्ञान के संचरण हेतु प्रारम्भिक सूत्र के रूप में मध्यम वर्ग को ही चुना, क्योंकि उनका विचार है, कि यदि मध्यम वर्ग, जो कि इस मानव समाज की रीढ़ है, आधार है, यदि उसे सुधार दिया जाय, यदि उनके अन्तर्मन में सद्ज्ञान की ज्योति आलोकित कर दी जाय, तो संभ्रान्त वर्ग को सुधारने में ज्यादा समय नहीं लगेगा।

गुरुदेव का यह चिन्तन साकार रूप में प्रत्येक साधना शिविरों में देखने को मिलता है, क्योंकि सामाजिक रूप से कोई व्यक्ति वहुत बड़ा डॉक्टर हो या आर्मी का कर्नल या किसी छोटे-से ऑफिस में क्लर्क या फिर दरवान— सभी एक साथ बैठकर, गुरु पीताम्वर ओढ़कर, मिल-जुल कर साधना करते हैं। इस क्रिया को देखकर यह वात पूर्ण सत्य होती प्रतीत होती है, कि **'जाति पाति पूछे नहीं कोई, गुरु को भजे सो गुरु का होई।'**

गुरुदेव तो सतत प्रयासरत हैं ही अपने कार्य को मूर्तरूप देने के लिए, क्योंकि उनका निर्णय है, कि वे अपने ज्ञान को कागज के पन्नों पर उतारने की अपेक्षा मानव के हृदय में उतारना चाहते हैं, वे जीवित-जाग्रत ग्रन्थों की रचना करना चाहते हैं। तभी तो वे अपनी तपस्या को शक्तिपात दीक्षा के माध्यम से शिष्यों के अन्तर्मन में उतारते रहते हैं।

सहज नहीं होती है शक्तिपात की क्रिया, इसके लिए वहुत अधिक वेदना सहन करनी पड़ती है, इस वेदना को वही सहन कर सकता है, जो अत्यधिक धैर्यवान हो, क्योंकि अत्यन्त कठिनाई से प्राप्त साधनात्मक शक्ति को किसी के हृदय में उतारना ठीक उतना ही कठिन होता है, जितना कि अपने रक्त की एक-एक बूंद देकर किसी के जीवन की रक्षा करना।

गुरुदेव तो अपनी तरफ से हर पल पूर्णत्व देने के लिए सन्नद्ध हैं; आवश्यकता है कि हम सभी पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ आगे बढ़ें और उनके द्वारा प्रवाहित साधनात्मक ज्ञान की गंगा में अवगाहन कर पूर्णता प्राप्त कर सकें। यह तो हमारा दुर्भाग्य होगा, यदि हम अपने घर आयी गंगा की पवित्र धारा को आत्मसात् न कर सकें तो।

तभी तो नूतन वर्ष सन् १९९६ के आगमन से पूर्व आप लोगों को सावधान किया जा रहा है, जिससे आप सभी अपने अन्दर इतनी दृढ़ता पैदा कर लें, कि पूज्य गुरुदेव के द्वारा प्रदीप्त साधनात्मक ज्ञान की मशाल के आलोक को पूरी पृथ्वी पर विस्तारित कर प्रत्येक व्यक्ति के व्यथित हृदय को अवलम्वन प्रदान कर सुख व शान्ति दे सकें।

और ऐसा तभी सम्भव होगा जव आप सभी . . . हम सभी आज ही अपने जीवन के नव निर्माण का संकल्प लें।

● **भैरवी हीनू, मनाली**

राजनीति का चक्र जितनी तेजी से घूम रहा है, उतना पिछले पांच वर्षों में भी नहीं घूमा। प्रत्येक दिन नये-नये परिवर्तन होते रहते हैं और ऐसे परिवर्तन भी हो रहे हैं, जो अप्रत्याशित हैं, जिनकी जन साधारण कल्पना भी नहीं कर सकता, कि यह आने वाले समय की पृष्ठभूमि है, प्रक्रिया है या किसी आने वाले विस्फोट का एक पूर्वाभास है।

आने वाले छः महीनों में राजनीति में बहुत बड़ा बवंडर, तूफान, भूचाल सा आने वाला है। पिछले चुनाव हुए थे, तो सभी लोगों को यह उम्मीद थी, कि कांग्रेस सभी राज्यों में पूरा बहुमत लेगी, किन्तु जो नतीजे निकले, वे बहुत चौंकाने वाले निकले; क्योंकि आज का वोट देने वाला बहुत होशियार हो गया है और अपने मन की बात को अंतिम क्षणों तक स्पष्ट नहीं करता। वह उसी को वोट देना ज्यादा उचित समझता है, जिसका उसके मानस पर प्रभाव पड़ता है।

ग्रह स्थिति के अनुसार चार ग्रह अपने-आप में परिवर्तित हो रहे हैं और चारों ग्रह राजनीति को प्रवाभित करेंगे। ऐसी स्थिति में कई प्रश्न उभर कर सामने आ रहे हैं—

★ **क्या उत्तर प्रदेश में मायावती की सरकार बनी रहेगी?**
★ **क्या चुनाव समय से पहले होंगे?**
★ **क्या चुनाव बहुत निकट नवम्बर से फरवरी' ९६ के मध्य ही होने वाले हैं?**
★ **क्या इस बार कांग्रेस को बहुमत मिल सकेगा?**
★ **क्या भारतीय जनता पार्टी की स्थिति दृढ़ बनेगी?**
★ **क्या शिवसेना और भारतीय जनता पार्टी का गठबन्धन महाराष्ट्र में कायम रहेगा?**

— ऐसे सैकड़ों प्रश्न हैं, जो तूफान की तरह हैं, जो राजनीति के क्षितिज पर मंडरा रहे हैं; प्रत्येक व्यक्ति इन प्रश्नों में

उलझ रहा है और इन प्रश्नों को समझना चाहता है। वह यह समझना चाहता है, कि आने वाले वर्ष कैसे हैं? आने वाला समय कैसा है? और यह लेख ज्योतिष के आधार पर (शुद्ध ज्योतिष के आधार पर) विश्लेषण कर रहा है।

शनि इस समय कुम्भ राशि में चल रहा है और कुछ ही समय वाद वह राशि परिवर्तन करेगा। जव-जव भी शनि राशि परिवर्तन करता है, तो तूफान आता है राजनीति के क्षितिज पर और कुछ ऐसी घटनाएं घटती हैं, जो अप्रत्याशित होती हैं।

पिछले दिनों कुछ मंत्रियों को शपथ दिलाई गई और जो सोच रहे थे, कि हमें मंत्रीपद मिलेगा या मंत्री पद में परिणति होगी, ऐसा कुछ भी नहीं हुआ, वे एक तरह से मायूस ही हुए। कुछ ऐसे चेहरे लिए गए, जो विल्कुल नए ही थे, जिनके नाम भी हमने पहली बार सुने। जवकि मालूम है, कि अगले तीन-चार महीनों में ही चुनाव होने वाले हैं, तो इस समय यह राजनीतिक परिवर्तन केवल इन लोगों की मनोतुष्टि या उनको शांत करने की प्रक्रिया का ही एक भाग है। सभी अपने जोड़-तोड़ में लगे हुए हैं, कि किस प्रकार से हम ज्यादा-से-ज्यादा चुनाव में विजय प्राप्त कर सकें।

ऐसा लग रहा है, कि राहु, मंगल, शनि और गुरु के जो परिवर्तन हैं, ये नाक्षत्रिक परिवर्तन अपने-आप में राजनीतिक दिशा को बहुत कुछ अतिरिक्तता प्रदान करेंगे। बहुत कुछ परिवर्तन लायेंगे और वे परिवर्तन ऐसे होंगे, जिनकी आम आदमी कल्पना नहीं कर सकता।

ऐसा लग रहा है, कि राहु, मंगल, शनि और गुरु के जो परिवर्तन हैं, ये नाक्षत्रिक परिवर्तन अपने-आप में राजनीतिक दिशा को बहुत कुछ अतिरिक्तता प्रदान करेंगे। बहुत कुछ परिवर्तन लायेंगे और वे परिवर्तन ऐसे होंगे, जिनकी आम आदमी कल्पना नहीं कर सकता।

आज भले ही प्रत्येक पार्टी यह दावा कर रही हो, कि हम दिल्ली की राजगद्दी पर वैठेंगे, परन्तु ज्योतिष यह कह रहा है, कि कांग्रेस अपने-आप में पूर्ण वहुमत नहीं ले पायेगी और जहां-जहां पर विजय की उम्मीद ज्यादा करेगी, वहीं-वहीं पर उसको ठोकरें खाने को मिलेंगी। सवसे वड़ी वात जो ज्योतिष के आधार पर दिखाई दे रही है, वह यह है, कि कांग्रेसी-कांग्रेसी की ही पीठ में छुरा घोंपेगा। कांग्रेस यदि हारेगी, तो किसी दूसरी पार्टी से नहीं हारेगी; कांग्रेस हारेगी, तो कांग्रेस से ही हारेगी।

. . . और यह अपनों से हारना बहुत वेदनाग्रस्त होता है, वेदनामय होता है। आने वाले समय में तो ऐसा ही होने वाला है। कुछ कांग्रेसी बागी होंगे, कुछ दल-बदल करेंगे और कुछ सुदृढ़ रूप से खड़े होकर भाग्य को आजमायेंगे। मगर इन तीनों घटनाओं से हानि कांग्रेस को ही प्राप्त होगी और इन तीनों घटनाओं से लाभ दूसरी पार्टियों को प्राप्त हो जाएगा।

और यदि भाजपा पर विचार करते हैं, तो निश्चित रूप से भारतीय जनता पार्टी अपने-आप में मजबूती से आगे बढ़ रही है, पर अन्दर-अन्दर ही उसमें आन्तरिक कलह उत्पन्न हुआ है, जो प्रतिस्पर्धा उत्पन्न हुई है, वह पार्टी को अन्दर ही अन्दर खोखला करने की कोशिश कर रही है और यह खोखलापन उनके वयानों से, उनके कार्य-कलापों से विल्कुल स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

यद्यपि भारतीय जनता पार्टी पूरे भारतवर्ष में अपने उम्मीदवार खड़ा करेगी, पर यह तो निश्चित है, कि **भारतीय जनता पार्टी अपने बलवूते पर दिल्ली के तख्त पर नहीं बैठ सकती, यह संभव नहीं है और जिस साधु समाज ने पिछली बार इनको पूरा समर्थन देकर आगे बढ़ाया था, इस बार उस साधु समाज में वह उत्साह भी नहीं है, वह जोश भी नहीं है; इसलिए हो सकता है, कि इस बार पहले से भी कम सीटें मिलें, तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए।**

परन्तु भारतीय जनता पार्टी उस स्थिति में जरूर आ जाएगी, कि वह किसी और को मदद करने की प्रक्रिया में खड़ी हो सके। ऐसा करके ही वह सही अर्थों में अपनी पार्टी को मजबूत कर पायेगी। उसका उद्देश्य भले ही राजगद्दी पर बैठना नहीं हो, पर अप्रत्यक्ष नेतृत्व-संचालन में सहयोगी रहकर राज्य चलाने में वह सफल होगी। वह जानती है, कि मैं अकेले अपने बूते पर अपनी पार्टी की सरकार इस देश में नहीं बना सकती। केन्द्र में सरकार की संभावनाएं भारतीय जनता पार्टी के लिए कठिन हैं।

दूसरी पार्टियां, छोटी-छोटी पार्टियां हैं और निश्चित रूप में उनमें अभी इतनी परिपक्वता, इतना पुष्टता नहीं है, कि वे अकेले अपने वलवूते पर राजगद्दी पर बैठ सकें। हां! यह बात जरूर है, कि वे राजगद्दी को प्रभावित कर सकतीं है और करेंगीं भी।

मगर इस सारी प्रक्रिया में तिवारी कांग्रेस, जो कुछ भी प्राप्त करेगा, वह करेगा ही; उसके पास खोने के लिए तो कुछ है

ही नहीं, क्योंकि वह तो बिल्कुल कपड़े झटक करके मंच पर खड़ा हुआ है। इसलिए जो कुछ भी प्राप्त हो पायेगा, वह उनकी मेहनत, उनकी लगन, उनके साथ जुड़ने वाले कांग्रेसियों की वजह से ही प्राप्त हो पायेगा और वह अपने-आप में काफी महत्त्वपूर्ण होगा।

ऐसी स्थिति आ सकती है, कि वह नेपथ्य में रहकर समर्थन दे, भले ही श्री नरसिम्हा राव जी की कांग्रेस पार्टी उसे स्वीकार करे या नहीं करे, परन्तु उस स्थिति में तो वह जरूर आ सकती है, कि वह राजनीति में परिवर्तन और हस्तक्षेप करने की क्षमता या अपना वर्चस्व स्थापित करने की स्थिति दिखा सकती है।

ऐसी स्थिति में सारा वजन, सारा भार राष्ट्रपति महोदय पर आयेगा और वे अपने विवेक से ही यह निर्णय कर पायेंगे, कि किस पार्टी को सरकार बनाने के लिए आमंत्रित करें। मगर धर्म संकट में ही रहेंगे, क्योंकि हो सकता है, कि भाजपा, तिवारी कांग्रेस के साथ समर्थन नहीं करे या हो सकता है, कि तिवारी कांग्रेस, नरसिम्हा राव जी के साथ समर्थन नहीं करे, मगर ऐसी स्थिति में भी दो-तीन पार्टियां मिलकर ही इस राजगद्दी पर आसीन होंगीं। इसलिए यह बात तो निश्चित है, कि त्रिशंकु सरकार बनेगी, किसी एक पार्टी की सरकार बनने की सम्भावना नहीं के बराबर है।

अब प्रश्न यह उठता है, कि क्या उत्तर प्रदेश में मायावती सरकार रहेगी? मायावती सरकार को बनाये रखना भारतीय जनता पार्टी की मजबूरी है . . . और मजबूरी इसलिए है, कि मायावती सरकार के सहारे ही दलितों और उन लोगों का, जो निम्न स्तर के लोग हैं, उनका वोट इसके साथ ही मिलकर प्राप्त किया जा सकता है। मगर यह तो निश्चित है, कि चुनावों से पहले इन दोनों पार्टियों में मतभेद होगा और मायावती सरकार चुनावों से पहले गिर जायेगी, भाजपा अपना समर्थन वापस ले लेगी। भाजपा अपना समर्थन वापस लेकर लाभ में ही रहेगी, क्योंकि अकेले कांसीराम जी भी बहुत अधिक एम.पी. जिता सकें, इसकी संभावना कम है, मगर फिर भी वह अपने-आप में एक महत्वपूर्ण स्थानीय पार्टी बनकर उभरेगी ही और आने वाले चुनावों में वह दिल्ली की राजगद्दी पर भले ही न बैठ पाये, मगर प्रादेशिक राजनीति में पूरी तरह से हस्तक्षेप कर, उस पर अधिकार प्राप्त कर सकती है।

जो बम्बई में शिव सेना और भारतीय जनता पार्टी का गठबन्धन है, उसमें भी दरारें पड़नी शुरू हो गई हैं और ऐसा लग रहा है, कि चुनावों से पहले इन दोनों में भी बिखराव आयेगा। ये दोनों मिलकर चुनाव लड़ें, तो ये मजबूरी है; मगर दोनों के मिलकर लड़ने से शिव सेना को ही लाभ है, भाजपा को इतना लाभ नहीं मिल पायेगा, जैसा कि पिछली बार भी भाजपा और शिव सेना ने मिलकर चुनाव लड़ा, तो मुख्य मंत्री शिव सेना का ही बना, क्योंकि महाराष्ट्र में इसका वर्चस्व है और शिव सेना अपने बलबूते पर इतनी सीटें प्राप्त कर सकती है, कि वह महाराष्ट्र में अपने राज्य को स्थापित कर सके।

दक्षिण में रामाराव के घर में जो विद्रोह की स्थिति बनी, वह लोगों को आश्चर्यचकित करने वाली थी, क्योंकि केवल नौ महीने पहले जिस शान के साथ रामाराव गद्दी पर बैठे थे, वह अपने आप में आश्चर्यजनक रूप से अप्रत्याशित घटना थी। इतने अधिक वोटों से सत्ता को प्राप्त करना कोई सामान्य बात नहीं थी; फिर विद्रोह क्यों हुआ, इस बात का संकेत मैं उस समय भी दे चुका था, कि जिस शानदार विजय के साथ रामाराव गद्दी पर बैठे हैं, उनके घर में ही विद्रोह होगा और उस विद्रोह का फल भी उनको भोगना पड़ेगा और वही हुआ भी।

चारों तरफ एक अजीब सी हलचल, एक अजीब सा तूफान, एक अजीब सा द्वन्द्व और एक अजीब सी अनिश्चितता पूरे भारतवर्ष में है। कोई भी पार्टी पूर्णरूप से दम ठोककर यह कहने में समर्थ नहीं है, कि वह सफल हो जाएगी और जब तक कोई पार्टी मजबूत नहीं होती, तब तक देश तीव्र गति से आगे नहीं बढ़ पाता है। मुझे विश्वास है, कि एक बार फिर रामाराव जी की वापसी उसी शान के साथ होगी।

ज्योतिष ग्रह यह भी स्पष्ट करते हैं, कि चुनाव अब बहुत दूर नहीं है; बहुत ज्यादा संभावना यह है, कि नवम्बर के अंत में या फरवरी ९६ के मध्य में ही चुनाव हो जायें। मगर जब भी चुनाव की प्रक्रिया होगी, तब अचानक ही इस प्रक्रिया की घोषणा की जाएगी, जिससे कि दूसरी पार्टियों को संभलने का मौका नहीं मिले। इसलिए इस बार त्रिशंकु सरकार बनने की संभावनाएं ज्यादा हैं, बजाय किसी एक पार्टी की सरकार बनने के।

अन्य राज्यों जैसे गुजरात, राजस्थान, बिहार में स्थिति लगभग वैसी ही रहेगी, मगर ज्योतिष आधार कह रहा है, कि **राजस्थान के मुख्य मंत्री भैरोसिंह शेखावत जी के केन्द्र में आने की ज्यादा संभावना है और केन्द्र में रह कर वे ज्यादा कार्य कर पायेंगे।** हो सकता है, कि वे इस बार मुख्य मंत्री की तरह चुनाव नहीं लड़कर एक एम.पी. का चुनाव लड़ कर केन्द्रिय राजनीति में आयें और वे ज्यादा कार्य करके दिखा सकें।

कुल मिलाकर इस समय प्रत्येक भारतीय जन मानस में राजनीति को लेकर विस्फोटक स्थिति है, अनिश्चितता है।

— और यह लेख अनिश्चितता के बादलों को दूर करने में कुछ समर्थ हो सके, इस प्रकार की पंक्तियां हैं।

आने वाले वर्ष में फरवरी के बाद का समय भारत के लिए अनुकूल है और विदेशों में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ेगी, सफलता मिलेगी, एक बार फिर देश उन्नति की ओर अग्रसर हो सकेगा और अपनी प्रतिष्ठा को बनाये रख सकेगा, ऐसा मुझे विश्वास है।

— दिव्य चक्षु

यह योजना मात्र ३० दिनों के लिए है. . .
गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान का
एक उपहार
मनोवांछित कल्प वृक्ष यंत्र 2" X 2"
दिव्यतम वस्तुएं अपनी उपस्थिति की पहिचान करा ही देती हैं. . . उन्हें प्रचारित व प्रसारित करने की आवश्यकता नहीं पड़ती, इत्र स्वयं अपनी उपस्थिति का आभास दिला देता है. . . वैसे ही यह विशेष यंत्र जहां रहता है, वहां धन का मार्ग स्वतः ही खुल जाता है. . . धन का आगमन अपना मार्ग स्वतः बना लेता है. . . फिर यह सौभाग्य आपके द्वार आया है . . . निर्णय आपको करना है. . .
वर्ष १९९५ की सदस्यता प्राप्त कर . . . यदि आप सदस्य हों, तो अपने मित्र या रिश्तेदार को सदस्य बनावें और प्राप्त करें मुफ्त यह यंत्र उपहार स्वरूप. . . आप सिर्फ पोस्टकार्ड भर कर भेज दें. . . बाकी का कार्य हमारा . . .
वार्षिक सदस्यता शुल्क-180/-
डाक खर्च अतिरिक्त-24/-
सम्पर्क
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोनः 0291-32209,फेक्सः 0291-32010
सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034, फोनः 011-7182248, फेक्सः 011-7196700

सांसारिक सुख अनायास ही नहीं प्राप्त हो जाते, इन्हें प्राप्त करने के लिए साधनात्मक बल एवं सिद्धि का होना आवश्यक है, क्योंकि उन सुखों को प्राप्त करना तो महत्त्वपूर्ण है ही, लेकिन उन सुखों का सदुपयोग करना, उससे भी अधिक आवश्यक और महत्त्वपूर्ण है। साधक सुख प्राप्त कर उनका उपयोग कर सके, इसीलिए तो देवी अपने त्वरिता स्वरूप में परम कृपालु बन उसके लिए तत्क्षण उन्मुख रहती हैं, आवश्यकता है उस शक्ति तत्त्व को अपने अन्दर जाग्रत करने की।

त्वरिता शक्ति साधना

सांसारिक सुख, प्रेम और ऐश्वर्य प्रदायक शक्ति

आज मानव एक ऐसी भौतिक विज्ञानधारा में बह रहा है, जहां उसे कुछ प्राप्त होने वाला नहीं है। वह अनन्त आकाश में जितना चाहे उतना विचरण कर सकता है, किन्तु उसकी अशक्तता, असमर्थता उसे निर्मुक्त विचरण करने नहीं देती, क्योंकि वह पंख फैलाकर उड़ने
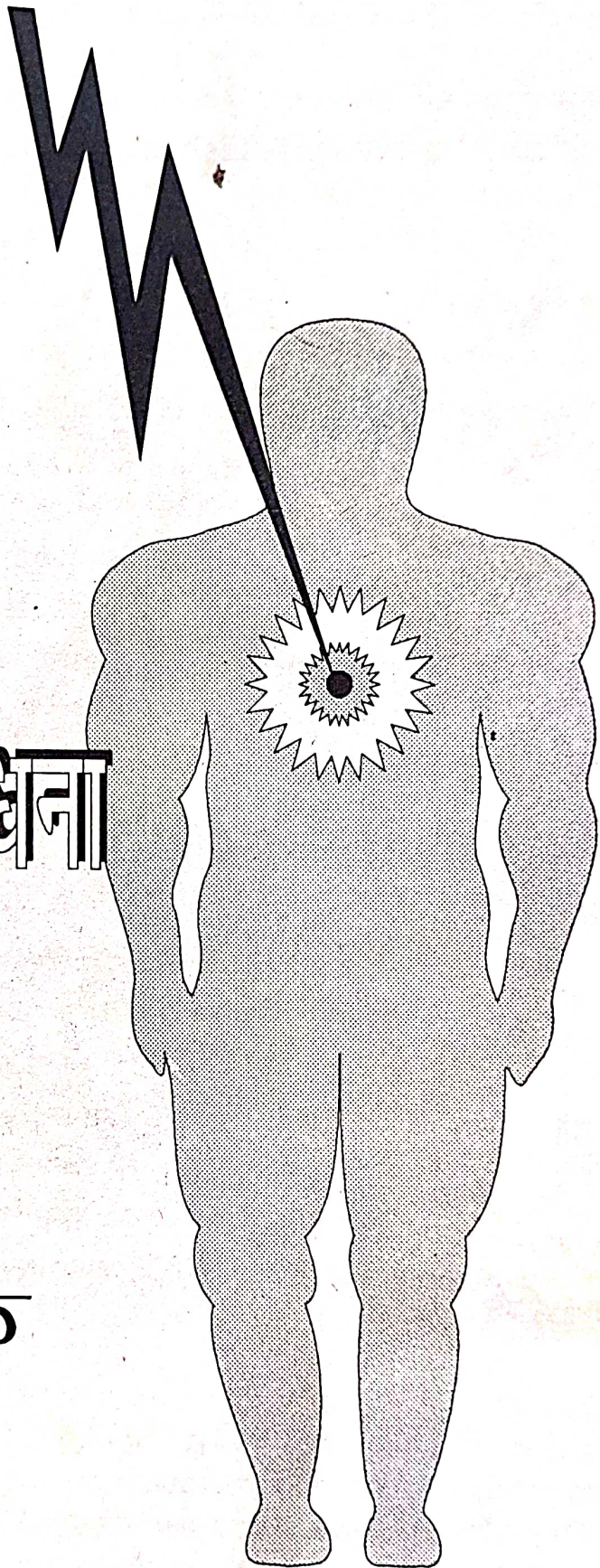
की कला भूल चुका है, इसीलिए वह असंतप्त है, अतृप्त है। इच्छाओं का दमन होने के कारण वह पिपासु बना रहता है, उसे कहीं तृप्ति नहीं मिलती . . . और जब तक उसके मन को शांति नहीं मिलेगी, तृप्ति नहीं मिलेगी, तब तक वह यूं ही भटकता रहेगा; आवश्यकता है इस भटकाव को रोकने की, समाप्त करने की।

यदि विवेकशील मनुष्य इस बात पर विचार करे, कि अतृप्तता का मूल कारण क्या है, तो वह इस निष्कर्ष पर पहुंचेगा, कि जब तक जीवन में व्यक्ति भोग और मोक्ष दोनों प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक वह अतृप्त ही रहता है। **जरा-मरण शरीर के, शोक-मोह मन के और क्षुत्पिपासा प्राण के धर्म हैं . . . और जब तक व्यक्ति इनसे विरक्त होने का प्रयास नहीं करेगा, तब तक उसकी पिपासा भी शांत नहीं हो सकती . . .** विरक्त होने का तात्पर्य यह नहीं, कि इन सब चीजों का मोह त्याग कर संन्यासी बन जाओ और हिमालय की गुफाओं में बैठ कर आंख बंद कर लो, वरन् उन सब भोगों को भोगते हुए अपने मन, प्राणों को विरक्त कर देना ही 'विरक्ति' है . . . और वह तब हो सकता है, जब मायावी अर्थात् प्रकृति, जो अपनी शक्ति से मनुष्य को भ्रमित किए हुए है, उस पर मानव का पूर्णरूप से अधिकार हो जाय।

मनुष्य में अनन्त सम्भावनाएं हैं, यह अलग बात है, कि वह अपनी सम्भावनाओं को न पहिचान सके। मानव अपने मूल स्वरूप को नहीं पहिचानता, यही कारण है कि वह संत्रस्त है, यदि वह अपने अन्दर निहित ज्ञान शक्ति को पहिचान ले, तो धीरे-धीरे उसके हृदय का त्रास समाप्त हो सकता है। यह उसकी न्यूनता है, कि वह स्वयं शक्ति सम्पन्न होने के बाद भी अपने-आप को दुर्बल, अशक्त समझे बैठा है, उसे अपने अन्तर्निहित तत्त्वों का भली प्रकार से ज्ञान नहीं है; वस्तुतः वह माया शक्ति के वशीभूत हो अध्यात्म जगत में विचरण नहीं कर पाने के कारण असंतोषी है . . . उसे संतोष तो तब प्राप्त होगा, जब वह समस्त सांसारिक सुखों को भोग कर अध्यात्म के पथ पर गतिशील हो सकेगा।

त्वरिता शक्ति स्वरूप में देवी का ध्यान प्रिया रूप में किया जाता है। ये षोडश वर्षीया हैं, इन्होंने अपने हाथ में पाश, अंकुश, वरद् और अभय मुद्रा धारण कर रखे हैं। ये पत्तों के आसन पर निवास करती हैं। आभूषण के रूप में नाग (सर्पों) को धारण कर रखा है। ये समस्त भौतिक सुख, प्रेम और ऐश्वर्य प्रदान करने के साथ-साथ जीवन के वास्तविक आनन्द को प्रदान करने वाली मोहिनी शक्ति हैं। ये तत्क्षण फल प्रदायिनी हैं।

शक्ति तो एक भाव है, सामर्थ्यता को प्रकट करने का। मीमांसकों के अनुसार साधना ही एकमात्र ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा शरीर में स्थित क्रियाशक्ति को सम्पूर्ण रूप से जाग्रत किया जा सकता है और जीवन में सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य को भोगते हुए जीवन का आनन्द प्राप्त किया जा सकता है। जहां आत्म-शक्ति है, वहां शुद्धि, सिद्धि, बुद्धि, ऐश्वर्य, अग्नि, अजेयता है। 'शक्ति' अग्नि तत्त्व की स्वामिनी है, इसके बिना मनुष्य शव रूप है, इसके बिना कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं किया जा सकता है, जिसने प्रकृति के विस्तृत भण्डार में से एक भी अंश अपने अधीन कर लिया, वही शक्ति युक्त है।

अग्नि में दो शक्तियां निहित होती हैं— प्रकाशिका और दाहिका। प्रकाशिका का कार्य होता है— अन्धकार को दूर कर प्रकाश का पुनर्स्थापन करना; और दाहिका का कार्य होता है— जला देना। ये दोनों ही अपने गुण-धर्म के अनुसार कार्य करती रहती हैं, ठीक इसी प्रकार साधक के भीतर निहित शक्ति को साधना के बल पर जाग्रत करने से वे अपने गुण-धर्म के अनुसार कार्यरत रहती हैं, और साधक को अन्तर् व वाह्य दोनों रूपों से शक्ति सम्पन्न बना देती हैं।

साधक के अन्तर में व्याप्त शक्ति को 'त्वरिता शक्ति साधना' के माध्यम से प्रवाह प्रदान कर आश्चर्यजनक उपलब्धियां प्राप्त की जा सकती हैं, क्योंकि यही शक्ति कभी मायावीश्वरी, कभी महाशक्ति, कभी दुर्गा, कभी नारायणी, तो कभी शिव-शक्ति के रूप में अलग-अलग रूप धारण कर साधक को पूर्णता प्रदान करती है।

'त्वरिता शक्ति' दुर्गा का ही स्वरूप मानी गयी है, जिससे

सभी शक्तियों का प्रादुर्भाव हुआ है। जब मनुष्य के शरीर में इस शक्ति तत्त्व का प्रादुर्भाव हो जाता है, तब उसके जीवन में दुःख, दारिद्र्य, दुर्भाग्य का कोई स्थान नहीं रह जाता, क्योंकि जहां त्वरिता शक्ति है, वहां सम्पन्नता है, सौभाग्य है।

मानव मन स्वभावतः चंचल होने के कारण उसमें अनेक अवगुणों एवं दुर्भावनाओं आदि का जागरण होना एक स्वाभाविक क्रिया है, और यह तब होता है जब व्यक्ति अपने मन के अनुसार कार्य नहीं कर पाता या फिर प्रेम के क्षेत्र में कोई उसका बहिष्कार कर देता है, ऐसी स्थिति में त्वरिता शक्ति साधना के द्वारा दूषित भावनाओं को परिवर्तित कर प्रेम की भावना को बढ़ावा दिया जा सकता है और मनोनुकूल कार्य सम्पन्न कर जीवन का पूर्ण आनन्द लिया जा सकता है।

साधना विधि :

१. इस साधना में आवश्यक सामग्री है— **'त्वरिता यंत्र', 'त्वरिता सपर्या'** एवं **'त्वरिता माला'**।
२. **२६.१२.९५ मंगलवार** को साधक प्रातःकाल दोनों हाथ जोड़कर आदिशक्ति से सुख, प्रेम और ऐश्वर्य प्रदान करने की कामना करें। फिर स्नान आदि से निवृत्त हो जायें। इस साधना के लिए सफेद वस्त्र पहिनने चाहिए और गुरु मंत्राभिसिक्त पीताम्बर ओढ़ना आवश्यक है।
३. यह साधना आठ दिनों की है, अपनी सुविधानुसार साधक इसे सुबह या रात्रि किसी भी समय कर सकता है तथा पौष मास में यदि यह साधना करना सम्भव न हो सके, तो किसी भी माह के **शुक्ल पक्ष की चतुर्थी** को इस साधना को प्रारम्भ किया जा सकता है।
४. **श्वेत आसन** पर बैठ जायें, अपने सामने लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा दें तथा उस पर केसर से सर्प की आकृति अंकित करें। इस आकृति के ऊपर 'त्वरिता यंत्र' को स्थापित कर दें और **केसर या हल्दी से रंगे हुए अक्षत** अपने हाथ में ले लें तथा दाहिने हाथ से थोड़े-थोड़े अक्षत यंत्र पर चढ़ाते हुए निम्न मंत्र बोलें—

ॐ ह्रीं त्वरितायै नमः।
ॐ हुं करालिन्यै नमः।
ॐ खेचक्षे खेचर्यै नमः।
ॐ क्षं क्षत्रहस्तायै नमः।
ॐ क्षीं महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ हुं चामुण्डायै नमः।
ॐ क्लीं काल्यै नमः।

५. इस पूजन के पश्चात् 'त्वरिता सपर्या' को यंत्र के ऊपर स्थापित कर केसर से तिलक करें और सुगन्धित पुष्प चढ़ायें।
६. चार हल्दी की गांठों को बाजोट पर चारों दिशाओं में स्थापित करें तथा उनका भी केसर, अक्षत एवं पुष्प से पूजन करें।
७. सुगन्धित धूप एवं अगरबत्ती पूरे साधना काल में लगी रहनी चाहिए।
८. 'त्वरिता माला' से निम्न मंत्र की पांच माला जप करें—

मंत्र—

।। ॐ ह्रीं हुं खेचक्षे क्षं क्षीं हुं क्लीं फट्।।

९. साधना क्रम में तीसरे या चौथे दिन ही साधक को कस्तूरी या अष्टगंध की सुगन्ध का अनुभव हो सकता है; पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास से इस साधना को सम्पन्न करने वाले साधक को देवी अपने त्वरिता स्वरूप में आकर सुख, प्रेम और ऐश्वर्य का वरदान प्रदान करती हैं।
१०. पूजा में नित्य ताजे सुगन्धित पुष्प चढ़ायें तथा नैवेद्य के रूप में खीर का भोग लगायें।
११. मंत्र-जप पूरा करने के बाद जब आप आसन से उठें, तो खीर का प्रसाद स्वयं ग्रहण करें, किसी दूसरे को न दें।
१२. आठवें दिन मंत्र-जप समाप्ति के पश्चात् दुर्गा की आरती करें और उस दिन जो नैवेद्य चढ़ायें उसे अपने परिवारजनों में भी वितरित करें।
१३. इस साधना में प्रयुक्त सामग्री— यंत्र, सपर्या एवं माला तथा हल्दी की गांठों को बाजोट पर बिछे कपड़े में लपेट कर नदी या तालाब में विसर्जित कर दें।
१४. सांसारिक सुख, गृहस्थ अनुकूलता, सुन्दर पति या पत्नी की प्राप्ति, प्रेम में सफलता एवं ऐश्वर्य प्राप्त करने हेतु त्वरिता शक्ति साधना अद्वितीय साधना है।

साधना— सामग्री (यंत्र, सपर्या, माला) न्यौछावर— ३६० रु.

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान की आजीवन सदस्यता

सुखद जीवन का एहसास इस जीवन का सौभाग्य एवं गौरव

केवल एक श्रेष्ठ हिन्दी पत्रिका की सदस्यता ही नहीं, एक रचनात्मक आन्दोलन व ऋषियों द्वारा संस्पर्शित आध्यात्मिक संस्था की गतिविधियों में आगे बढ़कर भाग लेना भी। जो पूज्यपाद गुरुदेव के समक्ष अपनी सजगता और अपनी शिष्यता को स्पष्ट करने की क्रिया भी है, आजीवन सदस्यता वास्तव में परिवार की आजीवन सदस्यता है और समस्त आजीवन सदस्यों को पूज्यपाद गुरुदेव से भेंट करने के विशेष अवसर भी उपलब्ध होते रहेंगे।

केवल **7777/- रुपये** (आजीवन सदस्यता शुल्क के रूप में) यदि एक मुश्त में सम्भव न हो तो तीन किस्तों में जमा करने की सुविधा भी।

नोट - बिना उपरोक्त उपहारों के भी केवल 3,000/- रुपये द्वारा आजीवन सदस्यता उपलब्ध है ही।

सम्पर्क : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,** डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोनः 0291-32209 फेक्सः0291-32010
गुरुधाम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34 फोनः011-7182248, फेक्सः011-7196700

अब मृत्यु पर विजय पाई जा सकती है

मानव जीवन तो प्रभु का दिया हुआ वरदान है और वह जब चाहे इसे ले भी सकता है, यही प्रकृति का नियम है। शरीर का अंत हो जाना ही मृत्यु है, जिसके नाम से ही मन में भय समाने लगता है . . . किन्तु मंत्रशक्ति से क्या कुछ नहीं प्राप्त किया जा सकता, असंभव कार्य को भी सम्भव किया जा सकता है और मृत्यु को भी टाला जा सकता है . . . यदि आपको ज्ञात हो वह तीक्ष्ण, विलक्षण महामृत्युञ्जयी मंत्र, जो यमराज को भी रोकने की सामर्थ्य अपने अन्दर समेटे है।

भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में भी इस आश्चर्यजनक फलदायी महामृत्युञ्जयी मंत्र की महिमा को अनुभव किया गया है।

असाध्य वीमारियों के निराकरण तथा पूर्ण आयु प्राप्त करने का यह श्रेष्ठतम उपाय है। इसके लिए प्रातःकाल स्नानादि क्रियाओं से निवृत्त होकर, पीले आसन पर बैठकर भगवान शिव को पूर्ण श्रद्धा-भावना के साथ स्मरण कर ११ दिन तक **'सफेद हकीक माला' से 'महामृत्युञ्जय मंत्र' की एक माला जप करें—**

मंत्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमाऽमृतात्।।

मंत्र-जप समाप्ति के पश्चात् ११ वें दिन माला को किसी नदी या कुंए में विसर्जित कर दें।

न्यौछावर—१५० रु.

आप ज्वर की चिंता क्यों करें

यदि परिवार के किसी सदस्य को थोड़ा-सा भी बुखार चढ़ जाय, तो आप सीधे डॉक्टर के पास उसे लेकर भागते हैं, और बुखार यदि किसी छोटे से बच्चे को हो, तो घर के सभी सदस्य बुरी तरह से धबरा जाते हैं, क्योंकि यह छोटा सा रोग कभी-कभी उचित औषधि के अभाव में प्राणधातक भी सिद्ध हो सकता है।

चिकित्सकों के अनुसार खान-पान की अनियमितता व दूषित वातावरण में रहने के कारण शरीर में कुछ ऐसे विषाणुओं का प्रवेश हो जाता है, जो रक्त को दूषित कर देते हैं, और तब ज्वर उत्पन्न होता है।

जब तक डॉक्टर न पहुंचे, तब तक धरेलू उपचारों के साथ ही साथ यदि आपकी ईश्वर के प्रति पूर्ण आस्था है, तो आप हाथ-पैर धोकर, स्वच्छ जल लेकर **''ॐ घृणीं सूर्याय नमः''** मंत्र से अभिमंत्रित कर एक-एक घण्टे में तीन-तीन चम्मच जल रोगी को पिलाते रहें . . . कैसा भी बुखार हो, उतर जाता है, क्योंकि यह मंत्र विशेष प्रभावयुक्त है।

क्या आप 'मेण्टल टेन्सन' से पीड़ित हैं . . . तो यह छोटा-सा प्रयोग आजमा कर देखिये न!

व्यक्ति के जीवन में अनेकों उतार-चढ़ाव आते रहते हैं, जिनसे वह प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता। सीमा से अधिक प्रभावित होने पर ये घटनाएं उसके मन-मस्तिष्क पर बुरा असर डालती हैं, जो उसे "मेण्टल टेन्सन" जैसी व्याधि का शिकार बना देती हैं।

शायद ही कोई व्यक्ति ऐसा हो, जो इस बीमारी से प्रभावित न हो, यही प्रायः समस्त मानसिक रोगों की जड़ है। इस रोग से पीड़ित व्यक्ति अत्यन्त ही उदास, निष्क्रिय, निराशावादी एवं मूक हो जाता है, उसे किसी भी कार्य को करने में रुचि नहीं आती, हर काम उसे बोझ-सा लगने लगता है, न किसी से बात करने की इच्छा होती है और न ही कुछ खाने-पीने की।

कई वार तनाव व्यर्थ के कारणों द्वारा भी हो जाता है, जिनका कोई आधार नहीं होता। जब व्यक्ति मानसिक तनाव से पीड़ित हो और किसी भी समस्या का हल नहीं सूझ पा रहा हो या कोई निर्णय लेने में असमर्थता की स्थिति उत्पन्न हो रही हो, तो ऐसे में उसे यह छोटा-सा किन्तु अद्भुत फलदायक प्रयोग कर ही लेना चाहिए और जव व्यक्ति इस प्रयोग को करता है, तव वह एहसास करता है, कि शारीरिक व मानसिक दोनों रूपों से वह पूर्ण स्वस्थ अनुभव कर रहा है।

इसके लिए व्यक्ति को चाहिए, कि वह गले में **मूंगे के आठ दाने** किसी लाल धागे में पिरोकर धारण कर नित्य **'हनुमानाष्टक'** (देखें पृष्ठ ७६) का एक बार पाठ अवश्य करे, ऐसा करने पर वह मानसिक तनाव का शिकार नहीं होता तथा उसके चेहरे पर सदा प्रसन्नता ही बनी रहती है।

न्यौछावर (मूंगे के आठ दाने) — ६४ रु.

अब मृतात्मा से बातचीत सम्भव है

शायद आपको यह शीर्षक पढ़कर विश्वास न हो, किन्तु चौंकने की जरूरत नहीं है, क्योंकि यह सत्य है। यदि घर के किसी सदस्य की अचानक मृत्यु हो जाय और उसकी भावनायें या इच्छायें दवी रह जायें, तो इस लघु प्रयोग के माध्यम से उनसे बातचीत करके उनकी इच्छाओं को पूरा कर उन्हें शांति व तृप्ति प्रदान की जा सकती है या फिर दबे हुए धन, बहुमूल्य कागज आदि के रहस्यों को जाना जा सकता है।

पश्चिम में मृतात्माओं को बुलाने की कई पद्धतियां प्रचलित हैं— डेस्क पद्धति, डार्क पद्धति आदि इनके माध्यम से मृत आत्माओं को बुलाकर उनसे छुपे रहस्यों को मालूम किया जाता है।

मंत्र

।। ॐ पं अमुकं पित्र्येश्वर आगच्छ फट्।।

भारतीय पद्धतियों के अनुसार उपरोक्त 'मृतात्मा आवाहन मंत्र' की एक माला जप कर, तकिये के नीचे **'आत्म सिद्धि माला'** रखकर सो जायें, तो मृत आत्मा से व्यक्ति अपनी समस्या का समाधान प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है।

न्यौछावर— १७५ रु.

आप अविस्मरणीय व्यक्तित्व बनें

कौन नहीं चाहेगा, कि वह एक ऐसे व्यक्तित्व का स्वामी हो, जो दूसरों पर अपनी छाप छोड़ दे। यह भावना तो बाल्यावस्था से ही प्रत्येक के मन में घर कर जाती है, किन्तु अनेकों उपाय करने के बावजूद भी व्यक्ति अपने-आप को अधूरा ही महसूस करता है, प्रयत्न करने पर भी वह मनचाहा व्यक्तित्व प्राप्त करने में असमर्थ ही रहता है।
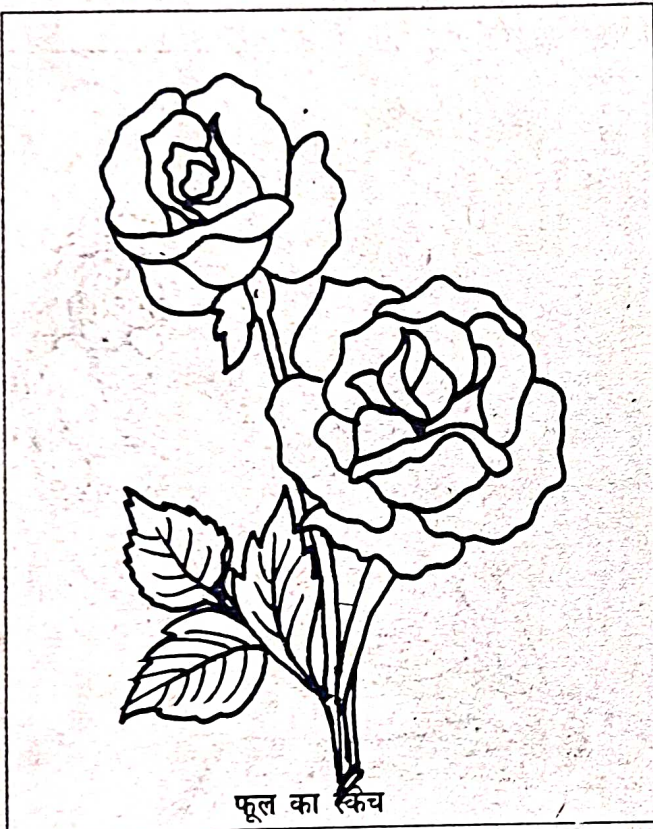
फूल का स्केच

लेकिन इस प्रयोग को सम्पन्न कर कोई भी अद्वितीय व्यक्तित्व को प्राप्त करने का अधिकारी हो सकता है। आवश्यकता है, तो मात्र इतनी कि आप नित्य दैनिक क्रियाओं से निवृत्त होने के पश्चात् शुद्ध आसन पर बैठ कर निम्न मंत्र का दस मिनट तक **''सर्वांगी माला''** को पहिन कर जप करें।

मंत्र

।। श्रीं दिव्यत्व सिद्धये श्रीं फट् ।।

— तभी आप अपने मनोनुकूल व्यक्तित्व के स्वामी बनने की छाप कुछ ही महीनों के भीतर स्पष्टतः देख सकेंगे और अपने-आप को गौरवान्वित अनुभव कर सकेंगे। पन्द्रह दिन बाद माला को नदी में प्रवाहित कर दें।

न्योछावर— १३५ रु.

प्रत्येक सुबह आप अपना चेहरा मुस्कुराहट से भर दीजिये

शरीर के सभी अंगों-प्रत्यंगों में से चेहरा आकर्षण का मूल केन्द्र बिन्दु है, क्योंकि चेहरा देखकर ही हमें सामने वाले के व्यक्तित्व का आभास होने लगता है। चेहरा देखकर ही यह भी जान सकते हैं, कि हमारे प्रति उसकी प्रतिक्रिया क्या रहेगी।

और फिर आकर्षक नेत्र, सुतवां नाक, सुन्दर, स्वस्थ कपोल, सम्मोहित करती आंखें ही चेहरे को सौन्दर्य प्रदान नहीं करतीं, यदि होठों पर मुस्कुराहट न हो तो सब कुछ फीका है . . . . और वह तभी हो सकती है, जब मन प्रफुल्लित हो।

यदि आप अपने चेहरे को तेजस्वी, सौन्दर्ययुक्त, आभायुक्त लालिमा से ओत-प्रोत देखना चाहते हैं, तो आपको प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में उठकर, नित्य क्रियाओं से निवृत्त होकर निम्न क्रिया को सम्पन्न करना चाहिए—

सबसे पहले आप **वीरासन** में बैठ जायें और पांच मिनट तक आंख बन्द कर अपने इष्ट का ध्यान करें, फिर **३ बार प्राणायाम** करें। प्राणायाम करने के बाद निम्न मंत्र का **'चंद्रिका माला'** से एक माला मंत्र-जप ८ दिन तक नित्य करें, फिर माला को नदी या तालाब में विसर्जित करें।

मंत्र

।। ॐ काम कामिन्यै मनो हारिण्यै नमः ।।

प्रभाव स्वयं ही अनुभव करके देख लें, कि किस प्रकार आपके चेहरे की मनमोहिनी मुस्कान दूसरों को आकर्षित कर लेती है।

न्योछावर— १४० रु.

क्या आप थक गए हैं, तो इससे उबरने के लिए यह तरीका अपनाइये

आज मनुष्य इस कम्पयूटराइज्ड युग में शरीर की अपेक्षा मस्तिष्क से अधिक काम लेने लगा है, उसके लिए इतने सुख-सुविधाओं के साधन उपलब्ध हो चुके हैं, कि वह बैठे-बैठे केवल दिमाग से अपना कार्य सम्पन्न करने में सक्षम है, इसीलिए वह जल्दी थक भी जाता है और उसका प्रभाव अपने शरीर के प्रत्येक अंग-अंग में महसूस करने लगता है, क्योंकि मन का सीधा सम्बन्ध शरीर के प्रत्येक अंग से जुड़ा होने के कारण उसका प्रभाव शरीर के प्रत्येक तन्तु पर पड़ता ही है।

ऐसी अवस्था में वह शरीर में अकड़न और हड्डियों में दर्द महसूस करने लगता है और अन्य कार्यों को पूर्ण करने में सक्षम नहीं हो पाता; जिसका निराशाजनक परिणाम भी उसे भुगतना पड़ता है— आपके मन में यह प्रश्न अवश्य उठ रहा होगा, कि ऐसा कौन-सा उपाय है, जिससे हमेशा तरोताजा, स्फूर्तियुक्त और चैतन्यवान रहा जा सकता है।

इसके लिए स्नान आदि से शुद्ध व पवित्र होकर **'चैतन्या माला'** को धारण करें और निम्न मंत्र का दस मिनट तक मानसिक जप करते हुए **शवासन** में लेट जायें।

मंत्र

।। ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ।।

आप जब भी थकावट महसूस करें, इस क्रिया पद्धति को अपनायें और अपने-आप को 'चैतन्य पुरुष' बनायें। माला को किसी निर्जन स्थान पर पन्द्रह दिन बाद डाल दें।

न्यौछावर— ११० रु.

साधना में निश्चित सिद्धि प्राप्त हो सकती है

साधना एक लम्बी प्रक्रिया है, इसमें सफलता पहली बार में भी मिल सकती है और दसवीं बार करने पर भी मिल जाय, तो वह जीवन का सौभाग्यदायक क्षण होता है, इसमें निराश होने की कोई बात नहीं है। किसी भी साधना में सफलता प्राप्ति के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है, कि साधक के मन में उस साधना के प्रति पूर्ण श्रद्धा, विश्वास, आस्था और समर्पण की भावना हो, फिर ऐसा हो ही नहीं सकता कि आप साधना करें और सिद्धि प्राप्त न हो।

किन्तु मन की जिज्ञासामूलक प्रवृत्ति होने के कारण साधक थोड़ा संशयग्रस्त हो जाते हैं और साधना में सफलता मिलते-मिलते रह जाती है। उन्हें चाहिए कि वे अपने पूजाकक्ष में साधना करने से पूर्व **'साफल्य गुटिका'** स्थापित कर निम्न मंत्र का **३५ बार उच्चारण** अवश्य करें।

मंत्र

।। ॐ ऐं सर्व सिद्धये ऐं फट् ।।

फिर उस साधना को सम्पन्न करें। ऐसा करने पर जिस उद्देश्य से साधना की जा रही है, उसमें सफलता की सम्भावना प्रबल होती ही है। साधना समाप्ति के पश्चात् गुटिका को किसी नदी या कुंए में प्रवाहित कर दें।

न्यौछावर — ६० रु.

क्या आप अकारण हर समय भयभीत रहते हैं . . .

'भय' का दूसरा नाम 'मृत्युवत् जीवन' है। अकारण भय से ग्रस्त व्यक्ति व्यर्थ के चिन्तन में फंस कर विचारों के जाल में इतना उलझ जाता है, कि उसमें से निकलने का उसे कोई मार्ग नहीं सूझता और वह हर समय चिंतित रहता है। अकारण भय से परेशान हो वह कमजोर होता चला जाता है, मानसिक और शारीरिक दोनों रूपों से अक्षम और रोगग्रस्त हो कभी-कभी आत्महत्या जैसे दुराग्रहपूर्ण कृत्य के लिए उद्यत हो जाता है। भयभीत व्यक्ति शंकालु हो जाता है, वह अपना-पराया किसी भी व्यक्ति पर विश्वास नहीं कर पाता। इसी अविश्वास के कारण ही कई बार उसे बहुत बड़ा धोखा भी जीवन में उठाना पड़ता है।

ऐसे व्यक्तियों को जो अकारण ही भयभीत रहते हों, उन्हें अपनी कलाई में मंगलवार के दिन ब्रह्म मुहूर्त में मंत्र-सिद्ध धातु निर्मित **'रक्षा चक्र'** धारण कर ११ वार **"ॐ ह्रीं क्रीं क्लीं फट्"** मंत्र का उच्चारण करना चाहिए और यह आवश्यक है, कि वे उस चक्र के प्रति पूर्ण आस्था बनाये रखें।

न्यौछावर– ८० रु.

पूरे दिन भर सफलता प्राप्त करें

सही अर्थों में सफलता ही जीवन की श्रेष्ठता है। आशा-निराशा, जय-पराजय, सफलता-असफलता ये उतार-चढ़ाव तो प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में आते ही हैं, जिनका प्रभाव व्यक्ति पर पड़ना अवश्यम्भावी है। जब व्यक्ति अपने द्वारा किये गये कार्य में सफलता प्राप्त नहीं कर पाता, तो वह परेशान और दुःखी हो जाता है, क्योंकि वह अपने आशानुकूल कार्य को भलीभांति सम्पन्न कर पाने में अपने-आप को अक्षम अनुभव करने लगता है। ऐसे व्यक्ति बार-बार पराजित होने पर उन्नति के पथ पर अग्रसर नहीं हो पाते और निराशावश उनका जीवन अपूर्ण हो जाता है। उनमें जीने की ललक, आगे बढ़ने की अभिलाषा प्रायः समाप्त हो जाती है। उनके जीवन की गति थम सी जाती है।

उनकी निराशा को आशा में और सफलता में बदलने का ही अचूक उपाय है यह . . .

यदि आप चाहते हैं, कि आप जिस कार्य में भी हाथ डालें, वह पूर्ण हो ही, तो आपके लिए आवश्यक है, कि आप ब्रह्म मुहूर्त में उठते ही स्नानादि क्रियाओं से निवृत्त होकर, शुद्ध व पवित्र हो, पीले आसन पर बैठें, वातावरण को सुगन्धमय बनाने के लिए धूप, दीप व अगरबत्ती जलायें और भगवान गणपति के ये बारह नाम उच्चरित करें–

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः,
लम्वोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः;
द्वादशैतानि नामानि य पठेत् श्रृणुयादपि।।

जमीन पर रहकर भी आकाश को चूम लेने की क्षमता आ जाती है

जो अभी तक गोपनीय, अगोचर और अगम्य रहा . . . पर जो मनुष्य को अद्वितीय युग पुरुष बनाने में निश्चित ही समर्थ है

एक क्षण ही पर्याप्त होता है . . . सब कुछ समाप्त कर देने के लिए . . . और बहुत कुछ पा लेने के लिए। कुछ खोकर ही कुछ पाया जा सकता है . . . परिवर्तन . . . नवोदय . . . असम्भव को भी सम्भव बना देने की शक्ति। श्रेष्ठता की स्थिति है, उच्चता की स्थिति है— दिव्यता की स्थिति है ''दिव्यपात'', जिसे प्राप्त किया जा सकता है गुरु-कृपा से . . . निश्चय से . . . आशीर्वाद स्वरूप।

और जब ऐसा होता है, तब अतृप्त मन में शान्ति का प्रवेश होने लगता है . . . जो पूर्णता का प्रतीक है, आनन्द का प्रतीक है, जो नर से नारायण बनने की क्रिया है, बूंद से सागर बनने की क्रिया है, लघु से महान बन जाने की क्रिया है . . . यही स्थिति है बहुत कुछ प्राप्त कर लेने की, असंभव को भी संभव कर देने की, ''शव'' से ''शिव'' बन जाने की।

पर स्वयं के प्रयासों से तो यह सम्भव ही नहीं है, कि मनुष्य ''भू'' तत्त्व से ऊपर उठकर उर्ध्वगामी बन जाय . . . संघर्षमय इस वातावरण में सांस लेना भी उसके लिए एक दुर्लभ कार्य है . . . तो फिर ''आत्म-तत्त्व'' की प्राप्ति कैसे सम्भव है?

इसके लिए आवश्यकता है जीवन को समझने की, उस क्रिया को समझने की, जिससे जीवन दिव्य बन जाय और परमानन्द की प्राप्ति हो सके। यह कोई सरल प्रक्रिया नहीं है, इस अवस्था को प्राप्त करने के लिए अपने-आप को तिल-तिल कर जलाना पड़ता है . . . जो तूफानों में भी अडिग खड़ा रह कर, सद्मार्ग पर चलते हुए,

प्रसन्नमय बना रह सकता है, गुरु के महत्त्व को समझ सकता है . . . उसी दिन स्वर्ण, देवमुकुट बन जाता है . . . मात्र एक क्षण की देर मानव को अधःपतन की ओर धकेल सकती है।

नरक और स्वर्ग तो इसी जीवन के दो पहलू हैं। यदि जीवन अभावपूर्ण है, अधूरा है— जहां दुःख, दैन्यता, कष्ट, पीड़ा, बाधाएं, समस्याएं, परेशानियां हैं, तो वह जीवन नरक तुल्य है...... और यदि समस्त सिद्धियों से पूर्ण है, सिद्धि का अर्थ है— सुख, सौभाग्य, सम्पन्नता, सफलता, श्रेष्ठता . . . तो वह स्वर्ग तुल्य है। नरक और स्वर्ग दोनों को ही मनुष्य इसी पृथ्वी पर रहकर भोगता है, इसके लिए उसे कहीं अन्यत्र जाने की आवश्यकता नहीं है।

यदि स्वर्ग की प्राप्ति करनी है, 'पशु' से 'पशुपति' बनना है, तो सबसे पहले शिष्य बनना होगा, क्योंकि गुरु अपने कर्त्तव्यों को पूरा करते हुए प्रत्येक दृष्टि से शिष्य को परिपूर्णता प्रदान करते ही हैं . . . और दीक्षा ही वह माध्यम है, जो शिष्योचित बना देने का एकमात्र साधन है। दीक्षा के द्वारा ही प्रत्येक कार्य सहजता से सम्पन्न होना सम्भव है, दीक्षा से मिलती है आपके चिन्तन को विस्तारिता, आपके हृदय को फिर से धड़कने की शक्ति, चेहरे पर ओज, लावण्यता, आह्लाद, मस्ती; उन्हीं संन्यासियों, ऋषियों, मुनियों की तरह तेजस्विता . . . और वह सब कुछ, जो आपके लिए उन्नतिदायक है, सफलतादायक है।

जब गुरु देख लेते हैं, कि शिष्य उन्नति की ओर अग्रसर होने लगा है, उसने अपने हृदय की धड़कनों को गुरु के हृदय की धड़कनों से जोड़ दिया है, प्रत्येक आज्ञा का पालन करते हुए निष्काम भाव से गुरु के चरणों में अपने-आप को विसर्जित कर दिया है— विसर्जित करने का तात्पर्य है — मन से सभी संशयों को दूर कर उसे गुरु के प्राणों से जोड़ने की प्रक्रिया . . . तभी गुरु आगे की क्रिया, जो कि उच्चता की स्थिति है— 'दिव्यपात' प्रदान करते हैं।

जब पूरा शरीर झंकृत हो उठता है, अणु-अणु विखण्डित होने लगता है और शिष्य गुरु के उस तीव्रतम तेज को झेलने की क्षमता प्राप्त कर लेता है, तभी गुरु आगे की ओर गतिशील होते हैं। वे जब तक शिष्य की क्षमता को, योग्यता को परख नहीं लेते, तब तक दूसरी क्रिया प्रारम्भ नहीं करते . . . **और यदि शिष्य उनके योग्य, अनुकूल नहीं बन पाता, तो वे बार-बार शक्तिपात के माध्यम से शिष्य को चैतन्यता प्रदान कर, प्राणस्विता प्रदान कर उसे मूल श्रृंखला (जो कि उच्चता के शिखर पर पहुंच जाने की क्रिया है) से जोड़ने का प्रयास करते हैं, तभी वह सुसुप्तावस्था से जाग्रतावस्था को प्राप्त कर एक छोटे-से बीज से विशाल वृक्ष बन जाने की क्रिया प्रारम्भ कर देता है, जिसकी छाया तले बैठकर हजारों लोग शीतलता का अनुभव कर सकें . . .** और यह कोई सामान्य घटना नहीं होती, जब जीवन के पुण्योदय उदय होते हैं, तभी ऐसा दिव्य अवसर प्राप्त हो पाता है, जो जीवन को उर्ध्वमुखी बना देता है।

जब गुरु यह देख लेते हैं, कि बीज धीरे-धीरे अंकुरित होना प्रारम्भ हो गया है, तब वे शिष्य पर अपनी साधनाओं व मंत्रशक्ति द्वारा 'उच्च शक्तिपात' की क्रिया सम्पन्न कर देते हैं, जब मनुष्य देवतुल्य हो जाता है, समस्त विकारों से रहित . . . जब वह अपने अंक में शिष्य रूपी सरिताओं को समेट लेने की सामर्थ्य, योग्यता, क्षमता प्राप्त कर लेता है . . . जब वह उच्च शक्तिपात की क्रिया को पूर्णता के साथ आत्मसात् कर लेता है और अपने ही सदृश्य देवता तुल्य बना देने की शक्ति उसमें व्याप्त हो जाती है, तो गुरु आगे की क्रिया, जो विरले ही लोगों को प्राप्त हो सकी है— "दिव्यपात" कर उसे "ब्रह्मपद" से विभूषित कर देते हैं।

दिव्यपात जीवन का वह अनमोल क्षण है, जब नर और नारायण दोनों अभिन्न हो जाते हैं . . . समुद्रवत् . . . विशाल चट्टान बन जाने की क्रिया . . . धरती पर खड़े होकर आकाश को चूम लेने की क्षमता . . . जो अगाध, विस्तृत, विशाल और देवत्व युक्त है, सामान्य मानव से 'युग पुरुष' बन जाने की क्रिया है . . . और यही जीवन का अनमोल स्वर्णिम क्षण है . . . जब गुरु के तेज से शिष्य समस्त दिव्य शक्तियों का स्वामी बन जाता है।

— तभी संभव होता है देवताओं का प्रत्यक्ष दर्शन. . . अप्सराओं का नृत्य. . . राम, कृष्ण, शंकराचार्य, विश्वामित्र का साहचर्य. . . ब्रह्माण्ड से सम्पर्क. . . कुछ भी कर लेने की सामर्थ्य. . . और सिद्धाश्रम से तादात्म्य. . . सशरीर. . . जहां पहुंचना देवताओं के लिए भी दुर्लभ है।

— और यही तो जीवन की अंतिम चरम सीमा है, 'पूर्णत्व' की प्राप्ति है, जो दिव्यपात क्रिया द्वारा ही संभव है।

— पर यह क्रिया हरेक को प्रदान नहीं की जाती और न ही हर किसी को इस क्रिया का ज्ञान है। त्रेता युग में केवल राम ही एक ऐसे 'युग पुरुष हुए' जो शिष्यता की कसौटी पर खरे उतरे . . . और जब अनेकों साधनाएं व तप करने पर उनमें तीव्र से तीव्र तरंगों

को, दिव्य शक्ति को अपने अन्दर धारण करने की क्षमता, दृढ़ता आ सकी, ठीक उसी समय विश्वामित्र ने प्रसन्न हो उन पर दिव्यपात की क्रिया की, पर उनके अतिरिक्त और किसी में भी उस दिव्यपात को ग्रहण करने की क्षमता नहीं आ सकी।

द्वापर युग के कृष्ण भी इसका एक प्रत्यक्ष उदाहरण बन कर हमारे सामने आये, जिन्होंने सांदीपन गुरु के आश्रम में रहकर गुरु सेवा कर, अनेक साधनाओं व गोपनीय विद्याओं को अर्जित करते हुए, कठोर से कठोर परीक्षाओं को देकर इस 'दिव्यपात' को प्राप्त किया, तभी वे 'युग पुरुष' कहला सके और लघु से महान बन गये और ''जगद्गुरु'' कहलाये।

शंकराचार्य ने जब अपने गुरुदेव से इस दिव्यपात को प्राप्त करना चाहा, तो उन्होंने इस बात से इन्कार कर दिया, क्योंकि उनमें वह सामर्थ्य नहीं आ पाई थी, वह पात्रता, वह शुद्धता, वह निर्मलता नहीं आ पाई थी, परन्तु जब वे छः महीने की संघर्षपूर्ण अवधि को समाप्त कर पुनः गुरुदेव के समक्ष लौटे, तो गुरुदेव उन्हें देखकर प्रसन्न हुए, उनमें अब वह क्षमता आ चुकी थी, कि वे तीक्ष्णतम क्रिया को, जिसका प्रहार यदि किसी सामान्य पर किया जाय, तो उसको क्षत-विक्षत कर दे, ऐसी ही अतिविशिष्ट क्रिया दिव्यपात को शंकराचार्य पर सम्पन्न किया और वे भी 'युग पुरुष' कहलाये।

— और इस युग में भी इस क्रिया का ज्ञान केवल एक या दो व्यक्तियों को ही है . . . जो अपने-आप में पूर्ण ब्रह्म स्वरूप हैं . . . यदि वे चाहें तो आशीर्वाद स्वरूप प्रसन्न होकर किसी पर भी यह क्रिया कर सकते हैं . . . आवश्यकता है उनके प्राणों से अपने प्राणों को जोड़ने की . . . आत्मसात् करने की . . . समाहित होने की . . . अपने 'स्व' को उनके चरणों में समर्पित कर देने की . . . जब तुम कुछ दोगे, तभी वे कुछ लौटा सकेंगे— यह तो आदान-प्रदान है गुरु और शिष्य का।

गुरु कभी शिष्य का ऋण अपने ऊपर नहीं रखते . . . वह जितना देता है, उसका हजार गुना उसे प्रदान कर देते हैं . . . पूज्य गुरुदेव **''डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी'' इस युग की एक ऐसी ही विभूति हैं, जो सभी कलाओं से पूर्ण . . . सिद्धाश्रम से संस्पर्शित . . . दिव्यपात की क्रिया से युक्त हैं . . . और जो अपने ही समान शिष्य को भी पूर्णता प्रदान करने में सक्षम हैं . . . और निरन्तर इस कार्य की ओर संलग्न हैं, सचेष्ट हैं** . . . क्योंकि उनके जीवन की एकमात्र अभिलाषा, इच्छा, ध्येय, लक्ष्य केवल यही है, कि जो भी ज्ञान का सागर उनमें अन्तर्निहित है, वह पूरा का पूरा शिष्य में ज्यों का त्यों उड़ेल दूं . . . और वे इस कार्य में ज्यादा विलम्ब नहीं करना चाहते . . . समय की तेज रफ्तार उनके कदमों को और अधिक तीव्रता प्रदान कर रही है. . . समय भी कम है और पात्र भी कम . . . जो अपने अन्दर इतनी सामर्थ्य ला सकें, ऐसा कोई उन्हें दिख नहीं रहा है; किन्तु हर क्षण उन्हें यह भय भी लगा रहता है, कि कहीं यह ज्ञान, यह पूंजी उन्हीं के साथ विलुप्त न हो जाय. . .ऐसा चिन्तन मन में आते ही उन्होंने अपनी शक्ति और ऊर्जस्विता का अंश तेजी से शिष्यों को प्रदान करना प्रारम्भ कर दिया है, जिससे कि वे उस ज्ञान को, उस विद्या को प्राप्त कर सकें . . . जो अपने आप में दिव्य है।

बहुत ही त्याग, परिश्रम और दृढ़ता के सहारे, तपस्या के बल पर प्राप्त हुआ खजाना यों ही शिष्यों पर लुटा देना . . . और फिर भी चेहरे पर कोई शिकन व्याप्त न हो . . . यह तो उनकी दिव्यता ही कही जा सकती है . . . शिष्य को अनमोल . . . अद्वितीय . . . सर्वश्रेष्ठ बना देना चाहते हैं।

इसीलिए तो आये दिन शक्तिपात, ऊर्ध्वपात और ब्रह्मपात जैसी बड़ी-बड़ी तीक्ष्णतम क्रियाओं को इतनी आसानी से प्रदान कर गुरुदेव अपने शिष्य को प्रकाश स्तम्भ बना देना चाहते हैं . . . और विशाल वटवृक्ष बना देने की क्रिया . . . समुद्रवत् बना देने की क्रिया प्रारम्भ हो चुकी है. . . जो इन क्षणों के मूल्य को आंक कर उनके द्वारा प्रदत्त किये गए तपस्यांश को प्राप्त कर लेगा, वह सामान्य से उच्च बन जायेगा . . . अपने-आप में समस्त गुणों से युक्त . . . क्योंकि अब वे समयाभाव को देखते हुए "दिव्यपात" की क्रिया प्रारम्भ कर चुके हैं . . . जो जीवन की पूर्णता है।

शिष्य को तेजस्विता युक्त बनाने के लिए आज से पहले किसी ने भी इतनी सरल विधि से इस क्रिया को सम्पन्न नहीं किया, जिसे पूज्य गुरुदेव कर रहे हैं।

दिव्यपात आज से पहले गोपनीय, अगोचर और अगम्य बना रहा . . . पर इसमें निश्चित ही एक सामान्य मनुष्य को अद्वितीय युग पुरुष बना देने की सामर्थ्य है।

इतनी तेजस्वी दीक्षाओं को इतनी सरलता से प्रदान कर देना, तो रंक को राजा बना देना है . . . अणु को परमाणु बना देना है . . . कुछ को बहुत कुछ बना देना है . . . जो भाग्य को हीरे की कलम से लिख देने के जैसा है।

हम में से प्रत्येक साधक में, शिष्य में वह क्षमता, योग्यता आनी ही चाहिए, जिससे कि हम साक्षात् देवताओं के प्रत्यक्ष दर्शन कर सकें।

गुरुदेव हमें वह दिव्य तेज प्रदान कर सकें, जिससे हम एक अद्वितीय युग पुरुष बन सकें, अतः यह क्षण चूकना नहीं है . . . क्षण ही की महत्ता हमारे जीवन में विशिष्ट है, जिसे हम मूर्खतावश खो बैठते हैं और फकीर के फकीर ही रह जाते हैं . . .

जब मनुष्य पशुत्व की भावना का समापन कर मानवत्व की भावना से अनुप्राणित हो जाय . . . जहां पशु भावना का प्रशमन होता है तथा शरीर की समस्त अशुद्धियां मिट जाती हैं . . . और मानवत्व से भी आगे बढ़कर देवत्व प्राप्त कर लेने की क्रिया सम्पन्न हो . . . ठीक वही क्षण होता है, जब समस्त विकारों से रहित, पाप-दोषों से मुक्त हो, उसमें दिव्यपात प्राप्त करने की पात्रता, पवित्रता, शुद्धता, निर्मलता आ पाती है।

जब ऐसे सक्षम व्यक्तित्व का सान्निध्य मिला है, जो अपने-आप में एक योग्य गुरु हैं . . . और गुरु ही नहीं, सद्गुरु हैं . . . जो सर्वगुण सम्पन्न हैं . . . सर्वशक्तिमान हैं . . . और जो दिव्यपात प्रदान करने में पूर्णतः समर्थ हैं . . . ऐसे अद्वितीय युग पुरुष से अपने जीवन में दिव्यपात को प्राप्त कर लेना तो जीवन की श्रेष्ठ उपलब्धि है . . . ईश्वर दर्शन है, मोक्ष प्राप्ति का मार्ग है . . . और यही तो जीवन की पूर्णता है।

तुम्हें तो सिर्फ उनके चरणों में अपने-आप को समर्पित कर देना है . . . जिस दिन यह भाव मन में उठेगा . . . उस दिन तुम उनकी बात को . . . उनके स्वर को अनसुना नहीं कर सकोगे . . . क्योंकि गुरुदेव तो दोनों हाथों से लुटाते ही जा रहे हैं, अब यह तो आपके ऊपर निर्भर है, कि आप उसे कितना ले पाते हैं . . . ऐसा गुरु दोबारा किसी युग में नहीं मिल पायेंगे . . . पर शायद अभी आप इस बात को समझ नहीं सके और उनका हाथ छिटक कर एक तरफ खड़े हो जायेंगे . . . किन्तु बाद में सिवाय पछतावे के कुछ शेष नहीं रह जायेगा . . . निर्णय तो आपको करना है . . . गुरु तो केवल समझा ही सकते हैं . . . समझना तो आपको है।

अंत में मैं तो सिर्फ इतना ही कहूंगा, कि हम में से प्रत्येक साधक व शिष्य को अद्वितीय युग पुरुष बनने की ओर अग्रसर होना ही चाहिए और उस क्षण को गंवाना नहीं चाहिए जो क्षण बहुत कुछ प्रदान करने वाला है . . . अब वह क्षण आ गया है, जब यह दिखा देना चाहिए, कि हम अब सिर्फ अस्थिचर्म युक्त नहीं बने रहना चाहते।

हे गुरुदेव! आप हमें अपने आशीर्वाद से युक्त वह दिव्यपात प्रदान करें, जिससे कि हम भी एक अद्वितीय युग पुरुष बन सकें।

१८-१२-६५

प्रत्यंगिरा देवी
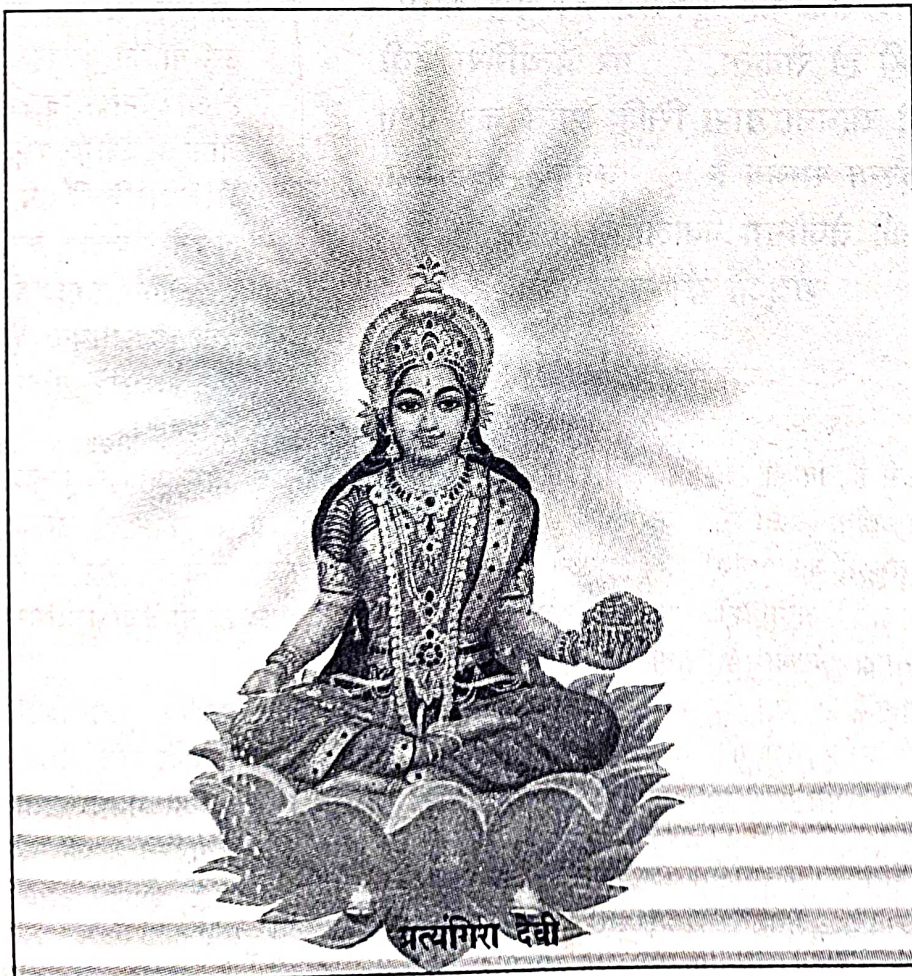
आज जीवन एक कुरुक्षेत्र बन कर रह गया है। "कुरुक्षेत्र" शब्द से उस स्थान को परिभाषित किया जा सकता है जहां द्वन्द्व है। द्वन्द्व वहां होता है, जहां दो में विषम भाव परिलक्षित होता है . . .और यह विषम भाव ही तो कारण होता है तनावग्रस्त बने रहने का। दोनों पक्ष (वादी और प्रतिवादी) तनाव ग्रस्त रहते ही हैं, क्योंकि दोनों अपने-अपने स्वार्थ को सिद्ध करने में लगे हुए हैं, यही कारण है कि संसार में कोई भी ऐसा नहीं, जो तनाव मुक्त हो. . . स्वार्थ एक ऐसा दलदल है, जिसमें से निकल पाना कठिन है, जितना उसमें से बाहर निकलने का प्रयत्न करते हैं,

उतना ही और धंसते चले जाते हैं. . . ऐसे घुटन भरे जीवन का क्या अर्थ, जहां सुख-चैन से दो घड़ी सांस भी न ले सकते हों।

जब तक मानव-मन स्वार्थ प्रेरित एवं तनावग्रस्त रहेगा, तब तक वह हर स्थान कुरुक्षेत्र ही कहा जायेगा, जहां ऐसे लोग रहते हैं, अतः जब तक स्वार्थ भाव समाप्त नहीं होगा, तब तक यों ही चलता रहेगा कौरवों-पांडवों के मध्य का यह युद्ध. . . जिसकी ओट में छिपा है— 'अन्धकार' और 'मृत्यु'।

— क्या तनावग्रस्त बने रहना ही जीवन का प्रयोजन है?

जीवन का प्रयोजन तो कुछ और है पर हम अपने बनाये हुए कुरुक्षेत्र में ही फंस कर रह गये हैं और भ्रमित हो गये हैं अपने लक्ष्य से।

जीवन इतना सुलभ नहीं है, जितना आप समझ बैठे हैं। जब तक आप अपने मन से दुर्भावनाओं से बनी गांठें नहीं निकाल पायेंगे, तब तक शांति और तृप्ति कैसे मिल सकती है. . . असल में तो दुर्भावनाएं ही हमारी शत्रु हैं, जो हमारे भीतर शत्रुता के भाव को जन्म देती हैं, कि मैं जो करता हूं, ठीक करता हूं; मैं जो कहता हूं, ठीक कहता हूं; मैं सच्चा हूं, सामने वाला झूठा है; इन अवगुणों को मानव देखते हुए भी नहीं देख पाता और अपने-आप को सदाचारी, सद्व्यवहारी, सद्गुणकारी समझ बैठता है, फलस्वरूप जीवन कुरुक्षेत्र का मैदान बन जाता है।

आज जिधर भी दृष्टि जाती है उधर द्वेष की चिनगारियां बिखरी हुई हैं, आखिर कब वह समय आयेगा जब मानव अपने मन से दुर्भावनाओं को निकाल सकेगा, क्योंकि जब ऐसा सम्भव होगा, तभी व्यक्ति सुखी हो सकेगा, निर्द्वन्द्व हो सकेगा. . . और ऐसा तब सम्भव हो सकेगा, जब वह अपने-आप को सही रूप में पहिचान लेगा, कि वह क्या है?

मनुष्य उस शक्ति से अपरिचित है, जिसने उसका निर्माण किया है, तेजस्वी माता-पिता की संतान होकर भी वह भयभीत है. . . क्योंकि उसने मां का जन्मदायिनी स्वरूप ही देखा है। यह तो उसका एक स्वरूप है, दूसरा स्वरूप तो उसका शक्तिदायिनी स्वरूप है, जिसकी शक्ति से मानव अनभिज्ञ है। संसार में केवल मां ही ऐसी होती है, जिसे पुकारे जाने पर वह व्याकुल हो उठती है अपने शिशु को कलेजे से लगा लेने के लिए. . . फिर वह बालक कितना ही दुराचारी क्यों न हो, दोषी क्यों न हो. . . उसे संकट से उबारने के लिए वह तत्क्षण प्रस्तुत हो ही जाती है. . . और ठीक एक अबोध शिशु की भांति आपको भी तो बस उस मां को पुकारना है और निश्चिन्त हो जाना है, क्योंकि परम शक्तिशालिनी मां अपने पुत्र को शक्तिवान बना ही देती है जीवन के कुरुक्षेत्र को जीतने के लिए।
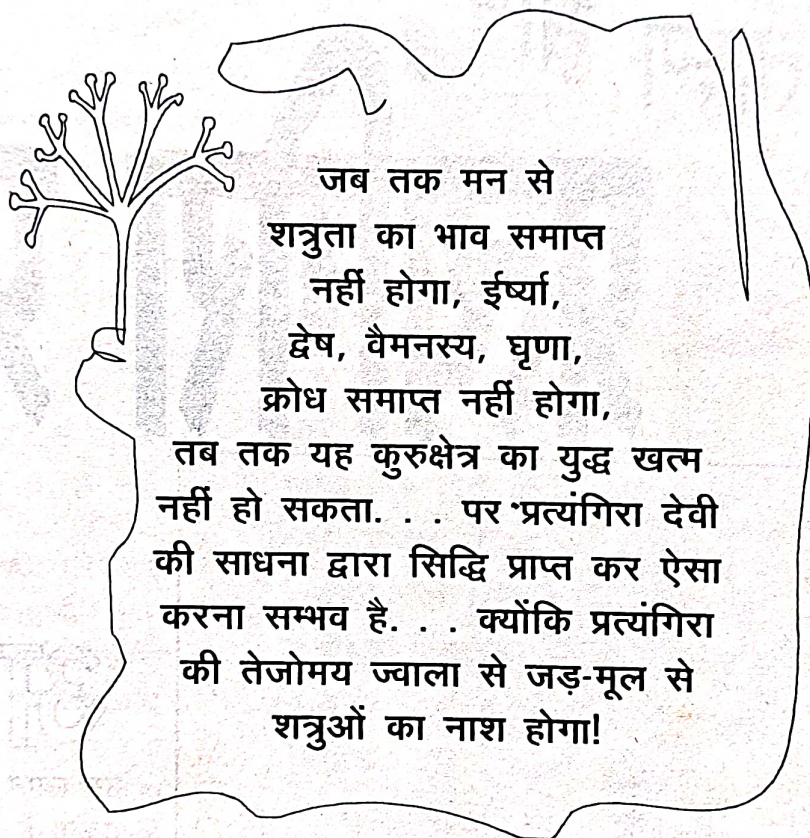
मां की शक्ति को प्राप्त करने के लिए आपको सम्पन्न करना है— "प्रत्यंगिरा प्रयोग" आगे का काम तो उसका है, आपको चिन्ता करने की जरूरत नहीं है और न ही भयभीत होने की आवश्यकता है, आपको तो देवी प्रत्यंगिरा का श्रद्धापूर्वक नाम लेना है. . .

प्रत्यंगिरा आदिशक्ति का अत्यधिक ज्वलंतकारी स्वरूप है, जिसकी साधना तो फलदायी सिद्ध होती ही है। यों तो कोई भी शक्ति साधना विफल नहीं मानी जाती, किन्तु प्रत्यंगिरा प्रयोग का अपना विशेष महत्त्व है, जो बड़े से बड़े शत्रु को भी शांत कर देने वाली है, क्योंकि इसका उद्भव शिव की शक्ति शिवा से हुआ है।

शिवा हैं ही कल्याणकारी, जो अपने भक्तों की सर्वविधि सुरक्षा करती हैं। प्रत्यंगिरा के साधक को न तो अपमृत्यु का भय रहता है, और न ही कोई आशंका ही व्याप्त होती है, क्योंकि यह प्रयोग साधक को हर प्रकार से सुरक्षित कर देता है।

जीवन में अक्सर धोखे होते रहते हैं, यदि आपको यह ज्ञात हो जाय, कि अमुक शत्रु के कारण आपका जीवन कंटकाकीर्ण हो गया है, तो सुरक्षा का उपाय क्यों नहीं किया जाय, शत्रु की शक्ति को ही क्यों न इतना क्षीण बना दिया जाय, कि वह मुंह की खाये।

मानव का शत्रु केवल मात्र प्रतिद्वन्द्वी मानव ही नहीं होता, अपितु कभी-कभी तो मानव के आन्तरिक कारण ही उसके शत्रु बन जाते हैं और ऐसी स्थिति में प्रत्यंगिरा जहां बाहरी शत्रुओं का विनाश करती है, साथ ही अन्दर निहित विकारों की उत्पत्ति से जन्मी शत्रुता के भाव को भी पूर्णतः समाप्त कर देती है, फलस्वरूप जहां यह प्रयोग भौतिक दृष्टि से लाभदायक है, वहीं आध्यात्मिक दृष्टि से भी फलदायी है, जो मन के विकारों को समाप्त कर, शुद्धता और निर्मलता प्रदान कर भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टियों से उन्नति और सफलता प्रदान करता है।

प्रयोग विधि:

१. इस प्रयोग के लिए आवश्यक सामग्री है— दिव्य मंत्रों से प्राण-प्रतिष्ठित **''प्रत्यंगिरा यंत्र''**, **''विभीतिका माला''** एवं **''शत्रुमर्दनी गुटिका''**।

२. इस प्रयोग को करने का विशेष दिन है **१८.१२.९५ सोमवार**। इस प्रयोग को किसी भी माह की **एकादशी** को भी सम्पन्न किया जा सकता है।

३. यह प्रयोग रात्रिकालीन है।

४. साधक निश्चित समय पर **पश्चिम दिशा** की ओर मुख करके **लाल आसन** पर बैठ जायें।

५. सामने चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर किसी स्टील या तांबे की प्लेट पर कुंकुम से रंगे हुए चावल से अपने शत्रु विशेष का नाम अंकित करके यंत्र को स्थापित करें।

६. गुटिका को भी यंत्र के सामने स्थापित करें, उसके बाद इन्द्र, वरुण, कुबेर और यम जो चार दिशाओं के अधिपति हैं, उनके निमित्त चार दीपक (सरसों के तेल के) जला लें।

७. चारों देवताओं का अपनी पूर्ण मनोरथ सिद्धि के लिए कुंकुम, अक्षत, धूप व दीप से पूजन करें।

८. यंत्र और गुटिका पर कुंकुम और अक्षत चढ़ाकर पूजन करें तथा लाल रंग के पुष्पों को चढ़ायें।

९. धूप व दीप लगातार जलते रहने चाहियें।

१०. इसके बाद यंत्र के सामने एक कटोरी रखें और उसमें, निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए कुंकुम से रंगे चावल को तब तक चढ़ायें, जब तक कि वह कटोरी पूर्णरूप से भर न जाय।

मंत्र

।।ॐ प्रत्यंगिरायै स्वाहा।।

११. फिर उन चावलों से यंत्र व दीपकों के चारों ओर घेरा डालें।

१२. इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करें और प्रत्यंगिरा देवी का ध्यान करते हुए अपनी मनोकामना पूर्ति की प्रार्थना करें, फिर जल को भूमि पर छोड़ दें।

१३. शत्रुमर्दनी गुटिका को अपने आसन के नीचे दबा दें और यंत्र की ओर देखते हुए ''विभीतिका माला'' से निम्न मंत्र का **१ माला जप** करें—

मंत्र

।।ॐ शत्रुदारिण्यै फट्।।

१४. मंत्र-जप की समाप्ति के पश्चात् व मंत्र-जप से पूर्व एक-एक माला गुरु मंत्र का जप अवश्य कर लें।

१५. जप समाप्ति के बाद **गुरु आरती** एवं **जगदम्बा आरती** करें।

१६. यंत्र, गुटिका एवं माला को नदी या समुद्र में प्रवाहित कर दें और दोनों हाथ जोड़कर प्रत्यंगिरा को नमस्कार करें।

१७. पूजन में प्रयुक्त लाल अक्षत को किसी पीपल के पेड़ पर या मंदिर में चढ़ा आयें।

एक दिन का यह प्रयोग साधक के जीवन के विरोधी तत्वों को समाप्त करने वाला अचूक अस्त्र है, जिससे जीवन की उन्नति के मार्ग में बाधा उत्पन्न करने वाले शत्रुओं को जड़-मूल से नष्ट किया जा सकता है और भौतिकता के साथ-साथ अध्यात्म के पथ पर भी अग्रसर हुआ जा सकता है, इसलिए प्रत्येक गृहस्थ व्यक्ति को, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष यह प्रयोग सम्पन्न कर अपने जीवन में सफलता प्राप्त करनी ही चाहिए।

साधना-सामग्री— (यंत्र, माला, गुटिका) न्यौछावर - ३००/-

सुखमय, आनन्दमय जीवन के क्षणों में जब विष घुल जाता है और
समस्याओं के हल सही नहीं सूझते. . . यदि किसी के द्वारा तंत्र प्रयोग करवा दिया जाय
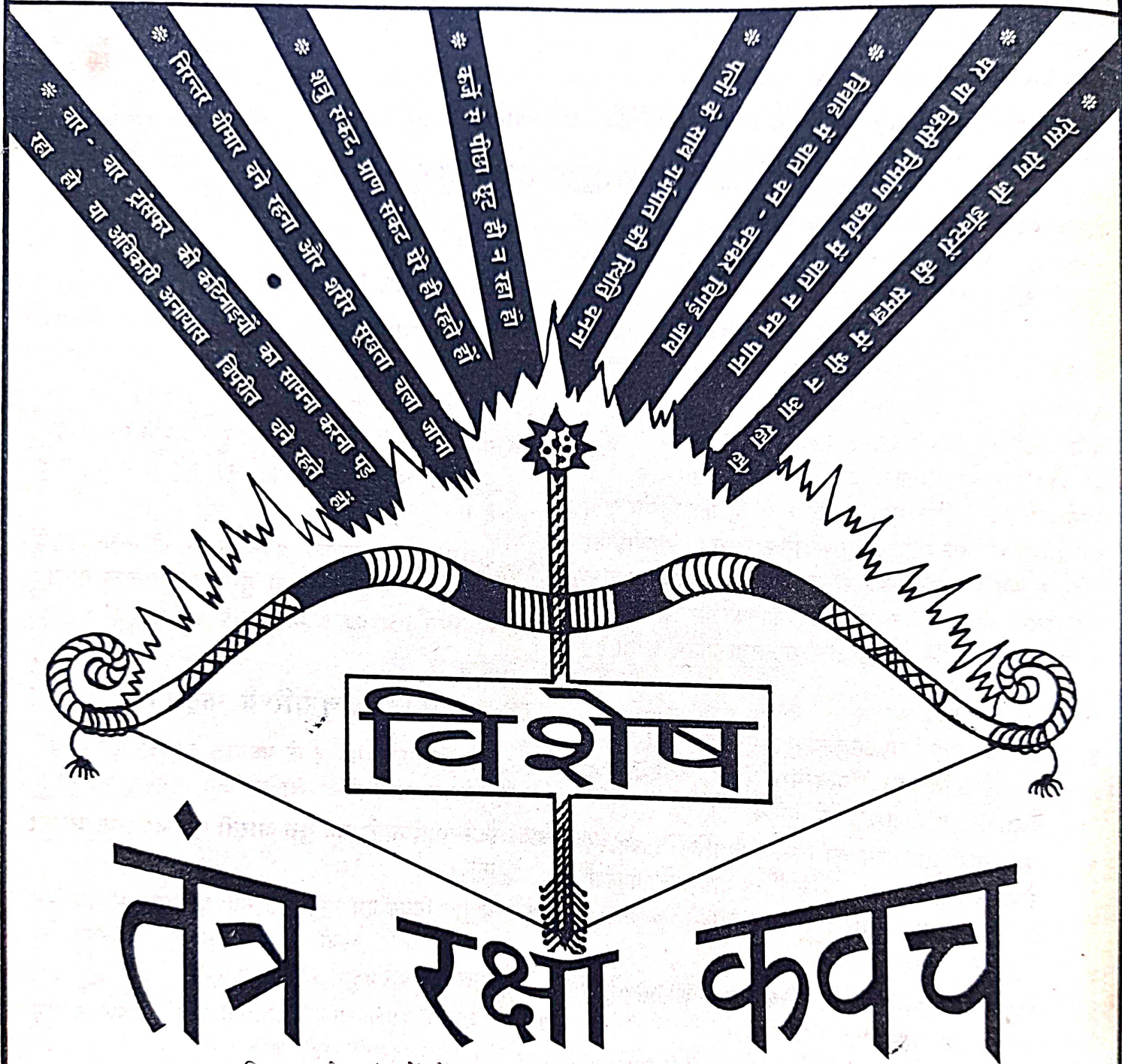
या फिर झगड़े- झंझटों में बार-बार फंस जाना, मुकदमेबाजी जैसी बातों के पीछे गम्भीर तांत्रिक प्रयोग छुपे होते हैं। **मंत्र की सैकड़ों पद्धतियां हैं. . . उनमें से किस तरीके से प्रयोग कराया गया है, उसे समाप्त कर सही उपाय देने का ही कार्य करता है।**
संस्थान के योग्य विद्वानों के निर्देशन में कर्मकाण्ड के श्रेष्ठ ब्राह्मणों द्वारा मंत्रसिद्ध रक्षा कवच के रूप में उपलब्ध कराने का लोकहितार्थ प्रयास. . .

(न्यौछावर - 11000/- मात्र) **जो वास्तव में अनुष्ठान का व्यय मात्र ही है।**

सम्पर्क

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोनः 0291-32209,फेक्सः 0291-32010
सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034, फोनः 011-7182248, फेक्सः 011-7196700
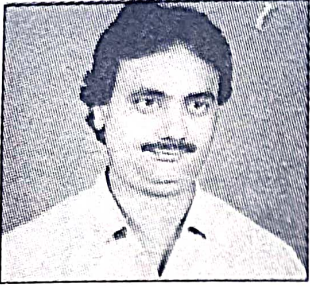
गुरु मंत्र के समक्ष काल भी नतमस्तक हुआ

परम श्रद्धेय,

गुरुवर शत-शत प्रणाम!

दिनांक ६-७-९५ को भेजे गए दोनों पत्र मन्त्रों सहित प्राप्त हुए, जिसके साथ संन्यासी रूप में आपका चित्र संलग्न था। पत्र में दिये गए निर्देशानुसार १२-७-९५ से प्रातः कालीन व रात्रि कालीन साधना शुरू की थी, कि १९-७-९५ को एक ऐसी घटना हुई जिसमें मेरा तो आपके आशीर्वाद से नया जन्म ही हुआ है।

१९-७-९५ की सायं ७.३० बजे के करीब मामूली सी बात को लेकर मेरे सबसे बड़े सगे भाई विष्णु चन्द्र ने गुस्से में मुझे मार देने की नीयत से छः गोलियां मेरे शरीर में उतार दीं, जो सभी पेट में तथा एक दाहिने हाथ में लगी है जिससे पत्र लिख रहा हूं। मुझे मरा हुआ समझकर बड़े भाई साहब फरार हो गए, मगर आधा दर्जन गोलियां खाकर भी मैं अचेत नहीं हुआ, मुझे तुरन्त अस्पताल ले जाया गया, जहाँ से डाक्टर ने जिला अस्पताल शाहजहाँपुर भेजा, मगर वहाँ चिकित्सकों ने निराशा के साथ मुझे बलरामपुर अस्पताल लखनऊ भेज दिया, क्योंकि उन्हें यह आशा नहीं थी, कि मैं लखनऊ तक पहुंच सकूंगा। मगर बेहोश न होने के कारण मैंने इस मुसीबत की घड़ी में जितना संभव हो सकता था **'ॐ परम तत्त्वाय नाराणाय गुरुभ्योः नमः''** मन्त्र जप जारी रखा। और मैं घटना के ११ घण्टे बाद लखनऊ अस्पताल पहुंच गया। पहले तो डॉक्टर मेरी हालत और एक्सरे में आई गोलियों को देखकर भर्ती करने को ही तैयार नहीं थे, मगर बाद में किसी तरह तैयार हो गए। घटना के दूसरे दिन शाम को जब मेरा ऑपरेशन करके डॉक्टरों ने मेरे पेट में लगी गोलियां निकालीं, तो दाहिने फेफड़े को फटा छोड़ बाकी सब ठीक पाया। अब मैं १५ दिन बलरामपुर अस्पताल में इलाज कराके घर लौटा हूं। अभी पूर्ण विश्राम की सलाह दी गई है। फिर भी गुरु चरणों में कोटिशः नमन करता हूं। जिनके बताये गुरु मंत्र से मेरी जान बची है।

सादर आपका शिष्य

डा० नवीन चन्द्र गुप्त (पत्रकार)

एम. ए. (इति.),पी-एच. डी.

आजीवन सदस्य भारतीय इतिहास कांग्रेस रिपोर्टर पी.एन.आई.

प्रतिनिधि– दैनिक अमर उजाला

बरेली रोड, जलालाबाद,

शाहजहाँपुर, उ०प्र० - २४२२२१

आओ! जीवन के नव निर्माण का संकल्प लें

मेरे प्रिय . . . ! सम्बोधित कर रहा हूं उन्हें, जो मेरे प्राणों से जुड़े हैं और मेरे बताये मार्ग पर तेज रफ्तार से आगे बढ़ने का प्रयास कर रहे हैं, जिनमें एक जोश है, उमंग है, चेतना है कुछ कर दिखाने की और प्रत्यक्षतः यह बता देने की, कि यदि हम चाहें तो क्या नहीं कर सकते . . .

तुम सभी, चाहे तुम पत्रिका के पाठक हो, साधक हो या शिष्य हो यदि तुमने मेरे द्वारा बताये किसी भी कार्य को किया है, किसी एक साधना को सम्पन्न किया है, तो तुमने एक बहुत बड़ा कार्य किया है। तुमने समुद्र बनने की ओर पहला कदम बढ़ाया है, समुद्र इसलिए कह रहा हूं, क्योंकि समुद्र के गर्भ में अथाह रत्नों का भण्डार है, समुद्र परिपूर्ण है प्रत्येक सम्भाव्य से।
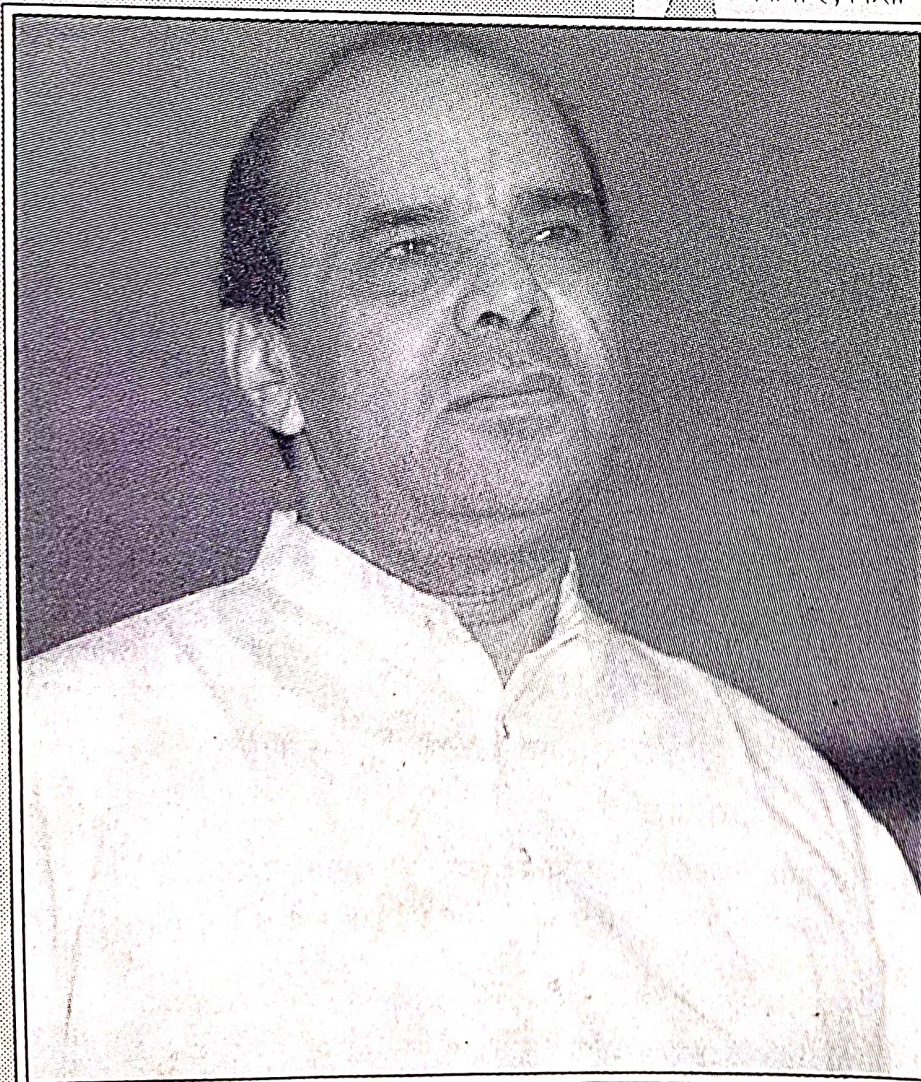
मणिभद्र प्रयोग

खेजड़ी की लकड़ी को चन्दन बनाने के लिए किसी प्रकार के विधि-विधान की आवश्यकता नहीं है; आवश्यकता है तो केवल मात्र चन्दन के संपर्क की . . . और चन्दन से सम्पर्कित खेजड़ी की लकड़ी अपनी मान्यताओं, गुण-धर्म के विपरीत चन्दन की तरह सुगन्धित हो जाती है . . . चन्दन बन जाती है। यदि चन्दन के समान सुगन्धित बनना है, तो प्रतीक्षा करनी होगी उस क्षण की और सम्पन्न करना होगा वह अद्वितीय प्रयोग, जो जीवन को प्रफुल्लित और तरोताजा बना देता है. . .

ठीक ऐसा ही तो मैं तुम सभी को बनाने वाला हूं, जो मेरी धड़कनों में बसे हैं, जिनका नाम मेरे होठों पर अंकित है। बाहर से देखने पर तो समुद्र का ऊपरी भाग ही दिखाई देता है, जो शांत है, परन्तु यदि इसके अन्दर प्रवेश किया जाय, तो एहसास होगा कि वास्तव में तुम सभी ने कितनी अमूल्य निधि प्राप्त की है, निरन्तर तुम्हारी सम्पत्ति में वृद्धि हो, इसीलिए तो पत्रिका प्रत्येक माह अपने पृष्ठों में अमूल्य रत्नों को समेटे तुम सभी तक आ पहुंचती है।

मुझे गर्व है, कि तुमने अपने जीवन के नव निर्माण के लिए खुद को प्रस्तुत कर दिया है– और अब उस स्थान पर खड़े हो, जहां सब कुछ प्राप्त कर सकते हो . . . और तुम सभी ऐसा ही कर रहे हो।

तुम सभी कई-कई जन्मों से मेरे साथ हो, क्योंकि आत्मा कभी परमात्मा से अलग नहीं रहती। जिस प्रकार वस्त्र मैले हो जाने पर, फट जाने पर उसे फेंक कर नया वस्त्र धारण कर लिया जाता है, किन्तु शरीर वही रहता है; ठीक उसी प्रकार शरीर बदल जाते हैं, किन्तु आत्मा वही रहती है। तुम्हारा मेरे साथ आत्मगत सम्बन्ध है, और तुम यह अच्छी तरह जानते हो, कि हर पल कुछ नया घटित हो, वह जीवन है।

इसके लिए यह जरूरी है, कि तुम मेरे प्राणों से निकलने वाली सुगन्ध को
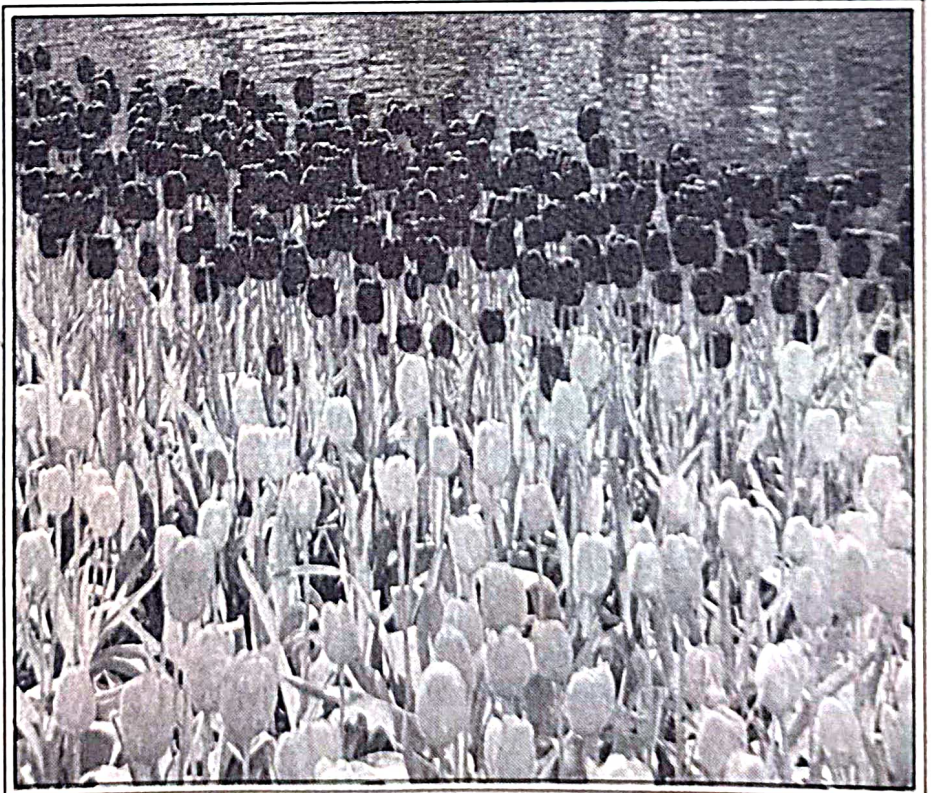
पहचानने की क्षमता प्राप्त करो और उसे प्राणों में भर लो . . . और जब ऐसा हो जाएगा, तो तुम अपने-आप को कायर, शक्तिहीन, मृत तुल्य नहीं अनुभव करोगे।

मैं तुम्हें कह रहा हूं . . . और बार-बार समझा रहा हूं, कि तुम्हें मृतवत् नहीं होना है। एक जगह ठहरे हुए पानी में जिस प्रकार बदबू-सी आ जाती है, सड़ांध भर जाती है, उसी प्रकार रुक सी गई है तुम्हारी यह दुनिया, जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के एक छोटे-से दायरे में कैद है; सबके मन में ईर्ष्या, सन्देह के विष से भरी भड़ास है, सभी आपस में लड़-मर रहे हैं . . . और तुम भी इस लड़ाई में . . . कुचल दिये जाओगे . . . केवल पैदा हुए और मर गए . . . फिर जीवन कहां रहा . . . जीवन तो जीवंतता से जीने का नाम है . . . और तुम्हें वही देने का प्रयास कर रहा हूं, हर पल, हर क्षण, अपने ज्ञान की सुगन्ध से, चेतना की सुगन्ध से, प्राणों की सुगन्ध से— मैं तुम्हें भागना नहीं सिखा रहा हूं, अपितु तुम्हें दृढ़ता से खड़े रहकर प्रत्येक विषमता को अपने अनुकूल बनाने की क्षमता प्रदान कर रहा हूं।

— और तुम ऐसा कर सकते हो, क्योंकि तुम दैविक सुगन्ध के आगार से सम्बन्धित हो, तुम साधनाओं के अजस्र भण्डार से जुड़े हुए हो, तुम प्राणश्चेतना के प्रवाह से अनुप्राणित हो— मैं उन्हें कह रहा हूं, जो मेरे आत्मांश हैं, जो कुछ भी करने के लिए तैयार हैं . . . मैं उन्हें अधूरा नहीं रहने दूंगा, भटकने नहीं दूंगा, बार-बार उन्हें रास्ता दिखाऊंगा जीवन को संवारने का, सजाने का। मैं उन्हें सूर्यवत् ज्योतिवान बनाना चाहता हूं, जिसके प्रकाश में जीवन की घनघोर कालिमा युक्त रात्रि को दूर कर तुम

गुरु चरणों में बैठने मात्र से सारी सिद्धियां स्वतः ही प्राप्त हो जायेंगी— आपने सोचा. . . यह कौन सी बड़ी बात है, आज ही बैठ जाते हैं . . . लेकिन आपने जितना सहज समझ लिया, यह क्रिया उतनी आसान हैं नहीं . . . आपको अपने गुण-धर्म और मान्यताओं के विपरीत चलना होगा अपने ''स्व'' का विसर्जन करना होगा। — विसर्जित कर दिया, ऐसा कहने से काम नहीं चलेगा, करना पड़ेगा . . . और विसर्जन की क्रिया है— गुरु की प्रत्येक आज्ञा का पालन करना।
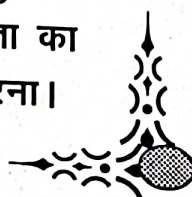
अपने और पूरे समाज के प्रत्येक व्यक्ति के जीवन को उज्ज्वल और प्रकाशित कर सको।

तुम्हें कौन समझायेगा? कौन तुम्हें तुम्हारे पथ का ज्ञान देगा?

पथ प्रशस्त तो केवल 'सद्गुरु' ही कर सकता है, शेष तो पथ भ्रष्ट करने वाले होते हैं . . . तुम यह भी अच्छी तरह जानते हो, कि किसी मांस के पुतले का नाम 'गुरु' नहीं है, गुरु तो ज्ञान का वह अगाध सागर है, जो नव निर्माण की शक्ति से परिचित कराता है; क्योंकि वह शक्ति तो तुम्हारे भीतर ही है, जिसे अन्धकारवश तुम देख पाने में असमर्थ हो, तुम्हारे अन्दर व्याप्त अन्धकार को समाप्त करने के लिए ही तो गुरु 'साधना' रूपी आलोक को प्रदान करते हैं, जिसके प्रकाश में तुम अपनी शक्ति को पहिचान सको।

साधना वह ज्योति है, जो तुम्हारे जीवन को जगमगा देती है। साधना ही वह पुष्प है, जो अपनी मदमाती सुगन्ध से तुम्हारे जीवन को आनन्दमय बना देती है। साधना ही वह शस्त्र है, जिससे जीवन के हर क्षेत्र में विजयी हुआ जा सकता है और नव निर्माण किया जा सकता है अपने जीवन का।

— और तभी तो इस बार प्रदान कर रहा हूं साधना का एक अकाट्य शस्त्र, जिसके द्वारा तुम सभी परिस्थितियों से मुक्त होकर अपने जीवन का नव निर्माण कर सकोगे। इस साधना को सम्पन्न करने हेतु प्रत्येक प्रतीक्षारत रहता ही है, कि वह दिव्य अवसर प्राप्त हो, जिससे इस साधना को सम्पन्न किया जा सके।

यह साधना सम्पन्न की जाती है नव वर्ष के प्रथम दिन . . . जब अभिनव पल्लवों का सृजन होता है, कुसुम-कलिकाओं का प्रस्फुटन होता

है, जो प्रारम्भ है नव वर्ष का . . . प्रतीक्षारत है प्रत्येक उस क्षण के लिए, जो पूरे जीवन को परिवर्तित करने की क्षमता से युक्त है . . . जिस क्षण विशेष में सम्पन्न किया जाता है "मणिभद्र प्रयोग", जो अपने पूर्ण तेजस्विता युक्त प्रवाह से जीवन को प्रफुल्लित और तरोताजा बना देता है . . .

"मणिभद्र प्रयोग" नव जीवन की सृजन शक्ति है, जिसे स्थापित करना है अपने हृदय में, प्राणों में, तभी तो मृतवत् अवस्था से मुक्ति सम्भव हो सकेगी . . . मैं तुम्हारे दुष्कर्मों को मृत्यु प्रदान कर रहा हूं इस प्रयोग के माध्यम से, जिससे तुम अपना नव निर्माण करने में सक्षम हो सको।

गणेश वटाणी

प्रयोग विधान :

★ नव वर्ष के प्रथम दिन अर्थात् दिनांक १.१.९६ को सम्पन्न की जाने वाली साधना है यह।

★ इस साधना को सम्पन्न करने के लिए आवश्यकता पड़ेगी **"मणिभद्र यंत्र"** तथा **"नवमणि माला"** की।

★ प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में आप उठें और शय्या पर बैठे हुए ही हाथ जोड़कर गुरुदेव को नमन करें तथा उनसे नव जीवन के लिए मणिभद्र प्रयोग सम्पन्न करने हेतु आशीर्वाद की आकांक्षा व्यक्त करें।

तत्पश्चात् बिस्तर से उठ कर अपने घर के सभी बड़े सदस्यों को प्रणाम करें। स्नानादि से निवृत्त होकर पीली धोती तथा गुरुपीताम्बर धारण करें।

★ साधना कक्ष में **पीले आसन** पर **पूर्व दिशा** की ओर मुंह करके बैठें और अपने सामने किसी पात्र में कुंकुम से स्वस्तिक बना कर यंत्र को स्थापित करें। यंत्र के ऊपर ही माला को रखें, फिर यंत्र व माला का पुष्प, अक्षत, धूप एवं दीप से पूजन करें।

★ पूजन के पश्चात् निम्न मंत्र का नवमणि माला से **सात माला मंत्र-जप** सम्पन्न करें –

मंत्र

।। ॐ मणिभद्राय नवसृत्यै ॐ नमः।।

★ मंत्र-जप के पश्चात् माला को पुनः यंत्र पर रखें तथा पुष्प चढ़ाकर अपने जीवन के नव निर्माण की प्रार्थना करें, जिससे कि आपके जीवन में पूरे वर्ष पर्यन्त धन-धान्य, ऐश्वर्य-प्रभुता, राज्य सुख, गृहस्थ सुख, रोग रहित शरीर एवं मानसिक शांति बनी रहे।

★ यंत्र व माला को किसी पीले कपड़े में लपेट कर नदी, या तालाब में विसर्जित कर दें।

★ इस प्रयोग को सम्पन्न करने के लिए किसी विशेष पूजा-विधान की आवश्यकता नहीं है।

छोटा-सा दिखने वाला यह प्रयोग अपने अन्दर इतनी तेजस्विता समेटे हुए है, कि जिससे साधक का पूरा जीवन ज्योतिर्मय हो उठता है।

साधना-सामग्री (यंत्र, माला)
न्यौछावर – २६० रु.

मानें या ना मानें पर यह सच है . . .

संसार का सर्वाधिक विस्फोटक मंत्र

सम्पूर्ण विश्व में सर्वाधिक क्षमता से युक्त एवं सभी तीव्र शक्तियों को अपने में समाहित किए हुए यदि कोई मंत्र है, तो वह है ''नवार्ण मंत्र''।

शक्ति की साधना भारतीय संस्कृति की प्राण है। वैदिक काल से ही इस मंत्र की शक्ति सर्वविदित एवं प्रतिष्ठित है। प्रत्येक सनातन धर्मावलम्बी को इस बात पर गौरव है, कि उसे नवार्ण मंत्र के रूप में अमोघ मंत्र प्राप्त है। नवार्ण मंत्र का जप करने वाले साधक के शरीर में परमाणु बम के समान विस्फोटक शक्ति का संग्रह हो जाता है।

नवार्ण मंत्र का यदि नित्य जप किया जाय, तो इस मंत्र शक्ति के द्वारा प्राप्त शक्ति से ब्रह्म का दर्शन प्राप्त करने के साथ ही साथ साधक को लौकिक व परालौकिक समस्त सुखों की भी प्राप्ति होती है। इस मंत्र का जप प्रत्येक व्यक्ति को करना चाहिए। इसकी विस्फोटक शक्ति को प्राप्त करने की साधना निम्न है–

''शक्ति यंत्र'' प्राप्त कर लें। रविवार को प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में उठकर, स्नानादि से निवृत्त होकर, पवित्र आसन पर श्वेत वस्त्र धारण कर बैठें। पवित्रीकरण, शिखावन्धन, न्यास, प्राणायाम आदि नित्य क्रियाओं को सम्पन्न करें। जगत्जननी जगदम्बा का ध्यान कर २४ बार मंत्र का उच्चारण करें–

मंत्र

।। ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ।।

अगले रविवार तक यही क्रम बनाए रखें (या अपनी इच्छानुसार आप इस क्रम को आजीवन भी नियमित बनाए रख सकते हैं) यंत्र को अपने पूजा कक्ष में स्थापित रखें और नित्य २४ बार नवार्ण मंत्र का जप करें। इस प्रकार आपके शरीर में अदम्य साहस का संचार अनुभव होगा और कोई भी कार्य आपके लिए असम्भव नहीं रह जायेगा।

न्यौछावर (शक्ति यंत्र) ८५ रु.

बड़े से बड़ा शत्रु भी आपका बाल बांका नहीं कर सकता

पग-पग पर आज व्यक्ति को अपने शत्रु खड़े मिलते ही हैं किसी न किसी रूप में और व्यक्ति अपनी सारी बुद्धि उनसे बचने के लिए उपाय ढूंढने में ही लगा देता है, फिर भी कोई न कोई शत्रु कभी न कभी व्यक्ति पर प्रभावी हो ही जाता है।

अपने-आप को ज्यादा चिन्तित न करें, क्योंकि आपकी चिन्ता के निवारण के लिए ही तो पत्रिका अपने इस अमूल्य पृष्ठ पर लायी है यह प्रबल शक्ति साधना– **''धूमावती शक्ति प्रयोग''** जिसे सम्पन्न करने पर बड़े से बड़ा शत्रु भी आपका बाल बांका नहीं कर सकता है। दस महाविद्या क्रम में विशिष्ट स्थान प्राप्त धूमावती का यह प्रयोग अत्यधिक प्रबल तथा ज्वलनशील, दाहक प्रयोग माना गया है, जो साधक के किसी भी शत्रु (चाहे वह राज्य, गृह या किसी भी क्षेत्र से सम्बन्धित हो) का नाश कर साधक को निर्भयता पूर्वक विचरण करने का साहस देता है।

''धूमावती गुटिका'' को जल से धोकर शुद्ध घी लगा

दें और काले तिलों की ढेरी पर स्थापित करें। इस ढेरी की दाहिनी ओर एक नींबू रखें, तत्पश्चात् निम्न मंत्र का ६५ बार उच्चारण करें—

मंत्र

।। ॐ धूं शत्रून् जहि जहि धूं ॐ फट् ।।

मंत्र-जप के बाद नींबू को काट दें और गुटिका को नींबू के बीच में रख कर मौली से लपेट दें। फिर उसी मंत्र का ६५ बार उच्चारण करें। यह रात्रिकालीन साधना है, दिशा दक्षिण हो, वस्त्र गहरे नीले रंग के धारण करें। आसन भी नीला ही निर्धारित है। उसी रात्रि में गुटिका और नींबू को दूर कहीं जन-शून्य स्थान पर फेंक आयें अथवा नदी में विसर्जित कर दें। प्रयोग प्रारम्भ करने से पूर्व हाथ में जल लेकर संकल्प भरें और धूमावती से शत्रु से रक्षा की प्रार्थना करें। शत्रु भय समाप्त होने तक नित्य ५ बार मंत्र-जप करें।

न्यौछावर (धूमावती गुटिका) ८० रु.

स्वस्थ और छरहरा बने रहना है तो खाइये ... डटकर खाइये

प्रकृति ने शरीर का निर्माण किया तो साथ ही साथ इस शरीर को पूर्ण स्वस्थ बनाये रखने के लिए अनेक प्रकार की वनस्पतियों का निर्माण भी किया। धीरे-धीरे मनुष्य ने अपने विकास क्रम में इन खाद्य पदार्थों को अनेक प्रकार से पका कर खाना शुरू किया, लेकिन अपने शरीर पर ध्यान न देने के कारण अधिकांश लोग मोटापे का शिकार हो गए, तो कुछ लोगों को अनेक प्रकार के घातक रोगों ने अपने पंजे में जकड़ लिया। फलस्वरूप चिकित्सकों ने व्यक्ति के इच्छानुसार खाने-पीने पर रोक लगा दी और आज लोग खाने-पीने से डरने लगे हैं।

डरने की बात नहीं है और न ही चिन्तित होने का समय है; यदि थोड़ा-सा समय अपने शरीर के स्वास्थ्य के लिए निकाल लें तो। आपको सिर्फ इतना ही करना है, कि सुबह-शाम दोनों समय अथवा आप अत्यधिक व्यस्त हैं, तो सुबह-सुबह ही खाली पेट प्राणायाम करें। प्राणायाम करने के लिए आप पद्मासन में बैठ जायें, पद्मासन में न बैठ सकें, तो सुखासन में बैठ जायें। सीधा बैठें, दाहिने हाथ के अंगूठे से नाक के दाहिने छिद्र को बंद करें और बायीं नाक से भरपूर सांस लें, अनामिका और कनिष्ठिका उंगली से बायें नाक के छिद्र को भी बंद कर दें। श्वास को जितनी देर रोक सकते हैं, रोकें; फिर नाक के दाहिने छिद्र से श्वास को बाहर निकाल दें। इसे दस से पन्द्रह बार करें। फिर इस क्रिया को दूसरे छिद्र से करें, यही प्राणायाम क्रिया है। फिर शान्तचित्त से बैठ जायें और निम्न मंत्र का "त्रिषु चेटक" के समक्ष पांच मिनट तक मानसिक जप करें—

मंत्र

।। श्रीं सौन्दर्य सिद्धयै श्रीं।।

नियमित रूप से प्राणायाम का प्रयोग तथा मंत्र के जप से आपके ऊपर भोजन का दुष्प्रभाव व्याप्त नहीं होगा और आप निश्चिन्त होकर, डटकर भोजन कर सकेंगे। तीन दिन बाद त्रिषु चेटक को जन शून्य स्थान में डाल दें।

न्यौछावर (त्रिपु चेटक) ४५ रु.

सम्पूर्ण शरीर का कायाकल्प करिये

— क्या आप अपने-आप को युवा कह सकते हैं?

— हां! तो कैसे?

—क्योंकि शरीर की वृद्धि के अनुसार आपका शरीर युवावस्था को प्राप्त हो गया है, किन्तु क्या आप युवा शक्ति से भरपूर हैं?

— इस प्रश्न का उत्तर जानना है, तो पहले युवा शक्ति को पहिचानें, क्योंकि यौवनावस्था में प्रत्येक के अन्दर इतनी शक्ति होनी चाहिए, कि वह अपने सीने के आघात से पर्वत को भी खिसका सके, अपनी भुजाओं के बल पर विशाल शिलाखण्ड को भी उठा सके।

ऐसा लिखना अतिशयोक्ति नहीं है, क्योंकि यौवनवान व्यक्ति में शारीरिक शक्ति तो कूट-कूट कर भरी होती ही है, वह किसी भी चुनौती भरे कार्य को करना सहर्ष स्वीकार कर लेता है।

— क्या आप ऐसा कर सकते हैं?

— यदि 'हां', तो आप निश्चय ही पूर्ण यौवन शक्ति से भरपूर हैं।

— यदि 'नहीं', तो आपके लिए आवश्यक है, कि आप अपने शरीर का कायाकल्प करें। कायाकल्प की क्रिया किसी भी उम्र का व्यक्ति सम्पन्न कर सकता है, क्योंकि मानव को यह भगवान की देन है, कि जब तक व्यक्ति स्वयं न चाहे, बूढ़ा नहीं हो सकता और पूर्ण यौवन शक्ति से युक्त बना रह सकता है।

मुझे मालूम है, कि आप इन बातों से सहमत हैं और आपने अपना कायाकल्प करने का निश्चय कर लिया है। अतः आप इस क्रिया के लिए आवश्यक **''कायाकल्प गुटिका''** को अपने सामने गुलाब के पुष्पों पर स्थापित करें और सफेद चन्दन चढ़ा कर पूजन करें। अपने ललाट पर भी चन्दन से तिलक करें। यहां दिये गये मंत्र का २१ बार उच्चारण करें और गुलाब के पुष्प की एक पंखुड़ी खा लें तथा गुटिका व गुलाब के पुष्प को नदी या तालाब में विसर्जित कर दें।

मंत्र

।। क्लीं ॐ क्लीं सर्व काम्यै क्लीं ।।

यह पूजन सिर्फ पहले ही दिन करना है। पूजन के बाद आसन पर सीधे खड़े हो जायें और निम्न आठ योगासनों को करें –

१. प्रणाम की मुद्रा में दोनों हाथ जोड़ कर सीने के मध्य भाग पर रखें तथा हाथ से सीने पर दबाव देते हुए पांच बार मंत्र का जप करें।
२. दोनों हाथों को सीधा ऊपर उठायें और पीछे की ओर झुकें, इस अवस्था में भी पांच बार मंत्र का जप करें।
३. सीधा खड़े होकर दोनों हाथों से (आगे झुकते हुए) अपने पैर की एड़ी पकड़ें व नाक को घुटनों से स्पर्श करायें, इस अवस्था में पांच बार मंत्र का उच्चारण करें।
४. झुके हुए ही दोनों हाथों की हथेलियों को जमीन पर रखें और बायां पैर पीछे ले जायें फिर दाहिने पैर को मोड़कर आगे रखें, सिर और सीना पीछे की ओर तानें। इस अवस्था में भी पांच बार मंत्र का जप करें।
५. दाहिना पैर भी पीछे ले जायें और पर्वत के आकार में कमर को ऊपर की ओर तानें। पांच बार मंत्रोच्चारण करें।
६. दोनों पैर पीछे फैलाते हुए मस्तक, सीना व दोनों घुटनों को जमीन से स्पर्श करायें। पेट का भाग जमीन से स्पर्श न करें। इस स्थिति में भी पांच बार मंत्र का उच्चारण करें।
७. अपने धड़ को उठाते हुए (सांप की तरह) सिर को पीछे की ओर ले जायें, मंत्र का पांच बार जप करें।
८. दाहिना पैर आगे लायें, फिर बायां पैर भी आगे लायें और उपरोक्त आसनों को विपरीत क्रम से करते हुए (अर्थात् पहले आसन न० ७, फिर ६, इसी क्रम से करते हुए) सीधे खड़े हो जायें।

यह पूरी क्रिया करने में शुरू में बीस-पच्चीस मिनट लग सकते हैं, लेकिन अभ्यास हो जाने के बाद आप मात्र दस मिनट में इसे कर लेंगे। गुटिका के सामने जिस मंत्र का जप किया है, उसी का उच्चारण प्रत्येक आसन की स्थिति में करना है। नियमित अभ्यास से आप अपना कायाकल्प करने में सक्षम हो जायेंगे।

न्यौछावर (कायाकल्प गुटिका) ७५ रु.

चिन्तित क्यों हो रहे हैं . . . अपनी ज्वलंत समस्या का अचूक हल प्राप्त करिये

कभी-कभी छोटी-सी समस्या का भी जब हल नहीं सूझता, तो वह ज्वलंत समस्या बन जाती है और व्यक्ति चिन्तित बना रहता है . . . जैसा कि सर्वविदित है – चिन्ता समस्त रोगों का कारण है एवं कभी-कभी तो चिता तक पहुंचाने का मार्ग खोल देती है; परन्तु आपको चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि छोटी-छोटी समस्याओं का हल तो आप स्वप्न में भी ज्ञात कर सकते हैं।

कुछ लोग कहते हैं, कि स्वप्न पर भरोसा नहीं करना चाहिए, क्योंकि सपने सच्चे नहीं होते, लेकिन अधिकांश लोगों का यह मानना है, कि स्वप्न द्वारा कभी-कभी बड़ी-बड़ी समस्याओं का भी हल प्राप्त हो जाता है।

किसी प्रकार के तर्क-कुतर्क में उलझने से तो कहीं ज्यादा अच्छा है, कि आप खुद अपने सपने में अपनी समस्या का हल प्राप्त करने का प्रयास करें और हल मिल जाय तो भरोसा कर लें, कि सपनों की दुनिया काल्पनिक नहीं होती है।

इसके लिए आपको मात्र इतना ही करना है, कि **''स्वप्नेश्वरी त्रिधा''** को रात दस बजे, बिस्तर में बैठे हुए अपने हाथ की अंजुरी में रखें और अपलक देखते हुए पांच मिनट तक मंत्रोच्चारण करें –

मंत्र

।। श्रीं ह्रीं श्रीं सर्व विद्महे श्रीं ह्रीं नमः ।।

मंत्रोच्चारण के बाद अपनी समस्या बोलें और हल प्राप्त करने की कामना कर स्वप्नेश्वरी त्रिधा को तकिये के नीचे रखकर सो जायें। यह क्रम तीन दिन तक करें, फिर स्वप्नेश्वरी त्रिधा को जमीन में गड्ढा खोद कर दबा दें और उसके ऊपर एक पौधा लगा दें। भविष्य में आपको जब

भी किसी समस्या का हल प्राप्त करना हो, तो इसी मंत्र का पांच मिनट तक बिस्तर पर ही जप कर सो जायें, हल प्राप्त होगा।

न्यौछावर (स्वप्नेश्वरी त्रिधा) ६० रु.

हमेशा के लिए धूम्रपान से छुटकारा प्राप्त करिये . . .

कोई भी व्यक्ति पहले तो शौकिया सिगरेट पीना शुरू करता है, लेकिन बाद में वह उसकी आदत् बन जाती है, फिर तो बहुत मुश्किल हो जाता है उससे धूम्रपान की आदत छुड़ाना। यदि कभी-कभार कोई व्यक्ति सिगरेट पी ले, तो वह भी उसके लिए नुकसानदायक होता ही है, लेकिन दिन में कई-कई बार सिगरेट पीना या परेशानी की अवस्था में सिगरेट फूंकते रहना न सिर्फ उस व्यक्ति के लिए घातक है, बल्कि उस वातावरण में सांस लेने वाले छोटे-छोटे बच्चों तथा अन्य सभी लोगों के लिए भी घातक हैं।

धूम्रपान से फेफड़े खराब होने लगते हैं, मुंह का कैंसर हो जाता है, हृदय पर बुरा असर पड़ता है और जब डॉक्टर इसे जानलेवा घोषित कर देता है, तो ऐसी स्थिति में सिगरेट छोड़ना उसके लिए बहुत दुःखदायी प्रक्रिया हो जाती है, क्योंकि उसे अपना जीवन एक प्रकार से सिगरेट पर ही आश्रित-सा लगता है।

ऐसे व्यक्तियों के लिए जो इससे ग्रस्त हैं या जो इससे ग्रस्त हो रहे हैं, उन सभी को धूम्रपान से छुटकारा दिलाने के लिए ही तो यहां इस प्रयोग को दिया जा रहा है, जिसके द्वारा वे अपनी इस बुरी लत से छुटकारा प्राप्त कर सकें।

एक पाव सूखे आंवले को लेकर, उन्हें धोकर साफ कर लें तथा नमक लगा कर धूप में सुखा लें। फिर इन आंवलों को किसी बर्तन में रखकर इनके सामने निम्न मंत्र की **''साफल्य माला''** से २१ माला मंत्र-जप करें—

मंत्र

।। ऐं श्रीं ऐं सर्वदूषणाय फट्।।

इसके बाद जब भी सिगरेट की तलब लगे, तो आंवले का एक टुकड़ा मुंह में रख कर मन ही मन मंत्र का २१ बार उच्चारण करें। अगले दिन माला को नदी में प्रवाहित कर दें।

न्यौछावर (साफल्य माला) १२० रु.

जानलेवा ब्लड प्रेशर को नियन्त्रित करिये

यदि ब्लड प्रेशर उच्च हो तो, यह जानलेवा होता है। उच्च रक्तचाप पर नियन्त्रण करने के लिए नमक छोड़ना पड़ता है और तैलीय पदार्थों का सेवन वर्जित हो जाता है।

रक्तचाप जब बहुत अधिक बढ़ जाता है, तो अधिक दबाव के कारण दिमाग की नाड़ियां जो कि बहुत ही सूक्ष्म होती हैं, फट जाती हैं, जिससे व्यक्ति की मृत्यु सम्भावित हो जाती है।

हाई ब्लड प्रेशर घातक होता ही है। अतः अपने चिकित्सक के परामर्श के अनुसार दवा का सेवन करें और दिनचर्या भी उसी के अनुसार निर्धारित करें। लेकिन इसके साथ ही साथ आप **''रुद्राक्ष माला''** से नित्य एक माला निम्न मंत्र का जप करें, फिर माला को गले में पहिन लें—

मंत्र

।। ह्रीं ॐ ह्रीं फट्।।

पांच रुद्राक्ष के दाने रात्रि में किसी तांबे के पात्र में जल भर कर डूबो दें और सुबह उठते ही उस जल को पी लें। ऐसा प्रतिदिन करें, तो इस मंत्र के प्रयोग से शीघ्र ही आपका ब्लड प्रेशर नियन्त्रित हो जायेगा और कुछ दिनों के पश्चात् ही दवा भी छूट जायेगी।

न्यौछावर (रुद्राक्ष की माला) ३०० रु.

पांच रुद्राक्ष २५ रु.

वशीकरण का यह भी एक प्रयोग है . . . आजमा कर तो देखिये

आप किसी से भी बात करते हैं, तो बहुत ही शिष्ट भाषा का प्रयोग कर उसे अपनी बात मानने के लिए सहमत कर लेते हैं। जानते हैं आपने क्या किया? आपने अपने शब्दों में एक ऐसा मीठा प्रभाव पैदा किया, जिससे वह आपकी बात मान बैठा। यही तो वशीकरण है; लेकिन कभी-कभी ऐसा भी होता है, कि आप कितना ही मीठा क्यों न बोलें, किन्तु सामने वाला प्रभावित होता ही नहीं, उलटा वह और नाराज दिखता है और बना हुआ कार्य भी बिगड़-सा जाता है।

— ऐसी विषम परिस्थिति में फिर कुछ समझ में

नहीं आता कि क्या करें, क्या नहीं करें? परेशान मत होइये, क्योंकि इस बार वशीकरण का जो प्रयोग यहां दिया जा रहा है, यह लघु होते हुए भी तीव्र प्रभावकारी है। इसका जिस किसी भी साधक ने प्रयोग किया है, उसने निश्चित रूप से सफलता पायी है। आप भी इस प्रयोग को आजमा कर देखिये—

रविवार को प्रातःकाल स्नान कर सफेद धोती पहिनें और दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके काले ऊनी आसन पर बैठ जायें। अपने सामने बाजोट पर सात खड़ी लाइनें तथा सात आड़ी लाइनें खींच कर प्रत्येक कोष्ठक में खाने की कोई चीज जैसे— बादाम, अखरोट, लवंग या अन्य कोई पदार्थ थोड़ा-थोड़ा रखें। इसके सामने ही किसी पात्र में **''वशीकरण गुटिका''** स्थापित करें, उस पर सात लवंग चढ़ायें। निम्न मंत्र का सौ बार उच्चारण करें—

मंत्र

।। ॐ ह्रीं सर्व वशित्वसिद्धये ह्रीं नमः।।

मंत्र-जप के बाद गुटिका पर चढ़ाये गए लवंग को खूब चबा-चबा कर खुद खा लें और कोष्ठक में जो पदार्थ रखा है, उसे किसी डिब्बे में रख दें। जिसको वश में करना हो, उसे कोई एक चीज खिला दें। वह आपकी बात से सहमत हो जायेगा। हां, इतना ध्यान अवश्य रखें, कि आपकी इस क्रिया का किसी को पता न चले। यदि इस प्रयोग को आप किसी गलत काम के लिए प्रयोग करेंगे, तो यह प्रयोग निष्फल हो जायेगा।

न्यौछावर (वशीकरण गुटिका) ८० रु.

क्या?? आपको नींद नहीं आ रही है. . .

जब मन किसी कारणवश उद्विग्न हो जाता है, तब खाना-पीना, किसी से बात करना, कुछ भी अच्छा नहीं लगता, यहां तक कि नींद लेने की भी इच्छा नहीं होती . . . और इच्छा हो भी तो कैसे, क्योंकि नींद आती ही नहीं। नींद तो तब आती है, जब मन प्रसन्न हो, प्रफुल्लित हो; फिर बिस्तर पर जाते ही शांत दिमाग को नींद का आभास होने लगता है और व्यक्ति निद्रामग्न हो जाता है।

भरपूर नींद लेने के लिए आवश्यक है, कि बिस्तर पर लेटते समय चिन्ता, क्रोध या आवेशात्मक विचार को प्रश्रय न मिले, अपितु प्रेम, माधुर्य और शांत विचारों का प्रादुर्भाव हो, क्योंकि दिन भर काम की भाग-दौड़ में शरीर के साथ ही साथ मस्तिष्क भी थकान महसूस करने लगता है और तरोताजा होने के लिए विश्राम की आवश्यकता अनुभव करता है।

अतः आप प्रफुल्लता व ताजगी के साथ काम कर सकें, इसलिए तो नींद लेना चाहते हैं, लेकिन आज के व्यस्ततम जीवन-क्रम में ऐसा सम्भव ही कहां है, कि निश्चिन्ततापूर्वक नींद ली जा सके . . . जब ऐसा करना सहज नहीं होता, तो स्वाभाविक है कि आप थके हुए, सुस्त बने रहेंगे और दिन-प्रतिदिन आपके कार्य करने की शक्ति क्षीण होती जायेगी।

थकान और सुस्ती के कारण आप नींद लेने के लिए नींद की गोलियां लेना शुरू कर देते हैं, लेकिन दवायें प्राकृतिक कार्य को यथार्थतः कितना पूरा कर सकेंगी।

यदि आप नींद की समस्या से ग्रस्त हैं, तो यह छोटा-सा प्रयोग अपना कर देखें, आप निश्चित रूप से बिना किसी दवा के भरपूर नींद ले सकेंगे।

आपको मात्र इतना ही करना है, कि **''प्रियंकु माला''** प्राप्त कर लें और रात को बिस्तर पर सोने जाने से पहले हाथ-पैर हल्के गर्म (गुनगुने) पानी से धोकर तौलिये से पोंछ लें। चेहरे को भी धोयें। दिन भर के पहिने हुए कपड़े उतार दें और ढीले-ढाले वस्त्र पहिनें, जो स्वच्छता से धुले हुए हों। बिस्तर पर बैठ जायें और प्रियंकु माला को अपनी आंखों से स्पर्श करा कर पहले बैठे-बैठे ही पांच बार निम्न मंत्र को बोलें—

मंत्र

।। ह्रीं ऐं श्रीं।।

फिर बिस्तर पर लेट जायें और जिस मुद्रा में आपके लिए लेटना सुखदायक हो, उसी मुद्रा में लेटें। किन्तु धीरे-धीरे अभ्यास करें, कि आप पीठ के बल सीधा लेटें। हाथ-पैरों को ढीला छोड़ दें। माला को दाहिने हाथ में ले कर एक-एक मनके को मंत्र बोलते हुए खिसकाते रहें। इस प्रक्रिया में माला या मंत्र की संख्या निर्धारित नहीं है। हां, इतना अवश्य है कि आप अपना ध्यान मंत्र और माला पर केन्द्रित रखें तथा आंख बंद कर मंत्र के अक्षरों को देखने का प्रयास करें। ऐसा करने के लिए अपने दिमाग से जबरदस्ती न करें। सहज रूप में यह क्रिया होने दें। थोड़ी देर बाद ही आप नींद के आगोश में चले जायेंगे और सुबह जब आप उठेंगे, तो अपने-आप को पूरी तरह तरोताजा और चुस्त अनुभव करेंगे।

न्यौछावर (प्रियंकु माला) १५० रु.
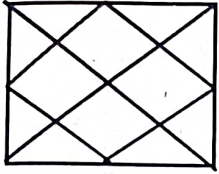
ज्योतिष प्रश्नोत्तर

प्रश्न–व्यवसाय कौन-सा या नौकरी या राजनीति, आखिर क्या, कैसा?
उत्तर–आपके लिए व्यवसाय तथा नौकरी का क्षेत्र उपयुक्त रहेगा। व्यवसाय धातु से सम्बन्धित रहेगा।
गजानन शर्मा, बिलासपुर

प्रश्न–भूगर्भ में गड़ा धन कब तक मिलेगा?
उत्तर–ज्योतिषीय दृष्टि से योग नहीं है, परन्तु **''भूगर्भ सिद्धि दीक्षा''** प्राप्त कर साधना करें, तो सफलता मिलेगी।
हरीश देवनाथ, चंद्रपुर (महा.)

प्रश्न–मुझे अपने कर्जों से मुक्ति कब मिलेगी?
उत्तर–**''ऋणहर्ता गणपति प्रयोग''** करें, शीघ्र सफलता मिलेगी।
सुमन कुमार अग्रवाल, चंदौसी

प्रश्न–संतान प्राप्ति कब तक?
उत्तर–योग क्षीण, पुत्र प्राप्ति दीक्षा प्राप्त करें। इच्छा पूर्ण होगी।
भंवरसिंह भाटी, जयपुर

प्रश्न–क्या मैं तांत्रिक बन सकूंगा?
उत्तर–हां! आप साधनाएं सम्पन्न करें। **''तांत्रोक्त शिव साधना''** अनुकूल एवं सफलतादायक।
भागवत नायकर, गांधीनगर

प्रश्न–शिक्षा में सफलता प्राप्त होगी या नहीं?
उत्तर– प्रयास करें, सफलता मिलेगी। **''सरस्वती साधना''** कर अनुकूलता प्राप्त करें।
चिंताराम वर्मा, दुर्ग

प्रश्न–मुझे सरकारी नौकरी कब मिलेगी?
उत्तर– सरकारी नौकरी के योग क्षीण। व्यवसाय अथवा प्राईवेट नौकरी के लिए भी प्रयास करें।
लक्ष्मी, विट्ठल नगर, सागर

प्रश्न–सफलता किस साधना में?
उत्तर– आप **''सर्व सिद्धि प्रदायक गणपति साधना''** सम्पन्न करें।
भगवान लाल भार्गव, छबड़ा

प्रश्न–मानसिक क्लेश कब तक समाप्त होगा?
उत्तर– शीघ्र समाप्त होगा, मूंगा धारण करें।
अरुण कुमार मित्तल, देहरादून

प्रश्न–मैं विदेश कब तक जाऊंगा?
उत्तर– निकट भविष्य में योग क्षीण।
उदय सचदेवा, देवपुरी, मेरठ

प्रश्न–व्यवसायिक उद्देश्य से 'मारुति' या 'एम्बेडसर' बैंक से फाइनेन्स करवा कर लाभप्रद सिद्ध होगा?
उत्तर– हां।
जसवंत सिंह चौहान, भोपाल

प्रश्न–नौकरी सरकारी या अर्द्धसरकारी मिलेगी? कौन-सा रत्न धारण करूं?
उत्तर– सरकारी नौकरी के योग हैं, आप नीलम धारण कर **''शनि साधना''** सम्पन्न करें।
शशीकांत तिवारी, इलाहाबाद

प्रश्न–मुझे शारीरिक स्वास्थ्य कब प्राप्त होगा?
उत्तर– **''पूर्ण रोग मुक्ति दीक्षा''** प्राप्त करें, शीघ्र लाभ होगा।
हरीश सैनी, विकास नगर

प्रश्न–मैं बहुत दुःखी हूं, कृपया उपाय बतायें।
उत्तर– **''श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः''** का नित्य आधा घंटा जप करें।
प्रेमचंद शर्मा छीपीटोला, आगरा

प्रश्न–लक्ष्मी, यक्षिणी या अप्सरा साधना में से शीघ्र सिद्धिप्रद कौन-सी साधना?
उत्तर– यक्षिणी साधना।
राजकुमार, झालावाड़ा

प्रश्न–राजनैतिक भविष्य?
उत्तर– अच्छा रहेगा।
सुरेन्द्र शर्मा, रायपुर

प्रश्न– शादी होने में विलम्ब क्यों?
उत्तर– योग न बनने से, **''कात्यायनी यंत्र''** धारण करें।
राजेन्द्र, शिमला

प्रश्न– शारीरिक कष्ट, पीड़ा क्यों?
उत्तर– **''रोग मुक्ति दीक्षा''** प्राप्त करें। ग्रह-दुष्प्रभाव समाप्त होगा। दो रत्ती का हीरा पहिनें।
रीटा, शिमला

प्रश्न– मानसिक परेशानी?
उत्तर– ढाई रत्ती का मोती पहिनें तथा **''इष्ट साधना''** सम्पन्न करें।
नरेश कुमार, शिमला

प्रश्न– पढ़ाई में मन नहीं लगता, कुछ याद नहीं रहता, उपाय बतायें।
उत्तर– **''सरस्वती दीक्षा''** प्राप्त कर साधना करें।
सतीश चंद्र जोरी, शिमला

प्रश्न– कम्प्यूटर सेण्टर खोलना लाभप्रद होगा?
उत्तर– विशेष लाभ नहीं दिखता।
अविनाश कुशवाहा, छिंदवाड़ा

प्रश्न– पुत्र प्राप्ति योग है?
उत्तर– योग बन रहा है, बाधा समाप्ति हेतु **''पुत्र प्राप्ति दीक्षा''** प्राप्त करें।
सुषमा कुमारी, सुन्दर नगर, मंडी

प्रश्न– स्वास्थ्य ठीक क्यों नहीं रहता?
उत्तर– **''रुद्र साधना''** सम्पन्न करें एवं पुखराज धारण करें।
हेमन्त शाक्या, सागर

प्रश्न– अपनी पसंद के लड़के से विवाह करना चाहती हूं?
उत्तर– सफलता के योग कम ही रहेंगे। सूझ-बूझ से काम लें।
पुष्पा, दिल्ली

प्रश्न– मैं परीक्षा में पास होऊंगा या नहीं?
उत्तर– सम्भावनाएं प्रबल हैं।
शैलेश राय, दमण

प्रश्न– मैं सरकारी नौकरी का फार्म भर रहा हूं, सफलता मिलेगी या नहीं?
उत्तर– सफलता मिलेगी, प्रयास करें तथा **''कार्य सिद्धि दीक्षा''** भी प्राप्त करें।
संजीव कुमार, ललितपुर

प्रश्न– मेरा काम कब चलेगा? अच्छे दिन कब तक?
उत्तर– **''सौभाग्य प्रदाता गणपति साधना''** सम्पन्न करें। निकट भविष्य में समय अनुकूल होगा।
सतीश कुमार, हरीकिशन नगर

प्रश्न– नौकरी प्राप्त होगी या नहीं?
उत्तर– सम्भावनाएं बन रही हैं।
दीपक पाटनी, सनावद

(कूपन पर ही प्रश्न स्वीकार्य होंगे)

नाम :-...
जन्म तिथि :- ....महीना ....सन्...............
जन्म स्थान :- .... जन्म समय ....
पता (स्पष्ट अक्षरों में) :-...
....
आपकी केवल एक समस्या :- ....

कृपया निम्न पते को काटकर लिफाफे पर चिपकाएं :-

– ज्योतिष प्रश्नोत्तर –
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान कार्यालय
306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034

राशीफल

मेष -

चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

यह माह सामान्यतः आर्थिक विषमताओं से भरा रहेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा को बनाये रखें। परिवार के किसी सदस्य को लेकर चिंता रहेगी। सोचा हुआ कार्य शीघ्र पूर्ण होने की आशा नहीं। मांगलिक कार्यों के योग बनेंगे। यात्रा में अनुकूलता रहेगी। मित्रों का एवं सहयोगियों का सहयोग न्यून ही रहेगा। संतान की ओर से प्रतिकूलता प्राप्त होगी। जो कारोबार चल रहा है, उसी में ध्यान दें, नवीन कार्यों का मांगलिक योग कमजोर रहेगा। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। रुका हुआ धन प्राप्त होने के योग क्षीण। अनुकूलता प्राप्ति हेतु बगलामुखी साधना करें। सड़क पर वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। जमीन- जायदाद के मामले उलझने से चिंता रहेगी। प्रेम-प्रसंगों में सावधानी बरतें।

वृषभ -

इ, उ, ए, ओ, बा, बी, बु, बे, बो

पुराने अनुबंध लाभप्रद सिद्ध होंगे। नये सम्पर्क भविष्य में अनुकूलता देने वाले रहेंगे। विश्वासघात की स्थिति से सावधान रहें। शत्रु हावी होने का प्रयास करेंगे। कारोबारी मामलों में सहयोग की आशा करना व्यर्थ। जमीन-जायदाद के मामलों की उपेक्षा न करें। प्रेम-विवाह के मामलों में सफलता संदिग्ध। प्रेम-प्रसंगों में सावधानी बरतें। कला जगत के व्यक्ति आर्थिक न्यूनता अनुभव करेंगे। गृहस्थ सुख योग सामान्य। वाद-विवाद की स्थिति में संयम बरतें। ग्रह बाधा निवारण का प्रयास करें।

मिथुन -

का, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह

अचल सम्पत्ति पर ऋण लेना हानिप्रद एवं पीड़ादायक रहेगा, वहीं रुका हुआ धन वसूल करना अनुकूल रहेगा। मित्रों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा। जीवनसाथी से वैचारिक सामंजस्य बनाये रखें। चिकित्सा व्यय भार में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य के बारे में लापरवाही न बरतें। सोचा हुआ कार्य पूर्ण होगा। व्यर्थ की भाग-दौड़ से खिन्नता होगी। चलते हुए कार्य अनुकूलता देने वाले सिद्ध होंगे। मांगलिक कार्यों के योग बनेंगे। अदालती मामलों में अनुकूलता प्राप्त होने की स्थिति बनेगी। सामाजिक प्रतिष्ठा बनाये रखें। वाद-विवाद की स्थिति में सावधानी बरतें। अनुकूलता प्राप्ति हेतु भैरव साधना करें। अनुकूल तारीखें ५,८,१४,२२,२३ और २८ रहेंगी। वाहन प्रयोग में सावधानी बरतें। अनावश्यक व्यय से बचें।

कर्क -

ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

किसी की बातों में आकर अपना नुकसान न करें। सड़क पर वाहन चलाते समय सावधानी बरतें। आपसी मतभेद से बचें। पड़ोसियों के अच्छे सहयोग से रुका हुआ कार्य पूर्ण होगा। अधिकारियों से सौहार्द्र पूर्ण व्यवहार बनाकर चलें। प्रेम-विवाह अनुकूल सिद्ध नहीं होंगे। नवीन क्रय-विक्रय के योग बनेंगे। जीवन साथी से वैचारिक सामंजस्य बनाये रखें। परिवार के किसी सदस्य को लेकर चिंता रहेगी। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। अनुकूलता प्राप्ति हेतु तारा महाविद्या साधना सम्पन्न करें। धार्मिक एवं मांगलिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी।

सिंह -

मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

स्वास्थ्य सामान्य बना रहेगा। मानसिक स्थिति सामान्य बनाये रखें। कारोबारी यात्रा में लाभ होगा। अधिकारियों से सम्बन्ध बिगड़ेगा। प्रत्येक विवाद में संयम बरतें। साधनात्मक दृष्टि से समय अनुकूल एवं सफलता देने वाला। पारिवारिक कलह को रोकें। प्रेम-प्रसंगों से दूर रहें। ऋण के लेन-देन से बचें। मित्रों का विशेष सहयोग प्राप्त नहीं होगा। गृह बाधा निवारण करें। किसी पुराने परिचित से आर्थिक लाभ। आध्यात्मिक विकास की स्थिति बनेगी। अदालती मामलों में सुधार होगा। अनुकूलता प्राप्ति हेतु सर्वसिद्धि प्रदायक गणपति साधना करें। कारोबारी मामलों में शिथिलता रहेगी। नये सम्पर्क भविष्य में लाभदायक सिद्ध होंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा बनाये रखें।

कन्या -

टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

जल्दबाजी में लिये गये निर्णय हानिप्रद सिद्ध हो सकते हैं। यह माह आपके लिए आर्थिक दृष्टि से न्यून ही रहेगा। कारोबारी दृष्टि से यह माह अनुकूल एवं लाभदायक रहेगा। नवीन कार्य प्रारम्भ करने की योजनाओं में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न बरतें। किसी पारिवारिक सदस्य को लेकर तनाव रहेगा। राज्य पक्ष आपके लिए अनुकूल सिद्ध होगा। मान-सम्मान प्राप्ति के योग। मांगलिक कार्यों में अड़चनें आने से रुष्टता। यात्रा में सावधानी बरतें। धार्मिक स्थलों की यात्रा रुचिकर एवं सुखकर।

तुला -

रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते

प्रेम-प्रसंगों में सावधानी बरतें। जो कार्य आप कर रहे हैं, पहले उन्हें पूरा करें। राज्य पक्ष आपके लिए प्रतिकूल रहेगा। जीवनसाथी से वैचारिकता बनाकर चलें। संतान पक्ष आपके लिए अनुकूल सिद्ध होगा। नये अनुबंधों से लाभ होगा। पुराने सम्पर्क लाभप्रद सिद्ध होंगे। बड़े क्रय-विक्रय के योग। रुका हुआ धन प्राप्त होने के योग नहीं। कला जगत के व्यक्ति उदासीनता अनुभव करेंगे। चिकित्सा व्ययभार एवं धार्मिक कार्यों पर व्यय भार बढ़ेगा। अनुकूलता प्राप्ति हेतु लक्ष्मी साधना करें। स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न बरतें।

वृश्चिक -

तो, ना, नी, नु, ने, नो, या, यी, यू

नवीन कार्यों में उतावली न करें। राज्य पक्ष बाधाकारी योगों से भरा रहेगा। मित्र भी शत्रुओं से जा मिलेंगे, स्थिति अधिक कष्टकर रहेगी। भाग्य बाधा निवारण प्रयोग सम्पन्न करें। साधनात्मक दृष्टि से समय अनुकूल। व्यर्थ के आर्थिक व्यय से बचें। भूमि सम्बन्धी मामलों को लेकर लापरवाही न बरतें। सामाजिक प्रतिष्ठा में हानि की सम्भावना। संतान पक्ष के मामलों की उपेक्षा न करें। यात्रा में सावधानी बरतें। मांगलिक कार्यों के योग प्रबल।

धनु -

ये, यो, भ, भी, भू, धा, फा, डा, भे

जीवनसाथी से अनुकूलता प्राप्त होगी। संतान पक्ष की ओर से चिंता रहेगी। आर्थिक दृष्टि से यह माह सामान्यतः अनुकूल रहेगा। यात्रा-व्यय बढ़ेगा। धार्मिक कार्यों हेतु यात्रा-योग प्रबल। जो भी कार्य करना चाहते हैं, अपनी मौलिक सूझ-बूझ से करें। जल्दीबाजी में लिये गये निर्णय हानिप्रद होंगे। स्वास्थ्य नरम रहेगा। परिवार के किसी सदस्य को लेकर चिंता रहेगी। ग्रह बाधा निवारण प्रयोग सम्पन्न करें। ऋण के लेन-देन से आर्थिक स्थिति कमजोर होगी। मित्रों से अनुकूलता प्राप्त होगी। अनुकूलता प्राप्ति हेतु भगवती षोडशी त्रिपुर सुन्दरी साधना करें।

मकर -

भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी

बेरोजगार वर्ग के व्यक्ति कारोबारी मामलों में रुचि लें, नवीन व्यवसाय आरम्भ करने के योग। आपके परिश्रम से ही स्थितियां आपके अनुकूल होंगी। शत्रु पक्ष विश्वासघात कर सकता है। सड़क पर वाहन प्रयोग के समय सावधानी बरतें। मित्रों का साथ छूट जाने से तनाव रहेगा। जीवनसाथी से अनुकूल सहयोग न मिलने से खिन्नता। प्रेम-प्रसंगों में शिथिलता रहेगी। कला जगत के व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से अनुकूलता प्राप्त करेंगे।

कुंभ -

गू, गे, गो, सी, सु, से, सो, दा

पूरा माह आलस्य से भरा रहेगा। साधनात्मक दृष्टि से यह माह विशेष सफलता प्रदान करने वाला सिद्ध होगा। अपव्यय से बचें। भूमि विवादों को लेकर तनाव बना रहेगा। बड़े क्रय-विक्रय के योग बनेंगे। आप-अपने कार्यों को स्वयं करें, दूसरों पर छोड़ने से हानि की सम्भावना। जो कार्य आप कर रहे हैं, उसमें परिश्रम करें, सफलता प्राप्त होगी। संतान पक्ष की ओर से अनुकूल समाचार। समाज में प्रतिष्ठा को बनाये रखें। पारिवारिक मामलों की उपेक्षा करने से तनाव हो सकता है। स्वास्थ्य सामान्य बना रहेगा। यात्रा में सावधानी बरतें।

मीन -

दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, च, ची

किसी से अनबन होने की स्थिति में संयम बरतें। धार्मिक कार्यों में एवं मांगलिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी। जीवनसाथी से अनुकूलता प्राप्त होगी। वैचारिक मतभेद समाप्त करने का प्रयास करें। प्रेम-प्रसंगों को लेकर उद्विग्नता रहेगी। हड़बड़ी एवं उतावली से कोई भी कार्य न करें। प्रेम-विवाह के योग बनेंगे। कारोबारी मामलों को लेकर सतर्कता बरतें। पुराने अनुबंध लाभप्रद सिद्ध होंगे।

व्रत पर्व एवं त्यौहार

दिनांक	तिथि	पर्व
०१/११/९५	कार्तिक शुक्ल पक्ष ९	अक्षय आंवला नवमी
०३/११/९५	कार्तिक शुक्ल पक्ष ११	एकादशी व्रत
०४/११/९५	कार्तिक शुक्ल पक्ष १२	प्रदोष व्रत
०५/११/९५	कार्तिक शुक्ल पक्ष १३	वैकुण्ठ चतुर्दशी
०६/११/९५	कार्तिक शुक्ल पक्ष १४	पूर्णिमा व्रत
०८/११/९५	मार्ग शीर्ष कृष्ण पक्ष १	अमृत सिद्धि योग
१४/११/९५	मार्ग शीर्ष कृष्ण पक्ष ७	सर्वार्थ सिद्धि योग
१५/११/९५	मार्ग शीर्ष कृष्ण पक्ष ८	काल भैरवाष्टमी
२६/११/९५	मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष ४	सर्वार्थ अमृत योग
०१/१२/९५	मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष १०	सर्वार्थ अमृत योग
०२/१२/९५	मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष ११	मोक्षदा एकादशी
०५/१२/९५	मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष १४	पिशाच मोचन श्राद्ध
०६/१२/९५	मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष १५	पूर्णिमा व्रत
१०/१२/९५	पौष कृष्ण पक्ष ०३	रवि पुष्य योग
१५/१२/९५	पौष कृष्ण पक्ष ०८	कालाष्टमी
१८/१२/९५	पौष कृष्ण पक्ष ११	सफला एकादशी
२१/१२/९५	पौष कृष्ण पक्ष १४	पितृकार्ये अमावस्या
२२/१२/९५	पौष कृष्ण पक्ष ३०	देवकार्ये अमावस्या
२५/१२/९५	पौष शुक्ल पक्ष ०४	सर्वार्थ सिद्धि योग
२८/१२/९५	पौष शुक्ल पक्ष ०७	गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती

कुछ साधनाएं शान्त एवं सरल होती हैं, जिनको करना सहज होता है; और कुछ साधनाएं अत्यधिक तीव्र होती हैं, जिन्हें सम्पन्न करने में विशेष सावधानी रखनी पड़ती है। पत्रिका में दोनों प्रकार की साधनाएं प्रकाशित होती रहती हैं। तीव्र साधनाओं के क्रम में ही इस बार ''कृत्या साधना'' का प्रकाशन किया जा रहा है, क्योंकि ऐसे लगभग २७५ पत्र प्राप्त हुए हैं, जिन्होंने ''सर्वश्रेष्ठ'' बने रहने की इच्छा व्यक्त की है, उनकी इच्छा पूर्ति का ही तो उपाय है यह तीव्र साधना. . .

आप अपने-आप को किसी से कम न समझें क्योंकि आपने सम्पन्न की है . . .

कृत्या साधना

प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छानुसार जीवन जीना चाहता है और निरन्तर आनन्द एवं तुष्टि युक्त क्षणों की अभिलाषा करता है तथा इसके लिए सतत चेष्टारत भी रहता है; लेकिन क्या व्यक्ति की ये अभिलाषाएं पूरी हो जाती हैं? निश्चित रूप से आपका उत्तर होगा— ''नहीं, ऐसा सम्भव नहीं है।''

आपने कभी सोचा है, कि आप का उत्तर ''हां'' में क्यों नहीं मिला, क्योंकि दुःख तो जीवन का अभिन्न अंग है, किसी न किसी रूप में व्यक्ति के साथ-साथ कदम से कदम मिला कर चलता रहता है. . . कभी कम हो जाता है, तो व्यक्ति थोड़ी राहत महसूस करने लगता है. . . यदि थोड़ा अधिक हो जाता है, तो कष्ट अनुभव करने लगता है। यह सुख-दुःख का उतार-चढ़ाव तो प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में लगा ही रहता है। फिर भी इसे जीवन का क्रम मानकर, हाथ पर हाथ रख कर व्यक्ति बैठ तो नहीं जायेगा, वह जरूर ऐसा प्रयास करेगा, कि उसके जीवन से दुःख रूपी अशांति दूर हो और

सुख रूपी शान्ति का आगमन हो।

— लेकिन सुख और दुःख की व्याख्या करने मात्र से ही तो जीवन शान्त एवं सुखी नहीं हो सकता, इसके लिए तो कर्म करना ही पड़ेगा और कोई ऐसा उपाय ढूंढना पड़ेगा, जिससे व्यक्ति के जीवन में आनन्द की रसधारा सतत प्रवाहित होती रहे।

जीवन में प्रमुखतः चार कष्ट ऐसे होते हैं, जो व्यक्ति के लिए दुःख का कारण बनते हैं। इन चार कष्टों के नाखून इतने तीखे हैं, कि ये प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में जरूर खरोंच डालते हैं, ये कष्ट है— १. शत्रु बाधा, २. कलह, ३. तिरस्कार, ४. भय।

★ यदि आपका कोई मित्र है, तो आप उसे कभी-कभी ही याद करेंगे, लेकिन कोई शत्रु है, तो आप का चिन्तन चौबीस घंटों में से अठारह घण्टे किसी न किसी रूप में उस शत्रु के प्रति बना ही रहेगा, जिसके परिणामस्वरूप आप अशान्त बने रहेंगे।

★ आपका कोई सम्मान करता है, तो आपको बहुत प्रसन्नता होती है; यदि कोई सम्मान न करे, तो भी कोई बात नहीं, आप अपने रास्ते वह अपने रास्ते; लेकिन कोई तिरस्कार कर दे, तो वह सहन नहीं होता और आप अन्दर ही अन्दर तिरस्कार की तपिश से झुलसते ही रहते हैं।

★ आपका कार्यक्षेत्र घर के भीतर हो या बाहर, किसी भी जगह यदि कलह है, तो वहां बिताये क्षण उदासी भरे क्षण ही होते हैं, क्योंकि कलह एक ऐसा घुन है, जो व्यक्ति को शारीरिक व मानसिक दोनों रूपों से क्षति पहुंचाता है।

★ यदि आप किसी भी कारण से भयग्रस्त हैं, कारण कुछ भी हो सकता है— किसी शत्रु का भय, परीक्षा में फेल होने का भय, अपमान का भय, लांछन लगने का भय, व्यापार में घाटे का भय— सैकड़ों कारण हैं भय के, तो आप सामान्य एवं सुखी जीवन व्यतीत नहीं कर सकते हैं।

— ये चारों स्थितियां विष की बूंदों के समान हैं, जो अमृत रूपी जीवन को विषमय बना देती हैं। इन चारों स्थितियों के कारण ही आप अपने-आप को दूसरों की तुलना में कमजोर, अशक्त एवं हीन समझने लग जाते हैं, क्योंकि आपके द्वारा कई प्रयास करने के बाद भी इनसे मुक्त होना सम्भव नहीं हो सका।

आपकी इस 'सुरसरा-मुख रूपी समस्या' के निराकरण के लिए ही तो यह "कृत्या साधना" प्रस्तुत की जा रही है, जिसे सम्पन्न करने के बाद आपके मन से हीन भावना निकल जायेगी और आप के मन में यह विश्वास दृढ़ हो जायेगा, कि आप किसी से कम नहीं हैं।

कृत्या को भगवान शिव ने अपनी जटा से प्रकट किया है। जब दक्ष का यज्ञ विध्वंस करना था, उस समय क्रोधित शिव की जटा खुल गयी और उसी जटा से कृत्या प्रकट हुई।

कृत्या का स्वरूप अत्यन्त विकराल होता है, इसके अन्दर शक्ति इतनी अधिक होती है, कि पूरे ब्रह्माण्ड को प्रलयग्रस्त कर दे; कृत्या ने दक्ष के यज्ञ कुण्ड को तोड़-फोड़ दिया और महाप्रलय का साकार दृश्य उपस्थित कर दिया, उसके ऊपर दक्ष के मंत्रों का कोई प्रभाव नहीं व्याप्त हो रहा था, क्रोधित कृत्या के सारे शरीर से आग की लपटें निकलती हुई-सी दिखायी दे रही थीं, उसे शान्त करना किसी के भी वश की बात नहीं थी, अतः सभी देवताओं ने भगवान शिव से प्रार्थना की, तो उन्होंने कृत्या को शान्त किया।

ऐसी तीव्र शक्ति से सम्पन्न 'कृत्या' जिस साधक को सिद्ध हो जाय, उसका कोई कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता।

कृत्या सिद्ध साधक सर्वशक्ति सम्पन्न हो जाता है।

कृत्या की साधना करने वाले साधकों को कुछ सावधानियां रखनी चाहिए—

★ साधक को इस ग्यारह दिवसीय साधना में पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।

★ पूरी तरह से मन और शरीर की पवित्रता बनाये रखनी चाहिए।

★ सिर्फ एक समय शुद्ध सात्विक आहार लेना चाहिए।

★ यथासम्भव मौन रहें, आवश्यकता पड़ने पर ही बोलें।

★ इस साधना में प्रयुक्त "कृत्या यंत्र" पूर्ण शिवोक्त महामंत्रों से अनुप्राणित होना चाहिए।

★ "कृत्या माला" भी ब्रह्मप्राणश्चेना युक्त होनी चाहिए।

इस साधना के लिए साधक को निम्न विधान करना है—

१. यह साधना किसी भी मास में **शुक्ल पक्ष की दशमी** को प्रारम्भ करें। इसे आप **३१.१२.९५** को **रविवार** से प्रारम्भ कर सकते हैं।

२. रात्रि में दस बजे के आस-पास स्नान कर, काली धोती पहिनें, काले ऊनी आसन पर **दक्षिण दिशा** की ओर मुख करके बैठें।

३. यंत्र का काले तिल, गुड़, रक्त चन्दन और लाल पुष्पों से पूजन करें।

४. वीरासन में बैठकर पूजन और मंत्र जप करें।

५. पूजन प्रारम्भ करें—

- बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से शरीर पर छिड़कें और निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

देह रक्षा मंत्र

''ॐ क्लीं ऐं सर्वरक्षणायै क्लीं ऐं फट्''

- बायें हाथ में काले रंगे चावल लेकर अपने चारों तरफ छिड़कें और दसों दिशाओं का बन्धन करें—

दिशा बन्धन मंत्र

''क्लीं क्लीं ऐं क्लीं क्लीं स्वाहा''

- इसके बाद भगवान शिव का मानसिक पूजन करें, फिर यंत्र पूजन करें।

६. कृत्या माला से निम्न कृत्या मंत्र का **ग्यारह माला जप** करें—

कृत्या मंत्र

।। क्लीं कृत्या सिद्धयै क्लीं फट् ।।

मंत्र का जप करते हुए साधक हिले-डुले नहीं, बीच में उठना तो मना है ही, आपको यदि भय लगता है, तब भी आप मन में भगवान शिव का ध्यान करें और ज्यादा उचित होगा यदि आप इस साधना को प्रारम्भ करने से पहले तीन माला गुरु मंत्र का जप कर लें। यदि आपको ऐसा लगे, कि शायद कोई बुला रहा है, तो उस आवाज को सुनकर भी अनसुना कर दें। अपना पूरा ध्यान मंत्र पर ही केन्द्रित रखें। मंत्र-जप के पश्चात् उसी कक्ष में सोयें।

७. ग्यारहवें दिन साधना समाप्ति के पश्चात् माला को अपने गले में धारण कर लें और कृत्या यंत्र पर चढ़ाये गये रक्त चन्दन से चन्दन लेकर अपने ललाट पर तिलक करें। माला को पैंतीस दिन तक धारण करें, फिर नदी में प्रवाहित कर दें।

८. यंत्र को साधना समाप्ति की सुबह ही नदी में विसर्जित करें।

इस साधना को सम्पन्न करने वाला साधक अपने अन्दर अद्भुत शक्ति और सामर्थ्य अनुभव करने लगता है। चेहरे पर अपूर्व तेजस्विता छाने लगती है। शत्रुओं पर पूर्ण विजय प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है। कृत्या मंत्र का प्रयोग किसी भी व्यक्ति के फोटो पर किया जाय, तो भी साधक की इच्छानुसार फल प्राप्त होता है। किसी भी रोगी पर यदि कृत्या मंत्र का पन्द्रह बार उच्चारण कर जल छिड़क दिया जाय, तो वह स्वस्थ होने लगता है। जीवन के चारों कष्ट—शत्रु बाधा, कलह, तिरस्कार और भय का समूल नाश होता है।

— किन्तु कृत्या सिद्ध साधक को यह भी ध्यान रखना चाहिए, कि वह इस शक्ति का प्रयोग किसी अनैतिक कार्य के लिए नहीं करे, अन्यथा उसे विपरीत प्रभाव भी झेलना पड़ सकता है और उसी दिन उसकी सिद्धि भी समाप्त हो जाती है।

साधना-सामग्री (यंत्र, माला) न्यौछावर— २५०/-

आज मनुष्य अन्तर्वेदना से पीड़ित है, दुःखों की आग में जल रहा है, कराह रहा है। कलियुग के प्रवाह में, जिस दिशा में भी नजरें जाती हैं, उस तरफ ही ईर्ष्या, द्वेष, छल, कपट, मक्कारी, अहं, वैमनस्य की ही भावना दृष्टिगोचर होती है। यही नहीं, जहां पर पवित्रता का, श्रद्धा का, प्रेम का, शीतलता का अनुभव होना चाहिए, वहां भी इन सब तत्त्वों का अभाव ही दिखाई देता है।

आखिर ऐसा क्यों होता है? क्यों मानव-मन को शांति प्राप्त नहीं हो रहीं? क्यों वह झूठा आडम्बर रच के अपने मन को शांति का आश्वासन देता है? आखिर क्यों? फिर वह कहां जाए?

चलो दूर कदम्ब की छांव तले
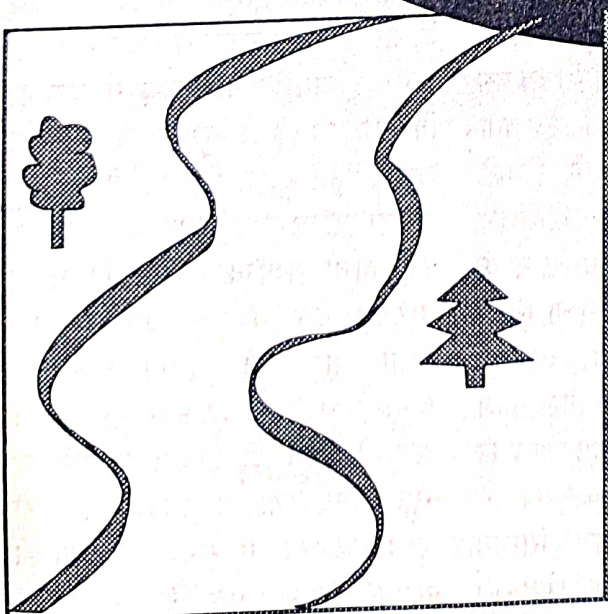
शान्ति, प्रेम, सद्भाव की खोज में, विभिन्न सम्प्रदाय के व्यक्ति अनेकों प्रकार से, विभिन्न धर्मों की छत्र-छाया में आश्रय लेते हैं। बड़े-बड़े सत्संगों और प्रवचनों का आयोजन कर जीवन के लक्ष्यों को खोजने का प्रयास करते हैं— मगर असफलता प्राप्त होती है, तब या तो मनुष्य का धर्म के ऊपर से विश्वास उठ जाता है या फिर वह इसे ढोंग मानने लग जाता है . . . और बेचैन होकर धर्म को त्यागने का प्रयास करता है, अपने-आप को नास्तिक के रूप में स्थापित कर, ईश्वर से,

ब्रह्म से, गुरु से अपना विश्वास समाप्त कर लेता है और वह पुनः सांसारिक प्रवंचनाओं में फंसकर जीवन को मृत्यु की ओर अग्रसर कर देता है।

इतिहास साक्षी है, कि जब-जब मनुष्य का गुरु से, ईश्वर से, प्रकृति से विश्वास समाप्त हुआ है, तब-तब उसका विनाश हुआ है, और इस अविश्वास का मुख्य कारण है– अयोग्य व्यक्तियों का गुरु पद पर स्थापित हो जाना। वास्तव में 'गुरु' शब्द 'ज्ञान' का सूचक है और ज्ञान की कभी कोई सीमा नहीं होती और न ही उसे सीमा में बांधा जा सकता है। जो ज्ञान को सीमाओं में बांध देते हैं अथवा बांधने का प्रयास करते हैं, वे ही वास्तव में गुरु की अयोग्यता के सूचक हैं। गुरु तो एक दर्पण की भांति होता है, जो अपने शिष्य को उसकी छवि दिखाकर उसे सही रास्ते पर गतिशील करता है, भयमुक्त बनाकर उसे जीवन प्रदान करता है।

वर्तमान में यदि हम किसी भी गुरु के समीप जायें, तो स्पष्ट होता है कि उनके पास जो ज्ञान है वह कुछ शास्त्रों— गीता अथवा रामायण के कुछ मनोहर दृष्टांतों तक ही सीमित रह गया है। तब यह प्रश्न उठना सहज-स्वाभाविक है, कि क्या उनमें इतनी ज्ञान की चेतना है, जिससे अपने शिष्यों को अभय प्रदान कर, जीवन के विविध पक्षों को जीते हुए, ज्ञान के सरोवर में डुबकी लगाने की कला सिखा सकें? अपने शिष्य को अभय प्रदान कर पूर्ण ब्रह्मत्व प्रदान करें . . . और केवल ब्रह्मत्व प्रदान ही नहीं करें, अपितु शिष्य को पूर्ण ब्रह्म स्वरूप में स्थापित कर सकें?

आज के दौर में ऐसा असम्भव सा प्रतीत होता है, परन्तु यह असम्भव नहीं है। असम्भव को सम्भव बनाने की कला लोग भूल चुके हैं, तथाकथित गुरु कहलाने वाले लोगों को इस क्रिया का ज्ञान ही नहीं है, इसलिए हम लगातार सत्य से दूर और बहुत दूर होते चले जा रहे हैं।
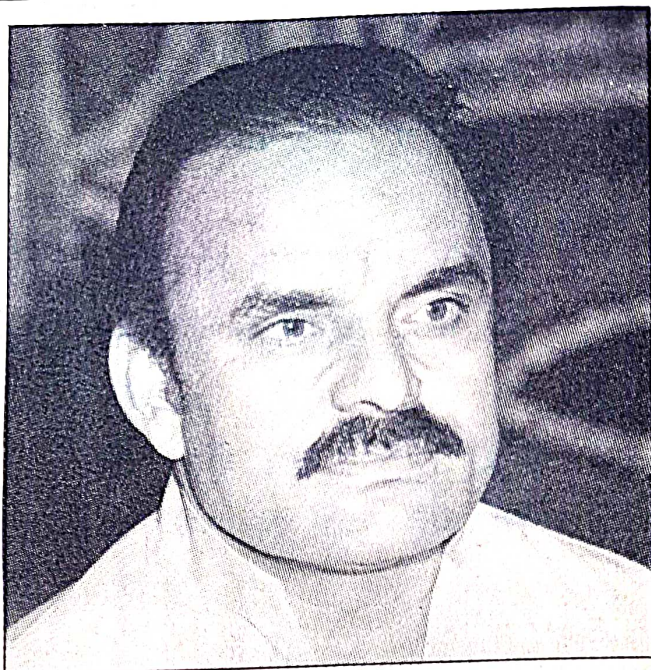
आज के युग में गुरु पद येन-केन-प्रकारेण प्राप्त कर लेना ही शिष्य कहलाने वाले लोगों का उद्देश्य बन गया है। स्वार्थ सिद्धि के लिए शिष्यों में विवाद हो जाना, एक-दूसरे पर मुकदमा कर देना ऐसे लोगों के लिए सामान्य-सी प्रक्रिया हो गयी है, फिर जब ये गुरु पद हस्तगत कर लेते हैं, तो दुनिया में गुरु रूप में अपना परिचय दे भोली-भाली जनता को ठगते रहते हैं।

जबकि वास्तविकता यह है, कि जो वास्तव में गुरुत्व के ज्ञान को धारण किये हुए व्यक्तित्व होते हैं, उन्हें अपना परिचय देने की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि सुगन्ध को अपना परिचय देने की आवश्यकता नहीं होती, सूर्य को अपनी तेजस्विता दिखाने की आवश्यकता नहीं होती, वह तो स्वयं ही अपना परिचय है। सूरज निकलेगा तो प्रकाश होगा ही, पुष्प खिलेगा तो सुगन्ध फैलेगी ही, उसके लिए अतिरिक्त प्रयास की

आवश्यकता नहीं होती। खरे सोने का कहीं पर विज्ञापन अथवा प्रचार नहीं होता, क्योंकि सोने का मात्र सोना होना ही पर्याप्त है। जहां अपात्रता है, अज्ञान है, असमर्थता है, वहीं पर द्वन्द्व है, लड़ाई-झगड़े हैं, छीना-झपटी है, जबर्दस्ती अपना स्थान बनाने की प्रक्रिया है।

इसलिए गुरु पद कोई प्रतिस्पर्धा का विषय नहीं है, गुरुत्व कोई बलपूर्वक प्राप्त करने का विषय भी नहीं है। गुरुत्व धारण करना तो तलवार की धार पर चलने से भी ज्यादा कठिन प्रक्रिया है, गुरुत्व धारण करना तो विष को कंठ में स्थापित करने की प्रक्रिया है, समस्त जड़-चेतन के हलाहल को पान करने की प्रक्रिया है . . . लेकिन गुरुत्व प्राप्त करना तो बहुत बाद की प्रक्रिया है। प्रारम्भिक प्रक्रिया के अनुसार तो शिष्यत्व प्राप्त करना आवश्यक है ...

और लोगों को शिष्य बनने की प्रक्रिया का ज्ञान नहीं है, यदि एकाध को है भी, तो भी वे अपने अन्दर शिष्यत्व को उतार नहीं पाते, क्योंकि शिष्यत्व धारण करने के लिए तो सर्वप्रथम अपने अहंकार "मैं" को समाप्त करना होगा— और जब ऐसा होगा, तब व्यक्ति में श्रद्धा, विश्वास और गुरु-चरणों के प्रति प्रेम का भाव उत्पन्न होगा।

अतः यह ठीक ही कहा गया है, कि शिष्यता प्राप्त करना एक कठिन कार्य ही नहीं, अपितु दुष्कर कार्य है। अपने जीवन को, अपने अस्तित्व को, अपने बोध को और अपने-आप को समाप्त कर देने की कला ही शिष्यता है। एक योग्य शिष्य अपने-आप को गुरु की आज्ञा से इतना समरस कर लेता है, कि वह स्वयं समाप्त हो जाता है और तब उसके स्थान पर स्वयं गुरु खड़ा हो जाता है। समस्त द्वैत समाप्त होकर अद्वैत का भाव आ जाता है। प्रकृति का प्रकृति में, ब्रह्म का ब्रह्म में, शून्य का शून्य में विलय हो जाना ही शिष्यत्व है, गुरुत्व है और परम तत्त्व है।

जल में कुम्भ, कुम्भ में जल है,
बाहर भीतर पानी।
फूटा कुम्भ जल जल ही समाना
यह तथ कहा ज्ञानी।।

जिस प्रकार जल से भरा हुआ एक कलश, नदी में वहता है और जब कलश का अस्तित्व समाप्त हो जाता है, तब उस कलश का जल, नदी के जल के साथ एकाकार हो जाता है, तब कलश और नदी के जल में भिन्नता नहीं होती, दोनों को नदी का जल ही कहा जाता है; इसी प्रकार जब शिष्यत्व का लय गुरुत्व में हो जाता है, तो केवल. . . और केवल मात्र गुरुत्व ही रह जाता है और यही सही अर्थों में जीवन की श्रेष्ठता है, यही जीवन का लक्ष्य भी है।

और जब एक शिष्य के जीवन में इस प्रकार की घटना घटित होती है, तब वह जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त करता है, तब अद्वैत भाव आने पर उसकी स्वतः पूर्ण कुण्डलिनी जागरण की क्रिया सम्पन्न होती है, फिर वह उस कदम्ब के वृक्ष का रूप धारण कर सकने में सक्षम हो पाता है, जिसकी छाया तले समस्त विश्व, समस्त मानव जाति और यह समाज सुख-शांति का अनुभव करता है, ज्ञान की शीतलता प्राप्त करता है, ब्रह्मत्व की चांदनी में दमकते हुए, अमृतत्व के मानसरोवर में अवगाहन करता है।

इस झूठ, छल, प्रपंच, कपट, माया-मोह के बंधनों को तोड़ता हुआ जीवन के उद्देश्यों को प्राप्त करता है . . . और तब इस समाज के अतृप्त लोग स्वतः कह उठते हैं—

"चलो दूर कदम्ब की छांव तले"
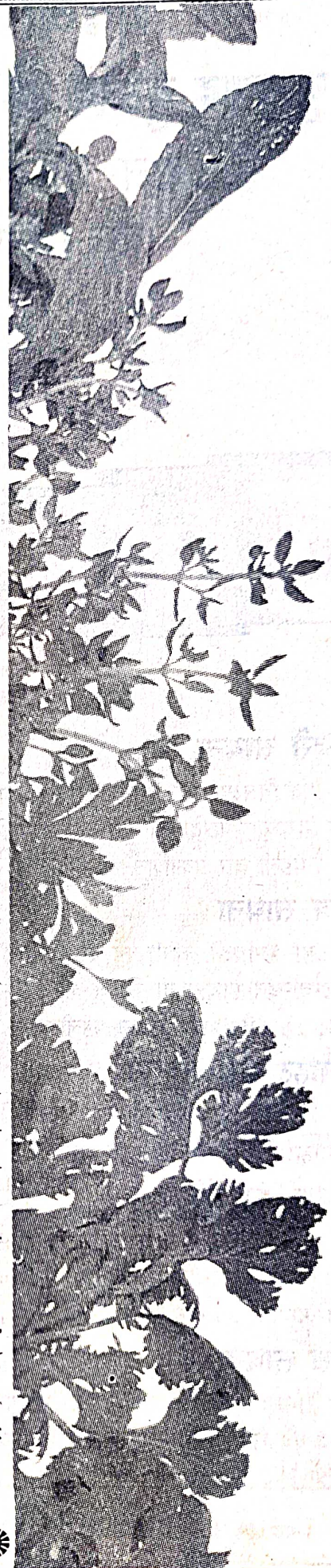
सर्वथा पहली बार प्रकाशित

पूज्यपाद गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी द्वारा रचित

ज्ञान और चेतना की अनमोल कृतियां

एस-सीरिज के अन्तर्गत ये पुस्तकें. . .
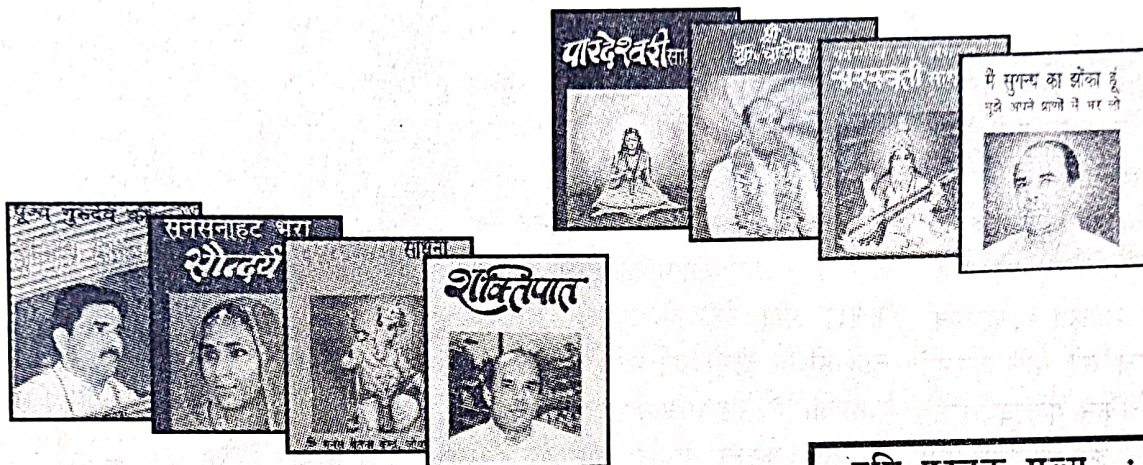
प्रति पुस्तक मूल्य : 5/-

पारदेश्वरी साधना

एक विलक्षण और चैतन्य पुस्तक . . . पारे से धातु परिवर्तन क्रिया की आराध्या "पारदेश्वरी" का पूर्ण साधना विधान . . . गोपनीय, दुर्लभ. . . पहली बार प्रकाशित।

श्री यंत्र साधना

मां भगवती लक्ष्मी का व्रत्य विग्रह "श्री यंत्र" और उससे सम्बन्धित साधना तो विश्व की दुर्लभतम साधना कही जाती है. . . और यही साधना पहली बार।

सनसनाहट भरा सौन्दर्य

सौन्दर्य . . . जीवन की पूर्णता, किस विधि से, किस प्रकार से सनसनाहट भरा सौन्दर्य प्राप्त कर सकते हैं. . . एक जीवन्त कृति।

मैं सुगन्ध का झोंका हूं

गुरु. . . हाड़-मांस का व्यक्ति नहीं, अपितु वासन्ती पवन का झोंका है, जो तन-मन को पुलक से भर दे, जीवन्त, जाग्रत, चैतन्य, सुगन्धित कर दे . . . एक दुर्लभ पुस्तक।

गणपति साधना

समस्त प्रकार के कार्यों, कष्टों, परेशानियों से मुक्त होने व धन-धान्य एवं समृद्धि प्राप्त करने हेतु श्रेष्ठ साधना पुस्तिका।

सरस्वती साधना

स्मरण शक्ति बढ़ाने हेतु एवं बालकों का सर्वांगीण विकास व वाक्‌सिद्धि के लिए श्रेष्ठतम साधनाएं, प्रत्येक गृहस्थ के लिए उपयोगी।

शक्तिपात

शक्तिपात क्यों, कब और कैसे . . . कुण्डलिनी जागरण किस विधि से . . . जीवन में तनाव मुक्ति सम्भव है? इन्हीं प्रश्नों के उत्तर से सम्बन्धित श्रेष्ठ पुस्तक।

बगलामुखी साधना

शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने, मुकदमे में सफलता तथा सभी प्रकार के विकारों पर विजय के लिए बगलामुखी साधना सर्वोत्तम है, और इसी से सम्बन्धित श्रेष्ठ पुस्तक।

श्री गुरु चालीसा

नित्य स्तवन योग्य तथा हृदय में गुरु को धारण करने की विधि लिए सुन्दर, मधुर स्तोत्र।

अनमोल सूक्तियां

प्रत्येक व्यक्ति के लिए उपयोगी और आवश्यक . . . श्रेष्ठ पुस्तिका. . . जीवन में पूर्ण सफलता के लिए।

: प्राप्ति स्थान :

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली.110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7186700

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

मैंने अपने सम्पूर्ण संन्यस्त जीवन में इतना अधिक चपल बालक नहीं देखा था, जितना कि सौम्यानंद को। किन्हीं पूर्वजन्म के सम्बन्धों के कारण उसे शैशव काल से ही पूज्यपाद गुरुदेव ने, उसके माता-पिता को सहमत कर, अपने सान्निध्य में ले लिया था और संन्यास धर्म की मर्यादा के ही अनुकूल "आनन्द" शब्द से युक्त कर सौम्यानंद कर दिया था। जबकि उसका पूर्व जीवन में नाम था– सौम्य चटर्जी। मैं उसकी बाल सुलभ हरकतों से जब हैरान और परेशान हो जाता, तो अपने-आप में ही बड़बड़ाने लगता, कि इसका नाम तो भूचालानंद या प्रलयानंद जैसे कुछ होना चाहिए था, यह गुरुदेव को भी क्या सूझा, कि उन्होंने इसे नाम भी दिया तो "सौम्यानंद"!

एक ही पल में वह किसी वृक्ष की चोटी पर नजर आता, तो अगले ही पल किसी वेगवती पहाड़ी नदी में कूदने को उद्यत दिखता, कभी किसी पहाड़ी की चोटी की ओर दौड़ता दिखाई देता, तो कभी किसी आधी झूलती चट्टानों पर उसे घोड़ा बनाकर काल्पनिक सैर प्रारम्भ कर देता। इसके उपरांत भी उस बालक में एक अनोखा सा आकर्षण और चुम्बकत्व था। वह जब अत्यंत भोलेपन से मुझे बांह पकड़ कर झकझोरता और दादा कहता, तब मैं सारा क्रोध भुलाकर उसकी निश्छलता में स्निग्ध हो उठता था।

पूज्यपाद गुरुदेव उसे संन्यास धर्म में दीक्षित कर मेरी ही निगरानी में छोड़ किसी अज्ञात स्थल पर साधना हेतु चले गए थे। मेरी स्वयं की साधना तो उसकी देखभाल करने में, उस पर दृष्टि बनाए रखने में ही सिमट गयी थी। उसके लिए भोजन तैयार करना, उसके वस्त्रों आदि का ध्यान रखना और इन सब से बढ़कर उस पर निरंतर दृष्टि बनाए रखना। पता नहीं क्यों उसका मन दुस्साहसिक कार्यों में ही अधिक लगता था। कभी-कभी तो मुझे लगता है पूर्वजन्म का कोई हठी संन्यासी ही पुनर्जन्म लेकर उस रूप में आ गया है। मैं निरंतर चिंतातुर रहता था, कि कहीं पूज्यपाद गुरुदेव द्वारा सौंपी गयी जिम्मेदारी में कोई त्रुटि न आ जाय, अतः आवश्यकता से कुछ अधिक ही सचेत रहता था।

इन्हीं दिनों में एक दिन की बात थी, कि मैं दिन के तृतीय प्रहर कुछ आवश्यक जड़ी-बूटियों को एकत्र करने घने जंगलों की ओर गया, तो सामने का दृश्य देख जहां का तहां जम गया। मेरे सामने मुझ से कुछ ही दूरी पर एक

"पूत के पांव पालने में ही दिख जाते हैं" यह उक्ति पूरी तरह चरितार्थ होती है सौम्यानन्द पर . . . उसकी चपलता, उसकी हरकतें बाल सुलभ होते हुए भी अन्य सामान्य बालकों से सर्वथा विपरीत थीं . . . तभी तो एक दिन वह पेड़ पर बैठा हुआ तेंदुए को चुनौती देती हुई निगाहों से देखता रहा . . . और विवश हो कर तेंदुए को सौम्य के सामने से हट जाना पड़ा।

तेंदुआ डाल से चिपका आक्रमण की मुद्रा में तत्पर था और उसके ठीक सामने वाली डाली पर सौम्यानंद भी उसी मुद्रा में डाली से चिपका उस तेंदुए को उसी प्रकार से न केवल प्रत्युत्तर वरन चुनौती भी देता हुआ लग रहा था!

वह कब मेरे निकलने के बाद आश्रम से निकल कर यहां तक पहुंच गया था, इसका मुझे रहस्य पता ही नहीं चल सका। काटो तो खून नहीं वाली स्थिति हो गयी थी मेरी, लेकिन उसके लिए तो कोई नवीन क्रीड़ा सृजित हो गयी थी . . . न तो मैं उसे आवाज देकर सावधान कर सकता था, न ही उस हिंसक तेंदुए पर वार करके कोई खतरा मोल ले सकता था। मेरे पास गुरुदेव से प्रार्थना करने के अतिरिक्त कोई चारा ही नहीं रह गया था और मैं आंखें बंद कर प्रार्थना में लीन हो गया।

थोड़ी देर बाद मैंने पाया, कि वह अपनी उसी चिरपरिचित शैली में अपनी छोटी-छोटी हथेलियों से मुझे झकझोर रहा है। मैंने आनन्द के अतिरेक में भर उसे सीने में समा लिया। मेरे हर्ष का कोई ओर-छोर नहीं था। **मुझे उसी दिन समझ में आ गया, कि वह कोई सामान्य बालक नहीं है, विशिष्ट गुरु कृपा प्राप्त कोई पूर्वजन्म का विलक्षण साधक है और वास्तव में उसकी रक्षा तो पूज्यपाद गुरुदेव ही प्रतिक्षण सूक्ष्म रूप में उपस्थित रहकर कर रहे हैं, मैं तो निमित्त मात्र हूं।**

कुछ माह बीते और जैसी कि संन्यास धर्म की मर्यादा है, उसमें सम्बन्धों आदि को विशेष महत्ता नहीं दी जाती, उसके अनुरूप मुझे उससे विलग होना पड़ा। उसे पूज्यपाद गुरुदेव ने स्वयं अपने संरक्षण में ले

लिया और मुझे नवीन आज्ञा प्रदान कर दी। इसके बाद कई वर्ष व्यतीत हो गए। जीवन की कई स्मृतियां बनीं और विलीन हो गयीं, किंतु मुझे अनुजवत् प्रिय उस बालक की यदा-कदा स्मृति हो आती थी। एक दिन की बात है, कि मैं कहीं को प्रस्थान कर ही रहा था, कि उसी चिरपरिचित ध्वनि 'दादा' को सुना। मैंने पलट कर देखा, तो सामने सौम्यानंद उपस्थित था।

अब वह पूर्ण पुरुषोचित सौन्दर्य से युक्त एक व्यस्क हो गया था, किंतु उसके नेत्रों में वही भोलापन खेल रहा था। **निरंतर प्रकृति के ही सम्पर्क में रहने के कारण उसकी भुजाएं, वक्षस्थल, जंघाएं किसी ठोस चट्टान की ही भांति दृढ़ हो गयी थीं। बेतरतीब बढ़े बाल और दाढ़ी उसके अत्यंत तीक्ष्ण गौर वर्णीय शरीर पर घटाओं की भांति लहरा रही थीं और स्वभाव में बेफिक्री पहले से भी कहीं अधिक बढ़ गयी थी।** अंतर केवल इतना हो गया था, कि उसकी बाल सुलभ चपलताओं का स्थान कुछ गम्भीरता ने ले लिया था।

हम दोनों एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर भावनाओं में भीग गए। मैं उसके रोम-रोम में बसे कामदेव के सौन्दर्य को देखकर विस्मित हो रहा था, कि मेरी ही गोद में खेलने वाला वह छोटा-सा बालक कितने सुन्दर पुरुष के रूप में परिवर्तित हो गया है। वह शायद यह देख रहा होगा, कि किस प्रकार एक दृढ़ व्यक्तित्व कांल चक्र में बद्ध होकर वृद्ध भी हो सकता है।

साधनाओं के जगत से जुड़े दो व्यक्ति मिलें और अपने-अपने अनुभवों की चर्चा न करें— यह सम्भव ही नहीं। जैसा कि मेरा अनुमान था, वह भैरव साधना की ही ओर बढ़ गया था। इस बात के लक्षण तो उसके

बचपन से ही तो भैरव साधना के लक्षण उसके व्यक्तित्व से झलकने लगा था . . . यौवन की आभा से दीप्त होने के बाद भी उसके चेहरे पर वही भोलापन, आंखों में वही सौम्यता झलक रही थी . . . मैंने अपने जीवन में सर्वथा पहली बार इतना सौम्य भैरव साधक देखा। शायद तभी सौम्यता का विस्तार करने के लिए ही तो पूज्य गुरुदेव ने इसे नाम दिया— "सौम्यानन्द"

बचपन से ही प्राप्त होने लग गये थे। साधना की चर्चा के मध्य उसकी अत्यंत आकर्षक काली आंखें बाल सुलभ कौतूहल से चमक उठीं और वह मुझे अपनी साधना स्थली तक ले चलने को उतावला हो बैठा। जैसे किसी बालक को कोई नयी वस्तु मिल जाती है और वह उसे दिखाए बिना नहीं रह पाता— वही निश्छल भाव उसकी बातों, नेत्रों की चमक, उसी पुराने ढंग से मेरा हाथ पकड़ कर खींचने की आदत और हड़बड़ी से झलक रहा था।

मुझे भी उसके साथ चलने में प्रसन्नता ही होती, किंतु उसकी साधना स्थली, सामने तेज प्रवाह से गतिशील गंगा के उस पार कहीं किसी दुर्गम पहाड़ी के पीछे गोपनीय स्थान पर थी। **वर्षा की ऋतु होने के कारण नदी में प्रवाह सामान्य से कई गुना अधिक बढ़ गया था। उसकी भयावहता का अनुमान तो इसी से लग रहा था, कि तेज प्रवाह के कारण उसमें सम्पूर्ण वृक्ष के वृक्ष ही बहते चले जा रहे थे।** साथ ही पहाड़ी स्थान होने के कारण भीतर कितनी चट्टानें छिपी थीं, उसका तो अनुमान ही नहीं लगा सकते थे। मैंने उसका ध्यान इसी बात पर जब दिलाया, तो एकाएक उसके मुख पर वही पुराना चुनौती वाला भाव खेल गया।

गंगा की ओर देखकर वह उसी हठ पूर्वक स्वर में बोल पड़ा— ''गंगा! गंगा से मुझे क्या भय? यह तो मेरी मां है, यह मुझे कोई हानि पहुंचा ही नहीं सकती।''

मैं उसके स्वर में जो विचित्र उन्माद भरा था, उससे कांप उठा, कि पता नहीं अब इसके भीतर कौन-सा दुराग्रह खेल गया है और जब तक मैं संभलूं-संभलूं, तब तक उसने उस उफनती, वर्षा के अतिरिक्त प्रवाह से भरी गरजती नदी में छलांग लगा दी। मैं उसको जब पुकारते-पुकारते कुछ रुआंसा हो गया, तब वह पता नहीं किस कोने से यों निकल आया, जैसे कोई लुका-छिपी का खेल खेल रहा हो।

मैं क्रोध और उसके पुनः निकल आने की प्रसन्नता के मिले-जुले भावों में इस प्रकार उलझ गया, कि मुंह से कोई बोल ही न फूट सका। **जल में भीग कर उसके बलिष्ठ शरीर पर असंख्य जल बिंदु इस प्रकार जगमगा रहे थे मानो मां भगवती गंगा ने अपने इस उदण्ड किंतु निश्छल शिशु को असंख्य चुम्बनों से सिक्त कर समझा-बुझा कर वापिस आने को मना किया हो। सचमुच गंगा उसकी मां ही थी, अन्यथा इस प्रकार से कौन बच सकता था?**

अंत में हम दोनों की सहमति इस बात पर हुई, कि गंगा नदी के तट पर चला जाए और जहां प्रवाह कुछ कम दिखेगा अथवा मोड़ के कारण वेग कम पड़ गया होगा, वहां किसी वृक्ष के तले को पुल सा बना कर नदी को पार कर लिया जायेगा। यद्यपि उसके वेग और हौसले की मन ही मन में प्रशंसा भी कर रहा था। एक प्रकार से उसके क्रियाकलापों में मुझे अपना ही यौवन याद आ रहा था,
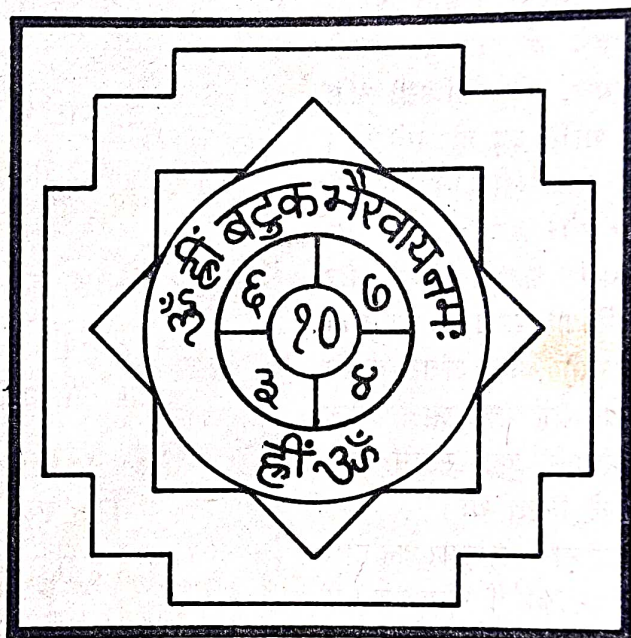
किंतु आयु अधिक हो जाने के कारण अब मैं इस प्रकार के दुस्साहस करने का जोखिम मोल नहीं ले सकता था।

हम लोगों को शीघ्र ही ऐसा स्थान मिल गया, जहां मोड़ के कारण नदी का प्रवाह कुछ मंद भी पड़ता था और किसी प्रकार उसे पार भी कर लिया गया। नदी की दूसरी ओर निर्जन पर्वत स्थान था, वनस्पति की भी बहुलता नहीं थी और वातावरण शुष्क व नीरस था, किंतु पुनः घाटी की ओर उतरते ही घने वन और सरसता का ही साम्राज्य था। पर्वत शिखर पार कर लेने के कारण यद्यपि गंगा का दिखाई देना तो बंद हो गया था, किंतु उसके प्रवाह की ध्वनि उस गहन वन में भी जीवन का संचार कर रही थी। सारा वातावरण विभिन्न पक्षियों, कीटों की ध्वनियों एवं झंकारों से भरा था और कुछ सीमा तक रहस्यमय भी लग रहा था।

पता नहीं क्यों मुझे लग रहा था, कि अभी-अभी यहां से कोई उठकर गया है और उसकी तरंगें वातावरण में शेष रह गयी हैं।

इन्हीं दुविधाओं और प्रकृति की मोहकताओं में डूबते-तैरते अचानक सौम्यानंद की आवाज से मुझे चेतना आयी।

वह कह रहा था– "बस यहीं!"

मैंने अचकचा कर चारों ओर देखा कहीं कोई मंदिर, प्राचीन भवन या कोई कुटिया तक नहीं, फिर यहीं कहां?

उसने तर्जनी से एक ओर संकेत किया, जहां कुछ अनगढ़ ढंग से एक चबूतरा सा बनाकर उसके ऊपर एक मुखाकृति स्थापित थी तथा उसके ऊपर उसी अनगढ़ ढंग से एक छतरी सी भी बना दी गयी थी।

मैंने समीप जाकर देखा, तो वह अष्ट धातु की बनी एक अत्यंत उत्कृष्ट शैली की मुखाकृति मात्र थी, जिसका स्वरूप प्राचीन शैली में निर्मित भगवान सूर्य की मुखाकृतियों से मेल कर रहा था। अंतर केवल इतना था, कि उस मुखाकृति में नेत्र अत्यन्त विशाल थे और चेहरे पर मुच्छिका गुच्छ पूर्ण भव्यता से अंकित था। युगों पुरानी शैली होने के उपरांत भी वह मुखाकृति न तो खंडित थी, न ही उसकी चमक में कोई अंतर पड़ा था।

मैंने सौम्यानंद की ओर प्रश्न भरी दृष्टि से देखा। उसने उत्तर में मुझे बताया, कि यह भगवान श्री भैरव की मूर्ति है; वही मूर्ति, जिसको स्थापित कर प्रखर योद्धा एवं दानवीर कर्ण ने "भैरव साधना" सम्पन्न की थी। उसके अनुसार वह महाभारत कालीन मूर्ति थी और जहां पर स्थापित थी, वहीं पर दानवीर कर्ण ने भैरव साधना भी सम्पन्न की थी।

मुझे यह तो ज्ञात था, कि दानवीर कर्ण ने अपने युद्ध कौशल एवं जीवन को संवारने के लिए अनेक साधनाएं सम्पन्न की थीं। पिंडार गंगा एवं अलकनंदा के संगम पर स्थापित कर्ण प्रयाग नगर इस बात का प्रमाण भी है, जहां उन्होंने भगवान सूर्य की तपस्या कर अमोघ कवच प्राप्त किए थे; किंतु उनके द्वारा भैरव साधना सम्पन्न करने के विषय में न ही मैंने किसी संन्यासी से सुना था, न ही इसके कोई ऐतिहासिक अथवा पौराणिक सांख्यों के विषय में कुछ जाना था। इसके उपरांत भी मुझे यह विश्वास था, कि यह बालक सत्य ही कह रहा है, क्योंकि सौम्यानंद कोई हल्के स्तर का साधक नहीं था। इसके अतिरिक्त यदि परम योद्धा की उपाधि से विभूषित उस अद्वितीय इतिहास पुरुष को भैरव साधना ने अपनी ओर आकृष्ट भी कर लिया हो, तो इसमें आश्चर्य ही कैसा?

यदि दानवीर कर्ण के जीवन चरित्र का गहनता से अध्ययन करें, तो उसके सम्पूर्ण जीवन में उदारता ही उदारता का निर्मल प्रवाह गतिशील मिलता है। उन्होंने किन आग्रहों के वशीभूत होकर महाभारत में पांडवों का साथ न देकर दुर्योधन का ही साथ दिया, वह एक पृथक विचार की बात है, किंतु **गाम्भीर्य, साहस, सौन्दर्य, प्रखरता, उदारता, वचन दृढ़ता ऐसे अनेक गुणों का संगम जिस एक व्यक्तित्व में मिलता है, उसका नाम ही कर्ण है– क्या यही भैरव साधक के भी लक्षण नहीं हैं?**

सौम्यानंद की इस बात से मुझे मूर्ति अर्थात् मुखाकृति के निर्माण का रहस्य भी समझ में आ गया, क्योंकि दानवीर कर्ण स्वयं भगवान सूर्य के ही परम उपासक थे, अतः यह स्वाभाविक ही था, कि जब वे भैरव साधना में प्रवृत्त हों, तब भी उनके द्वारा निर्मित भैरव मुखाकृति सूर्य मुखाकृति के समान ही हो।

फिर भी मेरे मन में उठने वाली जिज्ञासाओं का अंत नहीं हो रहा था। विश्वास-अविश्वास के मध्य झूलते हुए मैंने पूछ ही लिया– "किंतु इस प्रकार खुले में स्थापित यह मूर्ति? इसकी रक्षा, देखभाल कैसे सम्भव हो पाती है?"

उत्तर में सौम्यानंद एक स्मित के साथ मौन ही रहा। शीघ्र ही मुझे अपने ही प्रश्न को लेकर खीझ होने लगी। जो भगवान भैरव सभी की रक्षा में समर्थ हैं, उनकी सुरक्षा की चिंता मुझे क्यों?

उस मूर्ति में कोई अलग सी चैतन्यता थी अवश्य, क्योंकि मेरी दृष्टि उस पर से हट नहीं रही थी। उसे देखने के साथ ही साथ मन में श्रद्धा और वीरता के मिले-जुले भाव उमड़ने लग गए थे और मैं अपने मन ही मन में भैरव स्तुति का पाठ करने लग गया था। अभी तक मैंने जो भी भैरव साधनाएं की थीं, उनमें भैरव मूर्ति को कृष्ण वर्णीय सिंदूर से युक्त ही पाया था, किंतु इस मूर्ति में तो सात्विकता के साथ ही साथ रजोगुण का भी प्रभाव स्पष्ट दिख रहा था। स्वयं दानवीर कर्ण के प्राणों से जिस मूर्ति का संबंध स्थापित हुआ हो, उसको इस प्रकार विलक्षण तो होना ही था। मैं इसे पूज्य गुरुदेव की ही कृपा कहूंगा, जो इस प्रकार से मुझे सहसा एक दिव्य मूर्ति एवं स्थान के दर्शन हो सके।

मुझे यह स्वीकार करने में भी कोई संकोच नहीं है, कि उस समय तक सौम्यानंद इस क्षेत्र में अर्थात् भैरव साधना के विषय में इतनी अधिक पारंगतता प्राप्त कर चुका था, कि मैं उसके सामने छोटा ही पड़ रहा था।

सौम्यानंद से ही मुझे प्रथम बार ज्ञात हो सका, कि भैरव साधना का अर्थ प्रत्येक दशा में केवल तामसिक ही नहीं है वरन इस साधना के राजसिक एवं सात्विक पक्ष भी हैं। वह जिस प्रकार गुरु गम्भीर भाव से मुझे सूक्ष्म भेद समझा रहा था, उसे देख मुझे "ज्ञान वृद्धोऽपि वृद्धः" की बात ही प्रकट रूप में दिखाई दे रही थी। तभी मुझे यह भी समझ में आ सका, कि क्यों पूज्यपाद गुरुदेव ने सौम्य चटर्जी का नाम सौम्यानंद ही रखा। कदाचित उसी के माध्यम से सौम्यता का विस्तार करने की उनकी कोई इच्छा रही होगी और मैंने अपने सुदीर्घ संन्यस्त जीवन में पहली बार ऐसा भैरव साधक देखा, जो न तो किसी प्रकार से वीभत्स था, न उग्र, न ओछा और न ही बात-बात पर अधभरे घड़े की तरह छलक पड़ने वाला।

उसमें चुनौती का भाव, निर्भयता का भाव, अपने पुरुषोचित सौन्दर्य का दर्प अवश्य था, किंतु इसे घमंड की श्रेणी में नहीं लाया जा सकता, ये लक्षण तो भैरव साधक में होंगे ही।

सौम्यानंद ने ही मुझे स्पष्ट किया, कि भैरव वास्तव में कोई तामसिक देव हैं ही नहीं वरन निरंतर तमस से संघर्षशील रहने के कारण ही उनकी स्वयं की भी कल्पना तामसिक रूप में कर ली गयी है। देव वर्ग में होने के कारण वे भी उन सभी दिव्यताओं, सौम्यताओं और आह्लाद से युक्त हैं, जो कि किसी भी देव वर्ग के व्यक्तित्व का अंग हो सकती है।

आगे मैं सौम्यानंद द्वारा प्राप्त उस साधना पद्धति का उल्लेख कर रहा हूं, जो भैरव साधना की राजसी पद्धति है अर्थात् रजोगुण प्रधान है तथा जिसे सम्पन्न कर दानवीर कर्ण ने अपने-आप को एक विलक्षण योद्धा, उदारमना एवं दानवीर रूप में सुस्थापित किया।

कोई भी साधक इस विशेष पद्धति के द्वारा साधना सम्पन्न कर अपने जीवन में राज्य पक्ष से सम्बन्धित सभी लाभों को तो प्राप्त कर ही सकता है, साथ ही यदि किसी कारणवश राज्य बाधा से पीड़ित हो, तो उसका समाधान भी प्राप्त कर सकता है।

इस पद्धति में आवश्यक उपकरण है— ताम्र पत्र पर अंकित **"भैरव यंत्र"**, **"भैरव गुटिका"** एवं **"भैरव माला"**। तेल के दीपक का तथा नीले रंग का इस पद्धति में विशेष महत्त्व है। साधक स्वयं सफेद धोती ही धारण करें, जबकि आसन आदि नीला रहे। तेल का दीपक इतना बड़ा हो, जो साधना के अंत तक जलता रहे। इस साधना के लिए अनुकूल दिवस है— **१५-१२-९५ (कालाष्टमी) अथवा किसी भी मास की अष्टमी**। सर्वप्रथम आसन ग्रहण कर, आत्मशुद्धि एवं आसन शुद्धि करें (इसका विस्तृत विवरण "दैनिक साधना विधि" नामक पुस्तक से प्राप्त करें) तदुपरांत तेल का दीपक प्रज्वलित करें। यंत्र, गुटिका एवं माला का संक्षिप्त पूजन कुंकुम, अक्षत, पुष्प से कर निम्न ध्यान का गम्भीरता पूर्वक उच्चारण करें। इस साधना में ध्यान का महत्त्व ही सर्वाधिक है—

ध्यान

प्रणवं कामदं वियाल्लज्जावीजं च सिद्धिदम्।
बटुकामेति विज्ञेयं महापातक नाशनम्।।
उद्यद्भास्कर सन्निभं त्रिनयनं रक्तांगरागस्त्रजं।
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयंशूलं दधानं करैः।।
नीलग्रीव मुदार कौस्तुभधरं शीतांशुचूडोज्ज्वलं।
बंधूकारुणवाससं भयहरं देवं सदा भावयेत्।।
नमो भैरव रूपाय भैरवाय नमो नमः।
नमो भद्रस्वरूपाय जगदाधार हेतवे।।
वन्दे बालं स्फटिक सदृशं कुण्डलोद्भासितांगं।
दिव्याकल्पैर्नवमणिमयैः किंकिणी नुपूराढ्यैः।।
दीप्ताकारं विशदवदनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं।
हस्ताग्राभ्यां बटुक सदृशं शूल दंडौपधानम्।।
करकलित कपालं कुंडली दंड पाणिः।
तदरुणतिमिर नीलौ व्याल यज्ञोपवीति।।
क्रतु समय सपर्या विघ्न विच्छेद हेतु।
जयति बटुकनाथः सिद्धिः साधकानाम्।।

इसके उपरांत भैरव गुटिका के समक्ष गुड़ का भोग लगाकर भैरव माला से निम्न मंत्र की पांच माला मंत्र जप करें—

मंत्र

।। ॐ भ्रं भ्रं भ्रं क्रीं भ्रं भ्रं भ्रं फट्।।

यदि मंत्र-जप के मध्य में अथवा अंत में भगवान श्री भैरव के सौम्य रूप में स्पष्ट दर्शन हो जायें, तो बिना किसी भय के दीपक उनके हाथ में देकर साष्टांग प्रणाम कर लें तथा जीवन पर्यन्त अभय की याचना कर लें।

साधना की समाप्ति के पश्चात् सभी सामग्रियां माला, यंत्र, गुटिका घर से दूर किसी तिराहे पर या चौराहे पर रख दें।

जीवन में श्रेय व सम्मान की प्राप्ति हेतु यह अनुभव सिद्ध उपयोगी साधना पद्धति है।

साधना-सामग्री न्यौछावर— २५० रु.

साधौ

यही घड़ी यही बेला

अवधूत दीक्षा

सुख, प्रसन्नता, तृप्ति, हर्ष, आनन्द कई शब्द हैं मनुष्य के हृदय के प्रस्फुटन को प्रकट करने के लिए, किन्तु कोई भी शब्द उस भाव को अभिव्यक्त नहीं कर पाया, जो ब्रह्मानन्द का भाव है। उससे भी अनोखी बात्त यह है, कि गुरुदेव का मूल स्वरूप भी वहीं स्थित है। इसी से तो उनका जीवन भी तृप्त होता है, जब वे अपने शिष्य के पंखों में अंगड़ाइयां पढ़ने लगते हैं, क्योंकि हुलस और उछाह बगुलों में नहीं आती केवल हंसों में आती है, तब उन्हें निश्चिन्तता हो जाती है, कि यह वहां तक चला जायेगा, जहां तक ले जाने के लिए मैं आया था— और यह भाव तब आता है, जब मन मुक्त होने लगता है। यही 'अवधूत' भाव का परिचय और प्रथम भावभूमि है।

गुरुदेव को प्रसन्नता तब होती है, जब उनका कोई शिष्य विलक्षणता की ओर बढ़ने का प्रयास करता है या यों कहूं, कि सिंह अपना गोत्र पहिचान कर हुंकार भरने को तत्पर हो जाता है। जीवन में कुछ नये स्पंदन हुए हैं, इसने अमृत का स्वाद चख लिया है और अब उसी को घूंट भर-भर कर पीने की छटपटाहट में सब कुछ त्याग कर निकल पड़ता है। समाज इसी को मूर्खता और दीवानगी कहता है . . . और गुरुदेव इसको पूर्णता। इसी को समाज व्यंग्य से अवधूत कहता है . . . और गुरुदेव शिष्यता।

फिर भी यह तो निश्चित ही है, कि समाज की आंतरिक चेतना ऐसे ही व्यक्तियों से निर्धारित व गतिशील होती है। कोई राजपुरुष, कोई धनाढ्य, कोई सौन्दर्यवान अथवा कोई शूरवीर समाज की धड़कनों को कालान्तर में निर्धारित नहीं करता, अपितु कबीर, तुलसी, दादू, ज्ञानदेव, विवेकानन्द जैसे व्यक्तित्व ही निर्धारित करते हैं, जो "अवधूत" होते हैं। **'अवधूत' शब्द आज भले ही किसी अपशब्द सरीखा बन गया हो, किंतु है यह योग की उच्चतम भावभूमि।** कुण्डलिनी जागरण और सहस्रार जागरण की भावभूमि भी कदाचित् इसके समक्ष कुछ गौण है, क्योंकि यह साक्षात ब्रह्मत्व का भाव है, जिससे युक्त साधक अत्यन्त कम और विरल होते हैं; अवधूत का पाखंड करने वाले यद्यपि सहस्रों की संख्या में होते हैं।

श्रीरामकृष्ण परमहंस की जीवनगाथा से सम्बन्धित एक प्रसंग है, कि वे अपने साधक काल में जब अनेक

गुरु को उस दिन वास्तविक प्रसन्नता होती है, जिस दिन वे देख लेते हैं, कि अब उनका शिष्य साधारण जीव नहीं रहा, अब वह पंख फैला कर उड़ने को तत्पर हो गया है।

— पूज्यपाद गुरुदेव
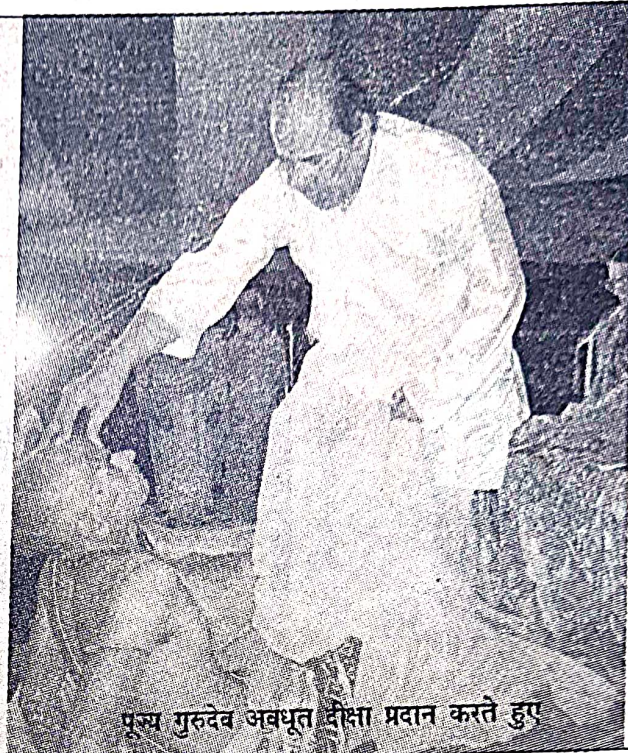
पूज्य गुरुदेव अवधूत दीक्षा प्रदान करते हुए

व्यक्तित्वों से मिल रहे थे, तब उन्हें एक मैले-कुचैले कपड़े पहिने, वीभत्स सा व्यक्ति एक भोज में मिला। वहां से दुत्कारे जाने पर वह कुत्ते के साथ बाहर कूड़े के ढेर पर खाने के लिए बैठ गया। श्रीरामकृष्ण ने उसे अपने ज्ञान नेत्रों से पहिचान लिया, कि वह कोई विलक्षण साधक है और उन्होंने उससे भी ज्ञान की याचना की। पहले तो वह उन्हें भगाता रहा, अंत में समीप बहती नाली की ओर इंगित करके बोला— ''जिस दिन इसमें और गंगा जल में कोई भेद न दिखे, उस दिन अपने को पूर्ण मान लेना!''

यह योग की सर्वोच्च दशा है, जिसका तात्पर्य है— सर्वत्र उसी एक का बोध इतना प्रवल हो जाना, कि प्रयास करने पर भी किसी अंतर को न देख पाना।

— क्या इसके उपरांत भी अवधूत को घृणित और उद्दण्ड कहा जा सकता है?

वस्तुतः हमें अपने ही शास्त्रों का अध्ययन करने की सर्वाधिक आवश्यकता है, किसी विदेशी ज्ञान की अपेक्षा; और तव हमें समझ में आ सकेगा, कि मानवता और उदारता का निरूपण हमारे देश में किस प्रकार से किया गया था। अवधूत की भाव-व्यंजना उसी का एक प्रकार है।

कुछ वर्ष पहले वाराणसी के भगवान राम ने इसी दिशा में स्तुत्य प्रयास किए थे और विश्व भर में स्पष्ट किया था, कि किस प्रकार से एक अवधूत योग की समस्त कलाओं को अपने आप में समेटे होता है; किंतु खेद का विषय है, कि जिस प्रकार के कालचक्र में 'तंत्र' और 'तांत्रिक' शब्द वीभत्सता का पर्याय बन गया है, उसी प्रकार अवधूत शब्द किसी निठल्लेपन और हठधर्मिता का।

पूज्यपाद गुरुदेव ने जहां अन्य प्राचीन विधाओं को पुनर्जीवित करने की क्रिया प्रारम्भ की है, वहीं भारतीय चिंतन और साधनात्मक परिपूर्णता की इस अवधूतात्मक स्थिति को भी उसकी उच्चता तक पहुंचाने का संकल्प लिया है। यह बात और है, कि उन्होंने इस दीक्षा से अपने कुछ गिने-चुने शिष्यों का ही अभिषेक किया है।

तत्त्वात्मक रूप में यह उस भावभूमि का प्रारम्भ है, जहां से शिष्य के भीतर की घृणा समाप्त कर उसे निर्मलत्व देते हुए बहुजनहिताय बनने का संकल्प धारण कराया जाता है। गंगा अपनी सम्पूर्ण यात्रा में जितना अधिक विष ग्रहण करती है, उतना तो शायद विश्व की कोई भी नदी नहीं करती है, फिर भी गंगा अपने अंतिम क्षण गंगासागर तक पवित्र ही मानी जाती है। अवधूत भी ऐसी ही गंगा होता है, जो समाज का विष ग्रहण करते हुए गतिशील रहता है।

अवधूत शब्द किसी तुच्छता का द्योतक नहीं है, वरन् अनेक भावभूमियों का समवेत प्रतीक है—

— **'अ'** अक्षरत्व अर्थात् आत्मा के अविनाशी होने की ओर संकेत कर रहा है।

— **'व'** वरेण्यत्व की ओर अर्थात् उस तत्त्व की ओर जो वरण (ग्रहण) किए जाने योग्य है।

— **'धू'** शब्द 'धूत सर्व पापानां' अर्थात् समस्त पापों की समाप्ति का प्रतीक है।

— **'त'** शब्द चार महावाक्यों में से एक— 'तत् त्वम् असि' अर्थात् 'वह ब्रह्म तुम्हीं हो' की ओर इंगित करने का हेतु है।

इन सभी मनःस्थितियों को स्पर्श करके ही चित्त उन्मुक्त होता है और तब उस हंस की भांति उड़ान भरने को तत्पर होता है, जो गुरुदेव का राजहंस हो। यह उड़ान किसी पलायन का द्योतक नहीं है, वरन् वापिस कर्मभूमि में आने की आतुरता संजोए हुए है, क्योंकि जिसने जीवन में उन्मुक्तता का अनुभव कर लिया, वही प्रेम को भी अनुभव कर सकेगा . . . और उसका यह प्रेम सभी पर होगा, क्योंकि उसने अपने इष्ट, अपने गुरु को प्रेम की आतुरता में भर कर कई-कई रूपों में देखा है और देखते ही रहना चाहता है, क्योंकि इस प्रकार से वह अपनी श्रद्धा और भावना को सहस्र गुणा करके निवेदित करते रहने का अभिलाषी होता है।

अवधूत करुणा की पराकाष्ठा का ही दूसरा नाम है। स्वयं उन्मुक्त होकर भी संहार से विमुख न होने की दूसरी मनःस्थिति का नाम ही अवधूतत्व है। अमृत का पान कर लेने के बाद पुनः विष में ही लौट आना उसका धर्म है। उसके वचन, उसके स्पर्श, उसके क्रियाकलाप सभी मनुष्य मात्र के हितों के लिए ही एक प्रकार से उस परमतत्त्व से वचनबद्ध हैं। इसी कारणवश यदि जीवन में कुछ विशेष करने की आकांक्षा हो, तो प्रयास करके **''अवधूत दीक्षा''** प्राप्त कर ही लेनी चाहिए।

प्रत्येक दीक्षा का भौतिक अर्थ नहीं होता। कुछ दीक्षाएं तो केवल आध्यात्मिक अर्थों के लिए ही निर्मित की गई हैं और यही कारण है, कि अभी तक पूज्यपाद गुरुदेव ने इस उच्चकोटि की दीक्षा का वर्णन सार्वजनिक नहीं किया, क्योंकि उनका खेद है, कि साधकगण उनसे उच्चकोटि की आध्यात्मिक दीक्षाएं ग्रहण करते हुए भी मुख्यतः भौतिक लाभों की चर्चा ही करते हैं।

किंतु मुझे विश्वास है, कि इसी भीड़ में कुछ ऐसे मोती भी छिपे हैं, जो तन-मन-धन से केवल आध्यात्मिक अर्थों में गतिशील होने को आतुर हैं और उनकी रुचि केवल इस तथ्य में है, कि वह कौन-सा उपाय है, जिससे अल्पकाल में ही न केवल अपने जीवन को संवार लिया जाय, अपितु ''बहुजन हिताय'' की भावना से भर कर गतिशील हुआ जाय।

यह लेख ऐसे ही समर्पित साधकों के प्रति एक भेंट है। ऐसे साधक ही समझ सकते हैं, कि जीवन में ऐसे सुयोग बार-बार उपस्थित नहीं होते। यदि आज पूज्यपाद गुरुदेव इस प्रकार की उच्चकोटि की आध्यात्मिक दीक्षा देने को सहमत हो गए हैं, तो कोई आवश्यक नहीं, कि यह अवसर भविष्य में भी सुलभ रहे और बाद में जब इस प्रकार की दीक्षाओं के विस्तृत विवेचन, विवरण प्रकाश में आयेंगे तब पछताने के सिवाय कुछ नहीं रह जायेगा। तब लगेगा कि हमें तो साक्षात् कौस्तुभ मणि मिल रही थी, किंतु हम समझ न पाए।

ऐसे अनेक गुरु भाई हैं, जो समूह का नेतृत्व करने की पात्रता रखते हैं, उन्हें तो इस प्रकार की दीक्षा से अवश्य ही सम्पृक्त होना चाहिए, जिससे कि प्रदर्शन के द्वारा अपने पूज्य गुरुदेव का नाम सम्मान के साथ प्रदर्शित कर सकें और बता सकें, कि वे किस चेतना का अंग रहे हैं।

मैं गुरु आज्ञा से बद्ध होने के कारण इस दुर्लभ दीक्षा के अनेक तत्त्वों को स्पष्ट रूप से वर्णित करने में असमर्थ हूं, किंतु संक्षेप में यही कह सकता हूं, कि जिस दीक्षा के माध्यम से सैकड़ों-हजारों के कल्याण करने की पात्रता स्वयं में आ सके, वह क्या स्वयं को पूर्णत्व एवं ऐश्वर्य देने में समर्थ नहीं होगी?

मुझे आशा है, कि जिस प्रकार साधकों ने आज अपने आचरण से स्पष्ट किया है, कि तंत्र कोई दूषित प्रक्रिया नहीं, वही इस प्रकार की दीक्षाओं के माध्यम से भी स्पष्ट करेंगे। पूज्यपाद गुरुदेव ने एक अवसर पर कहा था— ''इस देश में जितना अंधकार फैल गया है, उसे समाप्त करने के लिए एक नहीं कई गुरु तत्त्व से युक्त व्यक्तियों की आवश्यकता है और इसी की पूर्ति वे इस प्रकार की दीक्षाओं के माध्यम से करते आ रहे।''

''साधौ यही घड़ी यही बेला''! जीवन मुक्ति के सुख को आत्मसात् करने के ऐसे अवसर बार-बार नहीं आते। गुरुदेव अपने पूर्ण शिवत्व में आकर इस प्रकार की दीक्षाएं देने को नित्य तत्पर नहीं होते। भौतिकता प्राप्ति के तो अनेक अवसर जीवन में आते ही रहेंगे। भौतिकता की प्राप्ति के लिए तो साधनाएं भी हैं, किंतु जीवन मुक्त दशा का रसास्वादन करने की न तो कोई साधना है न ही जीवन पर्यन्त अवसर।

सचमुच भाग्यशाली हैं वे; जिन्होंने पूज्य गुरुदेव से विभिन्न दीक्षाएं प्राप्त की हैं, किंतु वे तो परम सौभाग्यशाली हैं, जो इस श्रेणी की दीक्षाएं प्राप्त करेंगे और इसी जन्म में उस स्थान पर पहुंचेंगे, जहां पर उनको देख कदाचित सिद्धाश्रम के योगीजन भी ईर्ष्या कर उठेंगे।

नवीनतम प्रकाशन . . .

ज्ञान और चेतना की अनमोल कृतियां

पूज्यपाद गुरुदेव

"डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी"

द्वारा आशीर्वाद युक्त अनमोल ग्रंथ
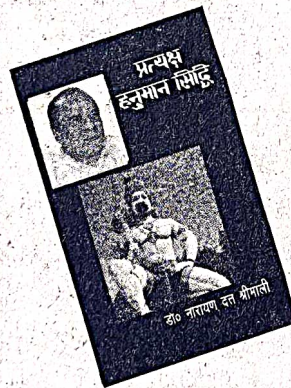
महाकाली साधना	15/-
षोडशी त्रिपुर सुन्दरी	15/-
धनवर्षिणी तारा	15/-
प्रत्यक्ष-हनुमान सिद्धि	15/-
मातंगी साधना	15/-
दीक्षा संस्कार	15/-
सर्व सिद्धि प्रदायक यज्ञ-विधान	15/-
आधुनिकतम हिप्नोटिज्म के १०० स्वर्णिम सूत्र	30/-
तांत्रोक्त-गुरु पूजन	30/-
स्वर्णिम साधना सूत्र	40/-
निखिलेश्वरानन्द चिन्तन	40/-
निखिलेश्वरानन्द रहस्य	40/-
सिद्धाश्रम का योगी	40/-

नोट : ३१ दिसम्बर १९९५ तक सभी कृतियां एक साथ मंगाने पर डाक व्यय माफ

सम्पर्क : **सिद्धाश्रम,** 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034 फोन:011-7182248, फेक्स:011-7196700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोन: 0291-32209,फेक्स:0291-32010

हाई लाइफ जीने वालों के लिए

क्या मानसिक तनाव से उबर नहीं पा रहे हैं?

बेशक आप हाई लाइफ जीने वाले हैं और भौतिक रूप से पूर्ण सम्पन्न हैं, फिर भी कुछ तो ऐसा है ही कि आप चिन्तातुर व परेशान दिखते हैं; इस परिस्थिति का कोई न कोई कारण अवश्य है, यह सोचकर आप उसका हल ढूंढने का प्रयास करते हैं. . .लेकिन थक-हार कर फिर वहीं खड़े हो जाते हैं।

आप जानना चाहते हैं, कि ऐसा क्यों होता है?

ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि आप मानसिक रूप से तनावग्रस्त हैं और तनाव से उबर नहीं पा रहे हैं। तनाव किसी भी कारण से हो, लेकिन उससे अपने मस्तिष्क को मुक्त करने के लिए आप यह छोटा सा प्रयोग तो करके देखिए, निश्चिततः आप तनाव से उबर पायेंगे और आपको मिलेगा एक ताजगी एवं प्रफुल्लता युक्त मस्तिष्क; फिर आप जो भी निर्णय लेंगे वह स्पष्ट और सफलताप्रद होगा। अतः आप **'योगिना'** को अंगूठी में जड़वा कर दाहिने हाथ की छोटी उंगली(कनिष्ठिका) में धारण करें और आंख बंद करके २० बार निम्न मंत्र का उच्चारण करें-

मंत्र

।। ॐ ह्रीं ॐ ।।

फिर अंगूठी को पांच मिनट तक बिना पलक झपकाये देखने का प्रयास करें। एक माह के पश्चात अंगूठी को नदी में प्रवाहित कर दें, क्योंकि फिर आपको सिर्फ मंत्र जप करने की आवश्यकता ही रहेगी।

न्यौछावर— २५० रु.

कहीं आपकी पर्सनल लाइफ डिस्टर्ब तो नहीं हो रही

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कोई न कोई क्षण तो ऐसा होता ही है, जिसे वह पर्सनल लाइफ कह कर सम्बोधित करता है और इस पर्सनल लाइफ में वह किसी का हस्तक्षेप करना पसंद नहीं करता। लेकिन कभी-कभी ऐसा हो जाता है, कि न चाहते हुए भी पर्सनल लाइफ डिस्टर्ब दिखने लगती है। आप अपने प्रयासों से इस डिस्टरबेन्स को खत्म करने का प्रयास करते हैं, लेकिन प्रत्यक्षतः किसी से सहयोग की अपेक्षा भी नहीं करते हैं . . .

. . . फिर भी सहयोग तो चाहिए ही और यह सहयोग आप प्राप्त कर सकते हैं, इस प्रयोग के माध्यम से— इस प्रयोग में आवश्यकता पड़ती है **'विकषा'** नामक गुटिका की, जिसके सामने मात्र १३ बार निम्न मंत्र का उच्चारण करें —

मंत्र

।। ॐ क्लीं फट् ।।

और उसी दिन विकषा को अपने घर से दूर किसी निर्जन स्थान में फेंक दें, किन्तु मंत्र-जप नित्य करें। इस प्रयोग को सम्पन्न कर आप आश्चर्यचकित रह जायेंगे, कि जो उपाय आपकी समझ में नहीं आ रहा था, उसे कितनी सहजता से आप प्राप्त कर सकते हैं।

न्यौछादर— ३५१ रु.

क्या आप जिसे चाहते हैं उसका रिस्पान्स सही नहीं है?
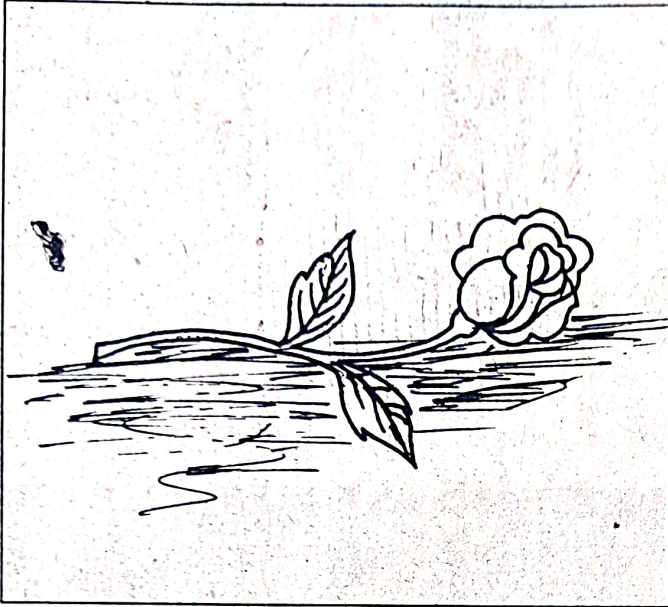
प्यार एक ऐसी भावना है, जो अपने आप हृदय में उत्पन्न हो जाती है; किन्तु हर एक के प्रति हृदय में यह भाव उत्पन्न नहीं होता . . . फिर भी हर एक के जीवन में ऐसा क्षण अवश्य आता है, कि हजारों-लाखों में किसी एक के प्रति वह आकर्षण महसूस करने लगता है; लेकिन आकर्षण तो दोनों तरफ से होना चाहिए, तभी तो प्यार पूर्णता प्राप्त कर सकेगा . . . अगर आपका प्यार एकतरफा है और सामने वाले का रिस्पान्स आपको नहीं मिल रहा है,तो स्वाभाविक है कि आप मानसिक रूप से परेशान रहेंगे, सामने वाले को आकर्षित करने के लिये कई तरह के प्रयास करेंगे और खुद को उसके अनुसार ढालने का भी प्रयास करेंगे।

जब इतने प्रयास आप कर ही रहे हैं, तो एक छोटा सा प्रयास आप और कर लीजिए। जिसे आप चाहते हैं, उसका नाम किसी कागज पर लिखें, फिर उसी कागज में **'नालम्बी'** रख कर किसी धागे से बांध दें और उसके सामने रोज ८ बार निम्न मंत्र का जप करें—

मंत्र

।। ॐ रत्यात्मके नमः ।।

पन्द्रह दिन बाद कागज और नालम्बी को नदी में प्रवाहित कर दें। यह सावधानी अवश्य रखें, कि आपके इस कार्य का पता किसी दूसरे को न लगने पाये।

न्यौछावर— २७५ रु.

व्यापार में कम्पटीटर आगे बढ़ रहा है क्या?

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कम्पटीशन तो होता ही है और प्रत्येक व्यक्ति अपने कम्पटीटर से आगे बढ़ना चाहता है, यही भावना व्यक्ति को उन्नति की ओर अग्रसर करती है। लेकिन यहां जो प्रयोग दिया जा रहा है, इस प्रयोग के माध्यम से जो व्यक्ति व्यापार कर रहे हैं, वे निश्चित रूप से अपने कम्पटीटर से आगे निकल जायेंगे, क्योंकि आपके द्वारा किये जा रहे प्रयास को तीव्र एवं सार्थक बनाने में यह प्रयोग 'उत्प्रेरक' का कार्य करेगा।

'रश्मित' लेकर अपने व्यापार-स्थल (फैक्टरी अथवा दुकान) में स्थापित कर दें और नित्य व्यापार कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व मात्र सात बार **''ॐ हुं ॐ''** मंत्र का उच्चारण कर रश्मित का दर्शन कर लें, पन्द्रह-बीस दिनों में ही परिणाम प्राप्त होने लगेगा. . .और तब रश्मित को नदी में प्रवाहित कर दें।

न्यौछावर— ३०० रु.

पति-पत्नी में कलह मतभेद बढ़ रहा है न!
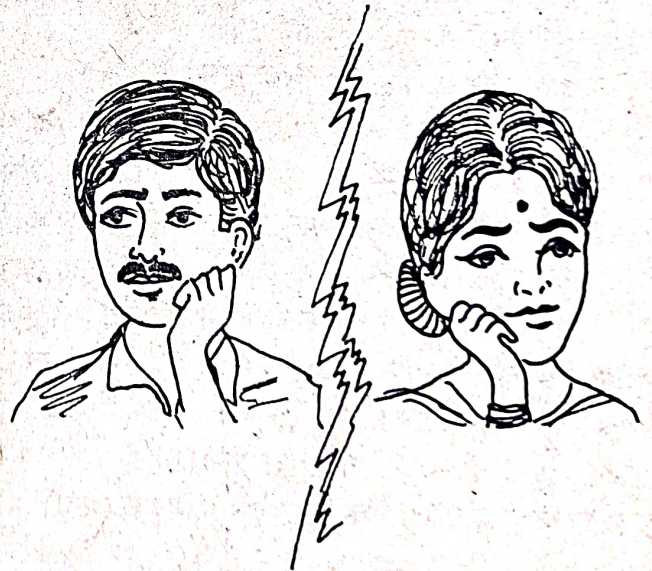
हाई लाइफ जीने वाले लोगों का जीवन बाहर से देखने में तो बहुत ही ग्लैमरस दिखता है, लेकिन उनके पास इतना समय नहीं होता है, कि पति-पत्नी एक-दूसरे को पर्याप्त समय दे सकें, क्योंकि दोनों ही अपने-अपने व्यापार कार्य में व्यस्त रहते हैं . . . लेकिन आवश्यकता तो एक-दूसरे की महसूस करते ही हैं . . . और जब यह आवश्यकता पूरी नहीं हो पाती है, तो वैचारिक

मतभेद उत्पन्न होना स्वाभाविक है, जो धीरे-धीरे कलह का रूप धारण कर लेता है। वैचारिक सामंजस्य बनाए रखने के लिए एक दूसरे की आवश्यकताओं और विचारों को समझ कर, उसी के अनुसार अपने आपको ढालने का प्रयास करना चाहिए और आपका यह प्रयास सफल होगा इस प्रयोग से। पति-पत्नी दोनों ही या कोई एक इस प्रयोग को कर सकता है।

'बीजल' को पति-पत्नी के संयुक्त चित्र के साथ किसी लिफाफे में बन्द करके अपने पर्स में रख लें और दिन में जब कभी भी अवसर मिले, उस लिफाफे को निकालकर उसके सामने मात्र नौ बार **''ॐ क्रीं क्रीं हुं''** मंत्र का उच्चारण करें। नौ दिन के अन्दर-अन्दर ही आपको मनचाहा परिणाम प्राप्त होने लगेगा, नौवें दिन बीजल को किसी नदी में प्रवाहित कर दें।

न्यौछावर– २६५ रु.

यह आपके स्वास्थ्य को क्या हो रहा है?

''स्वस्थ'' शब्द तन और मन दोनों से जुड़ा हुआ है और यदि दोनों में से कोई एक भी स्वस्थ न हो, तो उस व्यक्ति का व्यवहार, कार्य प्रभावित तो होता ही है। कोई आवश्यक नहीं है, कि आपको हाई ब्लड प्रेशर, डायबिटिज जैसे नाम वाली बीमारियां हों तभी आप बीमारी का अनुभव करें; कभी-कभी तो प्रत्यक्षतः किसी बीमारी का पता नहीं चलता, फिर भी अस्वस्थता महसूस होती है; यदि इस स्थिति का निदान नहीं किया जाय, तो यह स्थिति भयंकर बीमारियों में परिवर्तित हो जाती है। कोई बीमारी आपके तन-मन पर राज करे, इससे तो अच्छा है, कि पहले ही उसे समाप्त कर दिया जाय। धन्वन्तरी मंत्रों से चैतन्य **'भीषा'** प्राप्त कर लें और अपने सिर पर से पांच बार घुमा करके उसी दिन उसे नदी में प्रवाहित कर दें। सिर पर घुमाते हुए **''ॐ श्रियै नमः''** मंत्र का उच्चारण करें।

न्यौछावर– ३०० रु.

ब्लड प्रेशर यों समाप्त करिये न!

वर्तमान युग में ब्लड प्रेशर एक ऐसी बीमारी है, जो अधिकांश लोगों को होती ही है। इससे निजात पाने के लिए दवाओं का उपयोग तो करते ही हैं; लेकिन ये दवायें स्थाई निदान नहीं दे पाती हैं। स्थाई रूप से छुटकारा पाने के लिए आप अश्विनी कुमार के आरोग्य मंत्रों से अभिमंत्रित **'रुद्राक्ष माला'** अपने गले में १३ दिन तक धारण करें तथा जब कभी भी अवसर मिले, तो **२१ बार** निम्न मंत्र का उच्चारण करें–

मंत्र

।।ॐ धन्वन्तर्यै नमः।।

इस मंत्र का जप आप कहीं भी, कभी भी कर सकते हैं। १४ वें दिन माला को नदी में विसर्जित करें।

न्यौछावर– ३०० रु.

राज्य भय से निजात पाइये इस तरह

कुछ भी कर लें, लेकिन किसी न किसी रूप में राज्य भय बना ही रहता है; कोई मुकदमा न कर दे, कहीं इन्कमटैक्स का छापा न पड़ जाय, ऐसे अनेकों भय मन को आतंकित किये ही रहते हैं।

आप इस भय को समाप्त करने के लिए अपने प्रयास तो करते ही रहिये और साथ ही इस प्रयोग को भी अवश्य ही करिये, आपको राज्य भय से निजात मिल सकेगा।

'छिन्नमस्ता यंत्र' अपने घर में कहीं, किसी पवित्र स्थान में स्थापित कर दें और जिस दिन स्थापित करें उसी दिन धूप व दीप से पूजन कर, अपनी इच्छा व्यक्त कर दें, फिर नित्य मात्र प्रातःकाल उस यंत्र का दर्शन कर लें, अन्य किसी प्रकार के मंत्र जप या पूजन की आवश्यकता नहीं है। एक माह पश्चात् यंत्र को नदी में प्रवाहित करें।

न्यौछावर– ४८० रु.

अविश्वास से अडिग विश्वास की ओर

मैं १६/८/६५ को कालिन्द्री एक्सप्रेस में सफर कर रहा था, जिसकी रेलवे इतिहास में सबसे भीषण दुर्घटना में १००० से अधिक यात्री मौत के घाट उतर गये।

मैं धार्मिक प्रवृत्ति का होते हुए कुछ जन आलोचना एवं कुछ स्वयं के विचारों के कारण पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली जी के ऊपर दृढ़ विश्वास नहीं करता था। परिवार में दो भाई उनसे जुड़े हुए हैं एवं इसी सौभाग्य के कारण गुरु चालीसा की कुछ प्रतियां घर पर रखीं थीं, सफर से पहले मैंने एक प्रति जेब में रखकर गाड़ी चलने पर गुरुचालीसा का सर्वथा पहली बार पाठ किया, जिसका श्रवण मेरे एक साथी ने किया जो मेरे साथ ही यूनिट ७२ रेजीमेंट में कार्यरत है। पाठ करने के उपरान्त मुझे मीठी नींद आ गई। कालिन्द्री एक्सप्रेस के एक घंटे से कम सफर में मैं अपनी नींद पीछे के डिब्बे में ले रहा था, कि यह भयानक एक्सीडेन्ट हो गया, परन्तु मैं उसी नींद में मस्त था।

जब पुलिस दल ने आकर मुझे उठाने का प्रयत्न किया तो मेरी नींद या वह जो भी था, कि इतना भयंकर एक्सीडेंट होने पर भी नींद नहीं खुली एवं मैं उसी सीट पर लेटा रहा जिसमें मेरे साथी के अलावा सारे १३० फौजी सहकर्मी अपनी जीवनलीला समाप्त कर चुके थे। मेरी आंख खुली तो डिब्बे में लाशें एवं खून की नदी देखते ही मैं सहसा बेहोश हो गया। मैंने समझा कि लुटेरों ने ट्रेन लूटकर यह हाल किया है, परन्तु फिर भी कुछ महिलाओं की बाहर से आवाज आई कि बचाओ. . . निकालो. . . तो एहसास हुआ कि कुछ और एक्सीडेन्ट वगैरह हुआ है। मुझे हल्की चोट बांये पैर में लगी है एवं घुटने पर फ्रैक्चर है, परन्तु मैं चल फिरकर अपने साथियों की लाशों की शिनाख्त कर सका। मेरा डिब्बा कई बार पलटकर दूर जा गिरा था, जिसमें मात्र मैं गुरु चालीसा का जीवन में पहली बार पाठ करने वाला व मेरा साथी सुनने वाला, बचे मेरे साथी के दोनों पैर कट गये परन्तु जान बच गई है।

इस हादसे से गुजर कर अब कोई संशय नहीं रह गया है। अब मेरा सारा जीवन परम पूज्य गुरुदेव जो अध्यात्म एवं धार्मिकता की चरम सीमा हैं, उनके श्री चरणों में सादर समर्पित है। मैंने उनकी कृपा रस का अमृतपान सर्वशक्तिमान परमेश्वर के साक्षात् चरणों से प्राप्त किया है, प्रभु ऐसा सौभाग्य सभी को प्रदान करें। मानव जाति को संशय एवं बुद्धि पक्ष की ही अतिवादी प्रवृत्ति का निराकरण आपकी कृपा से ही संभव है, हमें ऐसी शक्ति प्रदान करें, कि अपने कल्याण के प्रयास करते हुए तथा जन सामान्य के सामान्य जीवन की दैनिक एवं अन्य 'विषम समस्याओं' का समाधान साधनात्मक आध्यात्मिक मार्ग पर चलकर प्राप्त कर सकें। गुरुसेवा ही वास्तविक रूप से सर्वश्रेष्ठ साधना है, अतः किसी भी रूप में मुझे सेवा का अवसर प्रदान करें।

हवलदार – धीरेन्द्र सिंह राठौर
आरमर्ड रेजीमेंट, C/o 56 APO
निवासी-ग्राम– साहसपुर
फरुखाबाद (उ०प्र०)

साधक

भगवती तारा के दर्शन

मैंने १ से ८ अप्रैल ६५ को कराला शिविर में 'भगवती तारा की साधना' सम्पन्न की। घर आकर १५ दिन का साधना-अनुष्ठान प्रारम्भ किया। पहले दिन ही 'परम पूज्य गुरुदेव' ने साधना में क्रमशः तीन स्वरूपों में दर्शन दिये। पहले मृगचर्म लपेटे हुए खुले वक्षस्थल का अत्यन्त आकर्षक, मनोहारिणी स्वरूप आया, फिर आशीर्वाद मुद्रा में गले में माला धारण किये हुए प्रभु आये और अंत में पूर्ण शिव स्वरूप में साकार हो उठे। मैं आनन्द में आकण्ठ डूब गया था एवं अत्यन्त उत्साह से साधना करता रहा।
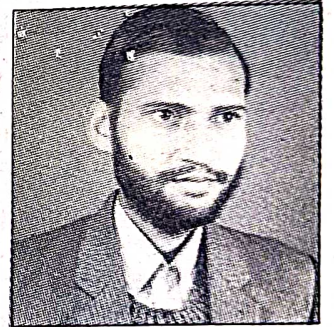
तीसरे दिन ५१ माला होने पर जैसे ही माला नीचे रखी, अत्यन्त तीव्र धमाका हुआ, मानो आसमान फट गया हो। मैं थर-थर कांप रहा था, फिर गुरु चित्र पर ध्यान केन्द्रित कर संयमित हो सका। अंत में एक माला गुरु मंत्र-जप, समर्पण, क्षमा-प्रार्थना कर साधना सम्पन्न की। साधना काल में लगातार कमरे में किसी की उपस्थिति का आभास होते ही मैंने प्रणाम मुद्रा में झुक कर मंत्र-जप जारी रखा। किसी के चलने की पदचाप की स्पष्ट ध्वनि होती। तीव्र सांसों का प्रवाह भी मुझ सहित जय विहार कालोनी के छः साधकों ने स्पष्ट अनुभव किया है। अंतिम १५वें दिन मैं पूर्ण प्रत्यक्षीकरण का मानस बनाकर पूरी उमंग से साधनारत था; साधना पूरी कर मैं साधना स्थल पर लेटा, नींद अभी आयी नहीं थी, कि 'जगदम्बा तारा' अत्यन्त सौम्य रूप में आई और मुझे आशीर्वाद दिया। जगदम्बा तारा ने मुझे कुछ कहा भी था, परन्तु

मुझे याद नहीं रहा।

तीसरे दिन मैंने अत्यन्त द्रवित होकर परम पूज्य गुरुदेव एवं मां तारा से प्रार्थना की, कि मुझे स्पष्ट अनुभूति चाहिए, जो मुझे पूरी तरह याद भी रह सके। ठीक उसी रात प्रातः ३ बजे मैंने देखा, कि साधना स्थल पर, ठीक उसी स्थल पर, उसी आसन पर मां तारा अत्यन्त सौम्य रूप में विराजमान हैं, मैंने उनको नमन किया। मां तारा ने मुझ से वर मांगने को कहा, मैंने ठीक अपने संकल्प के अनुरूप जगदम्बा की कृपा प्राप्ति एवं अपनी माता जी की रोग मुक्ति का वर मांगा। मां तारा आसन से उठ खड़ी हुई,

आशीर्वाद मुद्रा में मुझे अत्यन्त निकट से आशीर्वाद दिया एवं पूछा, कि 'मां को क्या हुआ है?' मैंने कहा— 'गठियावात सहित कई रोग हैं।' मां तारा ने इलाज का भी पूछा, मैंने कहा— 'जो सम्भव था, सब कुछ करके देख लिया है, परन्तु लाभ नहीं हुआ है।' देवी तारा ने उन्हें ठीक होने का आशीर्वाद दिया।

इतने लम्बे समय का वार्तालाप, जगद्जननी के सान्निध्य का आनन्द गुरु कृपा से प्राप्त हुआ, जिसका वर्णन शब्दों में असम्भव है। मां ने पुनः आशीर्वाद दिया एवं अन्तर्धान् हो गयीं।

प्रभु कृपा और गुरु कृपा दो न होकर एक ही हैं और उसको सहज ही यहां प्राप्त किया जा सकता है—

कौन कहता है, कि तुम्हारे जीवन में खुशी न आयेगी।
जब निकला है चांद, तो चांदनी क्यों न बिखर जायेगी।।

शिव कुमार ताम्रकार
नजफगढ़ रोड, दिल्ली

गुरु साधना से रोग की समाप्ति

२४ मार्च ६५ की शाम को मैं ३ से ६ बजे परीक्षा दिला रहा था, तो लगभग ५.४५ बज रहे होंगे, कि मेरे कमर में मोच आ गई। परीक्षा के बाद मैं घर आ गया। मेरा दर्द निरन्तर बढ़ता ही जा रहा था, बैठना-उठना मुश्किल हो रहा था।

शाम को स्नान के बाद मैंने धूप, दीप से गुरु-पूजन किया, परन्तु मोच के कारण मैं बैठ न सका, तो मैंने झुक कर, पूज्य गुरुदेव से क्षमा-याचना कर प्रणाम किया। रात्रि ६.३० बजे तक हालत इतनी खराब हो गई, कि मैं यदि खड़ा होता, तो किसी के सहारे खड़ा होता, यदि चलता तो किसी को पकड़ कर ही चलता था।

खैर मैं जब सोकर उठा, तो मेरे स्वास्थ्य में कोई परिवर्तन

नहीं आया तथा स्नान आदि मैं बहुत मुश्किल से कर पाया, स्नान के बाद जब प्रातः पूजा करने की बारी आई, तो बहुत ही जोर से दर्द कर रहे कटि भाग के कारण मैं बैठ नहीं पा रहा था, परन्तु मैं जिद्द करके बैठ ही गया, यह सोचकर कि जब दर्द इतना असह्य हो जायेगा, कि मैं बैठा नहीं रह सकूंगा, तो जितना भी मंत्र-जप किया जायेगा, करूंगा और स्वयं को गुरु-चरणों में समर्पित कर दूंगा।

पर मैंने गुरु-पूजा करने के बाद ग्यारह माला गुरु मंत्र जप पूर्ण किया, गुरु आरती, समर्पण स्तुति आदि की। उसके बाद मैं पूजा करने के बाद उठा, तो मोच व दर्द ५० प्रतिशत कम हो गया था तथा रात्रि तक मोच तथा दर्द दोनों पूर्णरूप से ठीक हो गया।

इस अनुभव को भेजने के पीछे यही भावना है, कि जो गुरुदेव के प्रति संशय रखते हैं, उन्हें चाहिए कि अपना संशय दूर कर, वे उन्हें पहिचान कर, उनके मार्ग पर चलें। पूज्यश्री प्रत्येक क्षण अपने प्रत्येक शिष्य के साथ रहते हैं, आवश्यकता केवल इस बात को अनुभव करने की है, अपने हृदय में गुरु के प्रति श्रद्धा और प्रेम पैदा करने की आवश्यकता है, तभी वह शिष्य गुरु-कृपा को अनुभव कर सकता है।

गजेन्द्र कुमार साहू,
भटभेरा, रायपुर

मुझे साधना से सम्बन्धित कई अनुभूतियां प्राप्त हो रही हैं, उनमें से एक अनुभूति पूज्य गुरुदेव के चरणों में प्रेषित है—

हमने श्रावण मास के अन्तिम सोमवार को 'पारद शिवलिंग' का पूर्ण विधि-विधान से पूजन किया एवं गुरु-पूजन करने के बाद सस्वर 'नमः शिवाय' मंत्र का ११ माला जप किया। हमारे साथ परिवार के अन्य सदस्य भी थे।

मैंने देखा, कि एक स्वर्ण शिवलिंग मेरे सामने आया, फिर अचानक वह अदृश्य हो गया, इसके बाद मैंने देखा कि भगवान शिव, पार्वती एवं बाल स्वरूप में गणपति को गोद में लिए हुए कैलाश पर्वत पर विराजमान हैं तथा बाबा अमरनाथ का ६ फुट ऊंचा शिवलिंग भी मेरे सामने है।

ऐसा दृश्य देख कर मैं धन्य-धन्य हो गया। वास्तव में यह सब कुछ गुरुदेव का मुझ अकिंचन को आशीर्वाद है, जिसे अत्यन्त ही करुणा के साथ उन्होंने मुझे प्रदान किया है।

बद्रीश के. गुप्ता
हरदोई उ.प्र.

इस मास में विशेष : प्रत्येक साधना निःशुल्क

केवल भारत में रहने वाले पत्रिका सदस्यों के लिए निःशुल्क योजना

समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारम्भ हुई है, इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली **''गुरुधाम''** में ही **पूज्य गुरुदेव** या **श्री राम चैतन्य जी शास्त्री** के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं, जो कि उस दिन **शाम ५ से ८ वजे** के बीच सम्पन्न होती हैं।

साधना में भाग लेने वाले को यंत्र, पूजन-सामग्री आदि गुरुधाम से ही निःशुल्क उपलब्ध होगी (धोती, दुपट्टा और पंचपात्र अपने साथ लावें या न हो तो यहां से प्राप्त कर लें)

११ नवम्बर ६५ – बाला त्रिपुर सुन्दरी प्रयोग

निर्धनता दूर करने, आर्थिक उन्नति, आकस्मिक धन प्राप्ति एवं सम्पूर्ण सौन्दर्य प्राप्ति तथा अखण्ड सौभाग्य प्राप्ति हेतु श्रेष्ठतम प्रयोग।

१८ नवम्बर ६५ – काल भैरव प्रयोग

अकाल मृत्यु निवारण एवं रोगों पर विजय प्राप्त करने का श्रेष्ठतम प्रयोग, पुत्रों-पुत्रियों, पति-पत्नी के बीच कलह की समाप्ति एवं आनन्द प्राप्ति हेतु सक्षम प्रयोग।

२५ नवम्बर ६५ – अनंग सिद्धि प्रयोग

पूर्ण पौरुष प्राप्ति, यौवन अक्षुण्णता, सौन्दर्य उपलब्धि एवं वृद्धावस्था को धकेलने हेतु अद्वितीय प्रयोग, गुप्त मनोकामना पूर्ति का श्रेष्ठतम विधान।

३० नवम्बर ६५ – महाकाल सिद्धि प्रयोग

शत्रुओं पर वज्र की तरह प्रहार करने, मुकदमे में विजय, सम्पूर्ण सम्मोहन एवं राज्य सम्मान, उन्नति प्रदान करने की श्रेष्ठ साधना शिव-अन्नपूर्णा का सिद्धिदायक प्रयोग।

उपरोक्त दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे–

१. आप-अपने किन्हीं दो मित्रों या स्वजनों को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर प्रत्येक से 180/- रुपये वार्षिक शुल्क तथा 24/- रुपये यंत्र का डाक व्यय इस प्रकार कुल 204/- रुपये प्राप्त कर लें। आप इन दोनों मित्रों का शुल्क (204+204 = 408/-) जमा करा कर, कार्यालय से रसीद प्राप्त कर साधना में भाग ले सकते हैं। आपको साधना-सामग्री के साथ ही उपहार स्वरूप निःशुल्क **''कायाकल्प यंत्र''** दिया जायेगा व उन दोनों सदस्यों को पूरे वर्ष भर आपकी तरफ से उपहार स्वरूप **''मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान''** पत्रिका निष्ठापूर्वक प्रतिमाह भेजते रहेंगे।

२. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं दो वर्ष की सदस्यता प्राप्त कर साधना में भाग ले सकते हैं, किन्तु आपको **''कायाकल्प यंत्र''** उपहार स्वरूप प्राप्त नहीं हो सकेगा।

३. आप यदि किन्हीं कारणों से दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बनाने में असमर्थ हैं, तो कार्यालय में 360/- रुपये जमा करके भी साधना में भाग ले सकते हैं।

४. प्रत्येक साधना दिवस का शुल्क 360/- रुपये या दो पत्रिका सदस्य है।

नोट : इस योजना में आप अपनी सदस्यता का नवीनीकरण नहीं करा सकते।

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7196700

चैत्र नवरात्रि शिविर दिल्ली

२५ से २८ सितम्बर १९९५

"चैतन्य शक्ति पर्व" के रूप में परिलक्षित नवरात्रि साधना शिविर एक छोटी सी परिधि में इतना विशाल और भव्य रूप ले लेगा . . . अंधकार को चीरता सूर्य अपने उदय की सूचना देने वाली ऊषा से समस्त आकाश को यूं राग-रंजित कर देगा, किसी ने सोचा भी न था।

भारत की राजधानी दिल्ली में इस बार कुछ प्रत्यक्ष ऐसा ही घटित हुआ, जो अपने आप में अद्भुत, अलौकिक, दिव्य और चमत्कारपूर्ण था, जिसे वहां उपस्थित सामान्य जन, शिष्यों व साधकों ने स्वयं देखा और अनुभव किया।

सुन्दर पुष्पहारों से सुसज्जित गुरुदेव की कार को पण्डाल तक पहुंचने में अभी कुछ क्षण वाकी थे, कि वहां का दृश्य देखने लायक था, एक तरफ गुरुदेव के आगमन का दृश्य, तो दूसरी तरफ शिष्यों की व्याकुलता, आतुरता, यह दृश्य कैमरा टीम ने उतारे, जो कि मनोमुग्धकारी थे. . . सुन्दरता और भव्यता, श्रद्धा और विश्वास, सेवा और समर्पण तथा गुरुदेव के प्रति अटूट आस्था और कुछ कर गुजरने की ललक से वेचैन साधक बड़ी देर से प्रतीक्षारत खड़े उस राह को निहार रहे थे।

इस भव्य समारोह में सम्पूर्ण भारतवर्ष के साथ-साथ नेपाल और दूसरे देशों से भी आये भारी संख्या में साधकों, देश के चप्पे-चप्पे से आये गुरु चरणों के दीवानों और गुरु सेवा के मस्तानों की टोलियां

अपने विभिन्न भाषा और वेशभूषा के साथ उपस्थित थे, परन्तु हरेक की आंखों में ललक थी, केवल एक; उनके मानस में जिस इष्ट की मूर्ति थी, वह भी केवल एक; हृदय समुद्र में जो लहरें थीं, जो भाव थे, वह भी केवल.एक; केवल गुरुदेव और वन्दनीया माता जी और उनके दर्शन, उनका निर्देश, आदेश क्योंकि वे जानते हैं, कि जिस नवरात्रि के दुर्गा पूजन का महत्त्व शास्त्रों में,

अश्वमेध सहस्राणि वाजपेय शतानि च . . .
लक्ष प्रदक्षिणा भूमे दुर्गा पूजनस्य तत् फलम्।।

कहा गया है, कि नवरात्रि में जगदम्बे की आराधना को समस्त प्रकार की मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए, सभी प्रकार की बाधाओं के निवारण के लिए शक्ति साधना का सर्वोत्तम पर्व ऋषियों ने घोषित कर रखा है। ऐसे साधना अनुष्ठानों को जब पूज्य गुरुदेव ने स्वयं एक विशिष्ट लक्ष्य की पूर्ति कराने के उद्देश्य से भाव भरा निमंत्रण देकर शिष्यों को बुलाया हो, तब उसके महत्त्व का वर्णन करना कठिन तो है ही, इस कारण से उनके चरणों में पहुंचना ही था प्रत्येक को और **अब शिविर स्थल विश्व का सबसे बड़ा तीर्थस्थल बन चुका था; यदि कृष्ण की मथुरा, राम की अयोध्या, शिव की काशी, काली की कामाख्या – इन चारों के संगम को एक नाम दे दिया जाय, तो वह था राजा गार्डन स्थित ''जगदम्बा सिद्धिदात्री साधना शिविर''।**
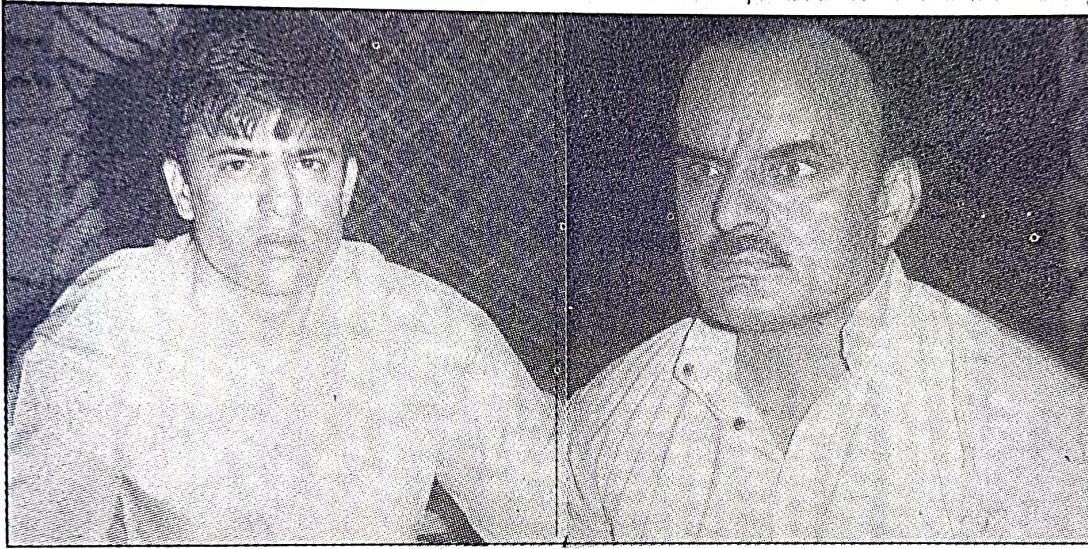
इतना ही नहीं, स्वयं सिद्धाश्रम भी चलकर वहीं आ गया था, क्योंकि कहा गया है–

तहां अवध जहां राम निवासु . . .

जहां गुरुदेव हैं, वहीं सिद्धाश्रम है। इस तरह यह नवरात्रि साधना शिविर प्रारम्भ में ही हजारों कण्ठों से एक साथ जयघोष से जो प्रारम्भ हुआ, उसने निश्चय ही साधक-साधिकाओं की तो बात ही क्या, जिन कानों में भी वह गूंज पड़ी, जिन जाने-अनजाने नेत्रों ने भी पूज्य गुरुदेव, माताजी और गुरु पीताम्बर धारी साधक-साधिकाओं के उल्लासमय समुद्र को देखा, मस्ती में डूबे बिना नहीं रह सका।

पहली बार एहसास हुआ, कि सक्षम गुरु कैसे होते हैं! साधकों की दीवानगी, समर्पित सेवकों की सेवा और भावना – ये तीनों यदि मिल जायें, तो फिजां क्या बनती है, यही एहसास किया सबने . . . शब्दों से उसका वर्णन संभव नहीं है।

श्री एम. पी. शर्मा

पण्डाल की सुन्दर सजावट ने दर्शकों का मन मोह लिया था, गुरुदेव का पुष्पों से सुसज्जित आसन तो किसी मानसरोवर के हंस से कम नहीं दिख रहा था, जिस पर पूज्य गुरुदेव विराजमान थे, एक तरफ वह भव्य सजावट और दूसरी तरफ संगीतमय वातावरण का विस्तार – **जय प्रकाश, आनन्द, अंजली बहिन के मुखों से गुंजरित प्रेमपूरित वाणी, उनके मधुर कण्ठ साधकों व शिष्यों के कण्ठ अवरुद्ध कर, प्रेम रस का पदार्पण कर रही थी, जिससे रोम-रोम आनन्दित हो, होठों से गुरुदेव शब्द के अतिरिक्त अन्य कोई शब्द उच्चरित होता सुनाई नहीं पड़ रहा था।** गुरुदेव की छवि और कार्यों को अपने गीतों की सुन्दर माला से तैयार कर कलाकारों ने गुरुदेव के चरण कमलों में अपने प्रेमाश्रु युक्त भाव अर्पित किये, जो मनोमुग्धकारी वातावरण की सृष्टि कर रहे थे।

गुरुदेव के प्रवचन को सुनकर प्रत्येक जन भाव विह्वल हो उठा था और अपने आप को गुरुदेव के चरणों में समर्पित करने से रोक न सका।

भारत की राजधानी दिल्ली के नागरिक अचम्भित थे, उन्हें समझ में नहीं आ रहा था क्या ऐसा भी हो सकता है! रैलियां तो उन्होंने इतनी देखी हैं, आयोजन तो उनके लिए नित्य क्रिया हो गई है, मोर्चे असंख्य देखे हैं, लेकिन भाव का ऐसा समुद्र, जहां एक ही अनुशासन, एक ही फिजां, एक ही इष्ट, जिसके पण्डाल में पहुंचते ही जयघोषों से पूरा वातावरण प्रभावमान हो जाता था और उनके साथ ही पूरा पण्डाल नृत्यमय हो जाता था। ऐसा लगता था, कि वहां अलग जैसा कुछ भी नहीं है, यदि कुछ है, तो भाव से भरे हृदय, दर्शनों की लालसा में व्याकुल नेत्र और तुमुल जयघोषों की प्रतिस्पर्धा करती हुई वाणी के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।

शिविर प्रारम्भ करते हुए ही **ईशावास्योपनिषद के ''ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं . . . '' मंत्र का उल्लेख कर परम पूज्य गुरुदेव ने स्पष्ट किया, कि ''पूर्णता प्राप्त करना ही आर्य**

संस्कृति का लक्ष्य है।'' 'आनन्द लहरी' में 'शंकराचार्य' के व्यक्त भावों का उल्लेख कर पूज्य गुरुदेव ने स्पष्ट कर दिया कि ''एक शिष्य के लिए इसलिए गुरु सब कुछ होता है, कि शिष्य की पूर्णता ही गुरु का एकमात्र ध्येय होता है।''

''अपने परिवेश में काल के ग्रास में समाते हुए प्राणियों को देखकर भी हम नहीं समझ पाते, कि इतनी सीमित आयु में हमें चरम लक्ष्य की प्राप्ति कर लेनी है। संसार का सबसे बड़ा आश्चर्य यही है।'' यक्ष और युधिष्ठिर संवाद का उल्लेख कर पूज्य गुरुदेव ने स्पष्ट किया— ''आनन्द तो जीवन का वह लक्ष्य है, जो इष्ट दर्शन से, गुरु कृपा से ही मिल सकता है और बिना आनन्द के मृत्यु से छुटकारा नहीं मिलता।''

श्री कृष्ण कुमार

इसी लक्ष्य की प्राप्ति निश्चित रूप से की जा सके, इसलिए उन्होंने **'नवार्ण मंत्र'** का ज्ञान दिया; पूरा जीवन शत्रुओं से निरापद रहे, हम आंतरिक और बाह्य दोनों शत्रुओं पर पूरी तरह से विजय प्राप्त कर सकें, इसलिए **'महाविद्या बगलामुखी'** का सर्वथा गोपनीय और विशिष्ट बीजमंत्रों से सम्पृक्त प्रयोग कराया गया; इतना ही नहीं, **सभी साधकों के शरीर को दिव्य चेतना युक्त मंत्रों के प्रवाह से आरक्षित कर दिया गया;** और तो और गुरु का अहसास, गुरुत्व की आभा से मन और बुद्धि अनुप्राणित रहे, इसलिए सर्वथा पहली बार न केवल **'निखिलेश्वरानन्द महाराज'**, बल्कि जिसे सोचा भी नहीं जा सकता था, **'योगीराज स्वामी सच्चिदानन्द महाराज का भावात्मक हृदय स्थापन प्रयोग'** साधक-साधिकाओं को सम्पन्न कराया, ये सब मात्र एक ही बात का प्रमाण है, कि हर हालत में गुरुदेव अपने शिष्य-शिष्याओं को हर दृष्टि से परिपूर्ण कर देना चाहते हैं। उन्हें पूरी तरह समस्याओं से छुटकारा मिल सके, मनोकामनाएं पूर्ण हो सकें, इसलिए मनोकामना पूर्ति प्रयोग कराते समय एक-दो नहीं सर्वथा पहली बार उन्होंने पांच मनोकामनाओं की पूर्ति हेतु उन्हें अपनी पांच इच्छाएं क्रमवार उच्चरित करने के लिए साधक-साधिकाओं से कहा और इस हेतु विशिष्ट प्रयोग सम्पन्न कराया।

श्री विजय कुमार

गुरुदेव ने अपनी स्पष्ट घोषणा के अनुसार जगदम्बा को सबके मानस में प्रत्यक्ष किया ही और यज्ञ की पूर्णाहुति के समय पूर्णाहुति मंत्र उनके मुख से उच्चरित होते ही, सैकड़ों ने वह दृश्य देखा, अनुभव किया, जब यज्ञ कुण्ड से उठती हुई लपटों में महिषासुर मर्दिनी दुर्गा को लोगों ने आहुति ग्रहण करते देखा।

यह नवरात्रि का चार दिवसीय शिविर पूर्णता का प्रतीक रहा, शक्ति को अपने में उतार लेने का पर्व रहा।

श्री सुभाष शर्मा

गुरुदेव से एकाकार हो परमावस्था को प्राप्त कर लेना, आत्म चक्षुओं को जाग्रत कर इष्ट के साक्षात् जाज्वल्यमान दर्शन कर लेना, एक बारगी ही सारी समस्याओं का समाधान प्राप्त हो जाना, अद्वितीय पुरुष बन जाना कोई सामान्य घटना नहीं, अपितु इतिहास के पन्नों पर स्वर्णिम अक्षरों से लिखी जाने वाली घटना ही है।

गुरुदेव का तो हर कार्य अपने आप में दिव्य है, जिसे समझना साधारण मानव की सीमा से परे की बात है, वह तो उससे विदित परिणामों पर ही ज्ञात हो सकता है, कि अमुक कार्य के पीछे उनका कौन सा हेतु छिपा था।

आंखों देखी घटना के आधार पर यह शिविर अपने आप में ''चैतन्य शक्ति पर्व'' के नाम से ही सम्बोधित हुआ। जैसे किसी भव्य मकान को तैयार करने में नींव में दबे पत्थर की सर्वाधिक महत्ता होती है, जिन पर वह इमारत बुलंद रहती है, वैसे ही इस शिविर की भव्यता, उच्चता और दिव्यता को बनाये रखने के लिए ''सिद्धाश्रम साधक परिवार, दिल्ली'' के कुछ प्रमुख कार्यकर्त्ताओं ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की, जिनके अत्यधिक परिश्रम और लगन का ही प्रतिफल था यह शिविर।

इसमें प्रमुख योगदान रहा है – श्री कृष्ण कुमार, श्री विजय कुमार, बहिन संगीता, बहिन मंजु, बहिन ललिता, श्री ललित कुमार, बहिन रुक्मिणी देवी, श्री एम.पी.शर्मा और पूरा सेवा समिति दल तथा अन्य जिन्होंने टैन्ट, बिजली, रहने-सहने की जिम्मेवारी अपने ऊपर लेकर समाज सेवा का कार्य सम्पन्न किया।

सेवा पार्टी वालों ने साधकों के खाने-पीने की उचित व्यवस्था की, जिससे कि किसी भी शिष्य व साधक को किसी प्रकार की परेशानी न उठानी पड़े . . . और ऐसा हुआ भी, इन्हीं के अथक प्रयासों व लगन से। इन्होंने इस भव्य शिविर की बागडोर अपने हाथ में ले, पूज्य गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त कर, समाज का ही नहीं अपितु विश्व कल्याण का कार्य सम्पन्न करने का सौभाग्य प्राप्त किया।

यह सब तो पूज्य गुरुदेव की कृपा पर ही निर्भर करता है, यदि उनका आशीर्वाद प्राप्त हो जाय, तो क्या कुछ नहीं किया जा सकता . . . और यही हुआ भी है इस नवरात्रि के पावनतम क्षणों में, उनकी विशेष अनुकम्पा से।

– सुभाष शर्मा, दिल्ली

ईशितात्वम्

✲ मैंने आठ अक्टूबर को सम्पन्न होने वाली साधना **'चन्द्रोज्ज्वला अप्सरा साधना'** में भाग लिया। इस साधना को करने के बाद मैंने यह एहसास किया, कि वास्तव में साधनाएं जीवन में कितना महत्त्व रखती हैं। इस साधना को करने के बाद मेरे व्यक्तित्व में आश्चर्यजनक परिवर्तन आया, मैं अत्यन्त गंभीर प्रकृति का व्यक्ति था, मेरे जीवन से उमंग, आह्लाद सभी कुछ खत्म सा हो गया था, अत्यन्त गुस्सैल स्वभाव के कारण कोई गुझसे बात तक करना पसंद नहीं करता था। यह साधना करने के बाद मुझे हर कार्य करने में उमंग और जोश का एहसास होने लगा है, चाहे वह कैसा भी कार्य हो। **मेरे सहयोगी मेरे अन्दर आये परिवर्तन से आश्चर्यचकित हैं, उनका स्वभाव भी अब मेरे लिये मधुर हो गया है, अब वे मुझे देखकर सम्मान से बात करने लगे हैं। मैं पूज्य गुरुदेव से प्रार्थना करता हूं, कि वे इस प्रकार की साधनाओं के क्रम को खत्म न करें,** इन्हें इसी प्रकार से नियमित चलने दें।

– सौरभ यादव, पुरानी दिल्ली

✲ मैं एक सेल्समैन हूं, सेल्समैन का कार्य होता है, जो व्यक्ति उसके पास सामान लेने आये, वह सामान खरीद ही ले, मेरे साथ मगर ऐसा कुछ नहीं। मेरे पास आने वाला प्रत्येक व्यक्ति वस्तु खरीदे ही, ऐसा नहीं होता था। मेरे द्वारा सामान की बिक्री भी औरों की अपेक्षा कम थी। मैं गुरुदेव का शिष्य हूं, लेकिन किन्हीं कारणों से साल भर मैं गुरुदेव से मिल नहीं पाया था। लेकिन **अक्टूबर की पत्रिका में प्रकाशित 'ललिताम्बा प्रयोग', जो कि १४ अक्टूबर को सम्पन्न हुआ, मैंने उसमें समय निकाल कर भाग लिया।** यह प्रयोग सम्पन्न करने के बाद मेरे जीवन में आश्चर्यजनक परिवर्तन आया है। अब मेरे पास आने वाला हर व्यक्ति मेरी बातों से प्रभावित हो सामान जरूर ले जाता है तथा दुबारा भी जब कभी वह सामान लेने आता है, तो वह मुझसे ही सम्पर्क करना चाहता है। **मेरे मालिक भी मुझसे प्रसन्न रहने लगे हैं** तथा मैं उनका विश्वसनीय भी बन गया हूं। वास्तव में यह परिवर्तन तो इस 'ललिताम्बा प्रयोग' को सम्पन्न करने से ही आया है।

– जितेन्द्र कुमार, कलकत्ता

✲ पूज्य गुरुदेव! आज के समय में लड़की का विवाह करना कितना मुश्किल कार्य होता है, यह तो एक पुत्री का पिता ही समझ सकता है। मेरी चार पुत्रियां [illegible] मैं एक अत्यन्त ही साधारण पद पर कार्यरत हूं, अतः मैं अपनी पुत्री के विवाह के लिए यथोचित धन-संग्रह नहीं कर पा रहा था, मैं इसी संबंध में गुरुधाम आपसे मिलने आया और आपने मुझसे कहा, कि **"१४ अक्टूबर को 'कुबेर साधना' होगी, तू इसे कर ले।"** मैंने इसे गुरु आज्ञा मानकर इस साधना में भाग लिया। **इस साधना को सम्पन्न करने के बाद मुझे आकस्मिक धन प्राप्ति हुई, जिससे मैं अपनी पुत्री का विवाह भली प्रकार से कर पाया।** पूज्य गुरुदेव ने यदि उस दिन मुझे यह साधना सम्पन्न न करवायी होती, तो शायद मैं अपनी पुत्री का विवाह इतने अच्छे ढंग से नहीं कर पाता। मैं पूज्य गुरुदेव का ऋणी हूं।

– बी. डी. सिंह, भोपाल

✲ मैंने अक्टूबर की पत्रिका अपनी बम्बई यात्रा के समय खरीदा, इस पत्रिका ने मुझे अत्यन्त प्रभावित किया। इसमें निकली साधनाओं के विषय में जानने के लिए मैं गुरुधाम, दिल्ली पहुंचा। वहां पहुंच कर मैंने दीक्षा ग्रहण की तथा अपनी समस्या बताई। तो शास्त्री जी ने कहा, कि **आप 'त्रिपुर सुन्दरी प्रयोग' सम्पन्न करें, यह प्रयोग २८ अक्टूबर को होगा।** मैंने उस दिन गुरुधाम पहुंच कर 'त्रिपुर सुन्दरी प्रयोग' सम्पन्न किया। मैं एक व्यापारी हूं और व्यापार में तो शत्रुओं का भय तो लगा ही रहता है, कि कहीं कोई शत्रु व्यापार में नुकसान न कर दे। **यह प्रयोग सम्पन्न करने के बाद से मेरा व्यापार निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर होता जा रहा है तथा किसी न किसी माध्यम से मुझे नुकसान पहुंचाने वाले व्यक्तियों की योजनाएं असफल होती जा रही हैं।** जिन मुकदमों का कोई निर्णय नहीं हो रहा था, उन सभी की स्थिति मेरे पक्ष में होती जा रही है तथा व्यापारिक क्षेत्र में मुझे सम्मान प्राप्त होने लगा है। मैं पूज्य गुरुदेव का आभारी हूं, जिन्होंने इस भौतिकता के युग में भी इन साधनाओं के महत्त्व को स्थापित कर रखा है।

– शरद गोस्वामी, बम्बई

श्रीमती नलिनी शुक्ला
एम. ए., पी-एच. डी.
संस्कृत (स्वर्णपदक प्राप्त)
११, रामकृष्ण नगर
कानपुर-१२

वन्दे गुरो निखिल! ते चरणारविन्दम्

येनोद्धृता स्वतपसा भुवि सौख्यसारा
लोपोन्मुखी विमलसंस्कृतिराप्त कीर्तिः (भारतस्य)।
योगीन्द्र सिद्ध गणवन्दित पादपद्म्!
वन्दे गुरो निखिल! ते चरणारविन्दम्।।१।।

भावार्थ –

संसार में जितने प्रकार के भी भौतिक एवं आध्यात्मिक सुख संभव हैं, उन सबको अपने अन्दर समेटे हुए, सर्वविध प्रगति एवं आत्मोत्थान का केन्द्रभूत होने के कारण विश्वगुरुत्व की महिमा से मण्डित, जो विमल उदार भारतीय संस्कृति अपने उत्कर्षवश सम्पूर्ण विश्व में विख्यात है; परन्तु पाश्चात्य संस्कृति के भौतिकता प्रधान वातावरण के अन्धानुकरण से लुप्त सी होती जा रही है। दिन-प्रतिदिन क्षीण होती हुई भारतीय संस्कृति की पावन गंगा की धारा को अपने तपोवल की अजस्र वर्षा से जिन्होंने उच्छल विपुल प्रवाह की गरिमा प्रदान की है। सिद्धाश्रम के महिमामय श्रेष्ठ योगी भी जिनके चरणकमलों के रजकणों को शिरोधार्य करके, अपने आपको कृतकृत्य समझते हैं; ऐसे विश्ववन्द्य गुरुवर निखिलेश्वरानन्द जी के चरणारविन्दों की भावमग्न होकर, विनम्रता पूर्वक सतत वन्दना करती हूं।।१।।

यैर्यापिता तपसि वर्षसहस्रकाणि
नक्तं दिनं न गणितं जपसाधनायाम्।
अष्टाङ्गयोग कुशलैरपि नित्यपूज्यं
वन्दे सदा निखिल! ते चरणारविन्दम्।।२।।

भावार्थ –

हे गुरुवर! पूज्यपाद निखिलेश्वरानन्द जी मैं सदा सर्वदा समर्पित भाव से आपके उन चरणकमलों की वन्दना करती हूं, जिनका अर्चन, पूजन सिद्धाश्रम के वे योगीगण भी अपना परम सौभाग्य समझते हैं, जिन्होंने कई-कई हज़ार वर्षों तक, वहां घनघोर तपस्या की है; मंत्र जप एवं साधना करते हुए जिन्होंने तपस्याकाल के जीवन में स्वर्णिम दिवस, अरुणिम प्रभात कब आया? कब सूर्योदय एवं सूर्यास्त हुआ? कब रात्रि का सघन अन्धकार अथवा

विश्राम की वेला आई? यह भी नहीं जाना और इस प्रकार सहस्रों वर्षों तक दिन-रात निर्बाध, अखण्ड साधनाओं से सिद्धाश्रम जैसी उत्कृष्ट तपोभूमि को अलंकृत करने में सारा जीवन व्यतीत कर दिया। जीवन की सर्वतोगामिनी प्रगति, उन्नति एवं समस्त साधनाओं की सिद्धि का उत्तम, सुनिश्चित सोपान, क्रियात्मक योग के अष्ट अंग (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान एवं समाधि) सर्वमान्य हैं। समस्त सिद्धियों एवं आत्मसाक्षात्कार हेतु योग के इन आठ अंगों में पारंगत होना अपने आप में सर्वविध साधनाओं में श्रेष्ठता का, सौभाग्य का सूचक होता है; परन्तु परमहंस योगिप्रवर पूज्यपाद निखिलेश्वरानन्द जी की चरण रज से अपने भाल का श्रृंगार करना, चन्दन की भांति अपने मस्तक पर लगाना, अष्टांग योग में प्रवीण योगी भी अपना अहोभाग्य समझते हैं, ऐसे महिमामय पूज्यप्रवर गुरुवर निखिलेश्वरानन्द जी के चरणकमलों की मैं श्रद्धाप्रवण भाव से सदा सादर वन्दना करती हूं।।२।।

वेदत्रयी विलसितं निखिलं जगद् वै
उद्‌घोषयन्ति ऋषयश्च जनाः सुविज्ञाः।
वेदाः श्रयन्ति निखिलेश्वरमेव भक्त्या
वन्दे महापुरुष! ते चरणारविन्दम्।।३।।

भावार्थ –

सम्पूर्ण जगत् ऋक् यजुः एवं साम मण्डलों में विभक्त होने से वेदत्रयी का ही विलास है; ऋषिगण ज्योतिर्विद् एवं अन्यान्य सृष्टि के निगूढ़ तत्त्व के रहस्यवेत्ता इस तथ्य की उच्चस्वर से उद्‌घोषणा करते हैं। कोटि-कोटि ब्रह्माण्डनायक षोडश कलोपेत परब्रह्म श्रीकृष्ण के पुनः नवल अवतरण गुरुवर निखिलेश्वर हैं; इस रहस्य से सिद्धाश्रम के तथा अन्यान्य ग्रहों के योगीजन व तत्त्ववेत्ता सुपरिचित हैं। अतः निखिलेश्वर अर्थात् समस्त ब्रह्माण्ड के अधीश्वर ही वेदत्रयी का भी आश्रय हैं अर्थात् तीनों वेद स्वयं निखिलेश्वर का सहारा ग्रहण करते हैं। ऐसे महापुरुष पूर्णावतार के पद-पद्म-सुरभि रसाप्लावित हृदया मैं उन गुरुदेव के चरणारविन्दों की श्रद्धासमिद्ध भाव से वन्दना करती हूं।।३।।

मंत्रार्णवं जटिलतंत्र विधिं तथैव
संमथ्य हस्तगतरत्ननिधिं स्वसिद्धेः–
मुक्तं ददत् सततशिष्यपरम्परासु
वन्दे गुरो निखिल! ते चरणारविन्दम्।।४।।

भावार्थ –

मंत्रों के अथाह समुद्र का समग्ररूपेण अवगाहन अथवा मंथन करना असाधारण प्रतिभा के धनी मनीषी, साधक या योगी आदि किसी मानव के लिये, एक कठिन चुनौती भरा कार्य है। दुरूह तंत्र-शास्त्र की साधनाएं करना अग्निक्रीड़ा के समान कठिन है। उनमें पूर्णता प्राप्त करके, मंत्र तन्त्रात्मक सिद्धियों को हस्तगत करना तो बड़े-बड़े मांत्रिकों, तान्त्रिकों एवं योगियों के लिये भी असंभवप्राय है। परन्तु जो निखिलेश्वर हैं; वे तो समस्त ब्रह्माण्डनायक हैं। उन्होंने अपनी प्रचण्ड तपस्या व साधनाओं के अमोघ मंथन-दण्ड से मंत्र-तन्त्रों के गहन, दुर्गम समुद्र को मथ कर, तलावगाहन करके अनन्त सिद्धियों के विपुल रत्नकोष को साधिकार प्राप्त किया है; यह उन्हीं का अपराजेय साहस है, पुरुषार्थ है।

दुर्लभ कठोर साधना से अर्जित, उस पृथुल रत्नराशि को भी जो अनवरत अपनी अमन्द कृपावृष्टि एवं सफल शक्तिपात के माध्यम से जो अपने लाखों शिष्यों में मुक्त हस्त से वितरित करते हुए; जो अपने नाम के निखिलेश्वरत्व एवं नारायणत्व को सतत सार्थकता प्रदान कर रहे हैं; ऐसे परम उदार करुणासागर, शिष्यप्रिय, स्नेहमूर्ति गुरुवर निखिलेश्वरानन्द जी के चरणारविन्दों की मैं बारम्बार अर्चना, वन्दना करती हूं।।४।।

निर्व्याजसौहृदसुधोच्छलदृङ्‌निपातै (दृष्टिपातैः) –
राप्लावयन् (आप्लावयन्) स्वशरणागत शिष्यवृन्दम्,
इष्टाभ्रवर्षणपटुत्वयशांसि तन्वन्
वन्दे गुरो निखिल! ते चरणारविन्दम्।।५।।

भावार्थ –

हमारे गुरुदेव सहज नैसर्गिक स्नेह के उच्छल वारिधि स्वरूप हैं और अपनी छलकती हुई सौहार्द सुधामयी दृष्टि द्वारा शरण में आये हुए शिष्य समूह को वे अनवरत रसाप्लावित करने में सिद्धहस्त हैं। विविध लौकिक एवं पारलौकिक, भौतिक किंवा आध्यात्मिक अभीष्ट सिद्धि की वर्षा में कुशल मेघ से बन कर, वे अपने शरणागतों पर मनोवाञ्छित फलप्रदान रूपी कृपा वृष्टि करते हुए वे निरन्तर दसों दिशाओं में अपने विमल सुयश का विस्तार करते हुए, भवताप तप्त चित्तों को शीतलता प्रदान करते हैं। हे गुरुवर! हे निखिलेश्वर! आपकी महिमा एवं कीर्ति के वर्णन में अपनी वाणी को असमर्थ पाकर भी, अपने इन अकिंचन भाव प्रसूनों की अञ्जलि अर्पित करके, विनतभाव से मैं आपके चरणकमलों की बारम्बार वन्दना करती हूं।।५।।

जीवन में अपराजित रहने का तात्पर्य है, प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करना

अपराजिता सिद्धि

जीवन में सुख-दुःख, आशा-निराशा, हार-जीत तो आते-जाते रहते हैं, पर इन पर विजय प्राप्त कर लेना ही जीवन की श्रेष्ठता है, जब व्यक्ति विघ्न-बाधाओं को लांघता हुआ, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कठिनाइयों पर सफलता प्राप्त कर 'विजयी' कहलाता है, तो वह उसके जीवन का सर्वश्रेष्ठ सौभाग्य होता है।

जीवन में हार मानना, पराजित होना व्यक्ति के लिए एक असहनीय स्थिति होती है, जिससे वह अपने-आप को जीवन भर माफ नहीं कर पाता, क्योंकि हारे हुए व्यक्ति के मन में उत्पन्न हेय भावना उसके मानस की सक्रिय ग्रन्थियों को कमजोर कर उसे और भी निर्बल बना देती है, जिससे व्यक्ति समझ

वर्तमान सामाजिक व्यवस्था का निरीक्षण करें, तो इस व्यवस्था क्रम के तीन पक्ष प्रत्येक मानव जीवन को प्रभावित करते हैं– आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक। इन तीनों पक्षों को जो पूर्ण सफलता के साथ अपने जीवन में उतार लेता है, वही सही अर्थों में विजयी कहलाता है।

बैठता है, कि वह जीवन में शायद कुछ भी करने योग्य नहीं है। चाहे वह पति-पत्नी के बीच का झगड़ा हो, चाहे खेल-कूद की कोई प्रतियोगिता हो या जीवन का कोई भी क्षेत्र हो; हर युवक, वृद्ध और बच्चे का मनोभाव यही होता है, कि वह जीवन के हर क्षेत्र में विजयी होता हुआ, निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर हो। उसके जीवन का ध्येय मात्र इतना ही होता है, कि उसे जीवन में कभी भी पराजय का मुंह न देखना पड़े।

अपराजिता यंत्र

१		२
८	क्लीं १०८ क्लीं	३
७	ऐं श्रीं ऐं	४
६		५

पराजित व्यक्ति तब होता है, जब वह अपने-आप को दुर्बल अनुभव करने लगता है . . . और जो दुर्बल है, उसका जीवन व्यर्थ है। प्रत्येक व्यक्ति के मन में एक ही बात होती है, कि जीवन का कोई भी क्षेत्र हो, वह उसमें उच्चता के शिखर पर हो, व्यापारी हो तो बड़े से बड़ा, डॉक्टर हो तो ऊंचे दर्जे का आदि- आदि, किसी भी स्थिति में महत्त्वहीन होना उसे पसंद नहीं है।

मनोवैज्ञानिकों के कथनानुसार इस महत्त्वबोध की भावना को जीवन की 'श्रेष्ठता' कहा गया है और महत्त्वहीनता के एहसास को 'हीन भावना' कहा गया है, 'निम्नता' कहा गया है। उच्चता प्राप्त करने की आकांक्षा सर्वप्रथम बाल्यावस्था में ही उत्पन्न होने लगती है, जो धीरे-धीरे बढ़ती उम्र के साथ उसके अन्दर महत्त्वाकांक्षा का रूप धारण कर लेती है और जब व्यक्ति अपनी महत्त्वाकांक्षा को पूरा नहीं कर पाता है, तब वह निराश होता है, दुःखी और संतप्त होता है, क्योंकि वह अपने अन्दर उस तत्त्व का, उस शक्ति का, उस बल का अभाव महसूस करता है, जिसके द्वारा उच्चता के शिखर पर पहुंचा जा सकता है और मार्ग में आये अवरोधों को दूर किया जा सकता है।

अवरोधों को दूर कर, बाधाओं को लांघते हुए निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर होना कोई सरल कार्य नहीं है, क्योंकि आपाधापी के इस युग में जहां सिर्फ ईर्ष्या, द्वेष, वैमनस्य के कारण ही परस्पर विरोधी प्रत्याघात किये जाते हैं, ऐसे में अपराजित होना एक दुष्कर कार्य है, वस्तुतः यह कोई सुगम पथ नहीं, अपितु कटीला मार्ग है; जिसको पार कर अपनी मंजिल प्राप्त कर लेना जीवन का सौभाग्य ही कहा जा सकता है।

कहने को तो यह एक छोटा-सा जीवन है, किन्तु इस जीवन को जीवंतता के साथ, सम्पन्नता के साथ, पूर्णता के साथ जीने में लम्बा समय बीत जाता है। हो सकता है, कि यह जीवन-यात्रा अधूरी रह जाय और हम मृत्यु को प्राप्त हो जाएं, किन्तु ऐसा अधूरा एवं अपूर्ण जीवन तो मानव जीवन की श्रेष्ठता नहीं कही जा सकती।

भौतिकवादी युग में मानव को श्रेष्ठता प्राप्त करने के लिए तीन प्रकार की व्यवस्थाओं से होकर ही गुजरना पड़ता है– आर्थिक, राजनैतिक और सामाजिक। जब वह व्यवस्था क्रम को पार करने में भली प्रकार सफल हो जाता है, तभी वह सही अर्थों में 'पूर्ण मानव' कहलाता है, परन्तु प्रतिस्पर्धावादी इस युग में निरन्तर उन्नति के पथ पर गतिशील हो उन सभी कार्यों को पूर्णता देना, बिना शक्ति
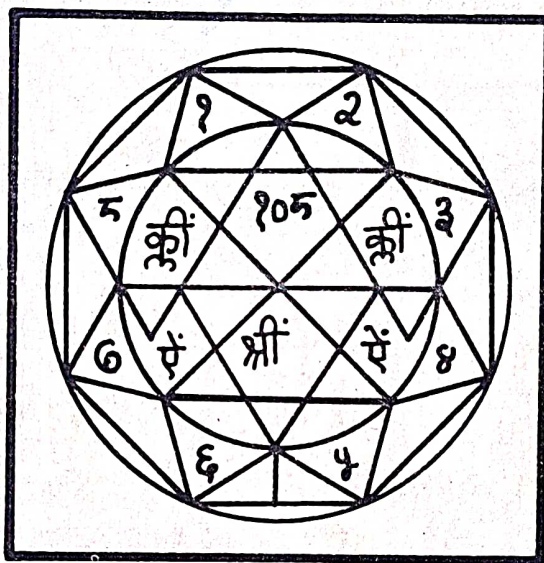
तत्त्व के प्रादुर्भाव के एक असम्भव सा कार्य है।

वस्तुतः व्यक्ति अत्यधिक परिश्रम करने के वाद भी जीवन में सफलता प्राप्त नहीं कर पाता, ऐसा भी नहीं है, कि वह प्रयत्न नहीं करता हो, ऐसा भी नहीं है, कि वह किसी प्रकार की न्यूनता बरतता हो, परन्तु फिर भी वह सफलता अर्जित नहीं कर पाता।

यह बात तो निश्चित है, कि व्यक्ति अपने प्रयत्नों से भी अपने-आप को असफल ही पाता है और अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाता, इसलिए उसे किसी ऐसी दिव्य शक्ति का आश्रय लेना ही पड़ता है, जो उसे उसकी मंजिल तक पहुंचा दे।

जो कायर होते हैं, निर्बल होते हैं, वे ही पराजित होते हैं, किन्तु जिनके पास "अपराजिता सिद्धि" हो, वे पराजित हो ही नहीं सकते। इस यंत्र को धारण करने के वाद जीवन में आये दुःख, दैन्यता, अभाव रूपी समस्त शत्रुओं को आसानी से परास्त किया जा सकता है। इस यंत्र के माध्यम से हर छोटी-बड़ी मुश्किलों को सरलता से दूर किया जा सकता है।

— जब जीवन में हार की सम्भावना हो।

— रोग से मुक्ति न मिल पा रही हो।

— जब शत्रु हावी हो रहे हों।

— जब व्यापार में वृद्धि न हो रही हो या प्रमोशन नहीं मिल रहा हो।

— जब मुकदमे में बार-बार हार का सामना करना पड़ रहा हो।

— चाहे जीवन का कोई भी क्षेत्र हो, अपराजिता सिद्धि की महत्ता को सभी ग्रंथों, शास्त्रों में एक स्वर से स्वीकार किया गया है, कि यह एक ऐसी साधना है, जिससे जीवन के हर क्षेत्र में विजयी हुआ जा सकता है, जीवन में आई अड़चनों को, बाधाओं को दूर किया जा सकता है और कठिनाइयों पर सफलता प्राप्त कर "विजय श्री" की उपाधि से अपने-आप को अलंकृत किया जा सकता है।

साधना विधिः

१. यह साधना १०.१२.९५ को की जा सकती है। इस साधना को किसी भी माह में किसी भी **शुक्रवार** के दिन प्रारम्भ किया जा सकता है।
२. इस साधना के लिए आवश्यक सामग्री है— **"अपराजिता यंत्र"** एवं **"अपराजिता चक्र"**।
३. जिस दिन साधना करनी हो, उस दिन प्रातःकाल ५ बजे से ७ बजे के बीच में स्नानादि से निवृत्त होकर पीले वस्त्र धारण करें।
४. **उत्तराभिमुख** होकर **पीले आसन** पर ही बैठ जायें।
५. अपने सामने जमीन पर यदि आपको अल्पना (रंगोली) बनानी आती हो, तो बनायें अथवा गुलाल से 'स्वस्तिक' अंकित करें।
६. स्वस्तिक के मध्य में पांच पीले पुष्प रखें और उनके ऊपर यंत्र को स्थापित करें। यंत्र का पंचोपचार पूजन करें।
७. स्वस्तिक की दाहिनी ओर किसी पात्र में "चक्र" को रखें। चक्र का भी पुष्प, अक्षत से पूजन करें।
८. दाहिने हाथ में जल लेकर आप जिस कार्य के लिए इस साधना को सम्पन्न कर रहे हैं, उसका उच्चारण कर जल जमीन पर छोड़ दें।
९. **५१ बार निम्न मंत्र का उच्चारण करें** और एक-एक पुष्प यंत्र एवं चक्र पर चढ़ा दें—

।। ॐ ऐं ऐं अपराजितायै क्लीं क्लीं फट्।।

१०. फिर हाथ जोड़कर इस जगत के पालन कर्ता भगवान विष्णु को नमन करें एवं आसन से उठ जायें।
११. उपरोक्त क्रम के अनुसार ही तीन दिन तक साधना करनी है।
१२. तीसरे दिन यंत्र एवं चक्र को किसी मिट्टी के बर्तन में रखकर पुष्प और अक्षत चढ़ायें और नदी में विसर्जित करें।

इस साधना को सम्पन्न करने वाला साधक स्वयं अनुभव करेगा, कि उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता मिलनी सम्भव हो रही है।

सूचना

ज्ञात हुआ है, कि नेपाल (काठमाण्डू) में दो-तीन शिष्य, जिन्हें गुरुदेव ने न तो कोई शक्ति दी है और न अधिकृत ही किया है, अपने-आप को गुरु मान कर या "पूज्य गुरुदेव ने मुझे यह अधिकार दिया है" और "सिद्धाश्रम संस्था नेपाल" का बोर्ड लगाकर दीक्षा या पत्रिका शुल्क जमा कर रहे हैं, जो कि गलत है, केन्द्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार ने किसी को भी इस प्रकार का अधिकार नहीं दिया है, और न दीक्षा देने की शक्ति ही दी है।

यदि पूज्य गुरुदेव या 'सिद्धाश्रम साधक परिवार' की आड़ में वे ऐसा कर रहे हैं तो गलत है, और ऐसे लोगों से प्रत्येक नेपाली शिष्यों को सावधान रहना चाहिए।

आंखिन देखी

स्वयं को और अपने परिचित गुरु-भाइयों को पूरे विश्व में प्रतिस्थापित कीजिये।
'मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान' के पांच लाख पाठक आपके कार्यों और आप द्वारा संचालित गतिविधियों के सम्पर्क में आने को आतुर हैं।

★ यह नवम्बर का अंक है, जनवरी ६६ से हम एक नया स्तंभ "आंखिन देखी' प्रतिमाह लगभग तीन-चार पृष्ठों में प्रकाशित करने जा रहे हैं।

★ प्रत्येक माह एक-एक प्रान्त की गतिविधियों से पत्रिका के द्वारा पूरे विश्व को परिचित करायेंगे।

★ जनवरी ६६ के अंक में **मध्य प्रदेश की गतिविधियां** प्रकाशित करेंगे और फरवरी ६६ के 'विशेषांक' में **बिहार की गतिविधियां** प्रकाशित करेंगे। मध्य प्रदेश के गुरुभाई अपने आसपास के कार्यों का लेखा-जोखा ३०-११-६५ तक तथा बिहार के गुरुभाई ३१-१२-६५ तक पूरा लेखा-जोखा **दिल्ली पते पर** – 'गुरुधाम' ३०६ कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४ पर पहुंचा दें।

★ इस स्तंभ के अन्तर्गत आप – "सिद्धाश्रम" और "मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान" के विस्तार के लिये कब क्या कार्यक्रम संचालित कर रहे हैं? इसमें लगभग कितने गुरुभाई एकत्र होते हैं? क्या-क्या कार्यक्रम होता है? लिख कर भेजें।

★ क्या आप गुरुदेव द्वारा लिखित पुस्तकें कमीशन दर पर वी.पी.पी. से मंगा कर 'पुस्तक प्रदर्शनी' का आयोजन अपने क्षेत्र में प्रतिमाह करते हैं?

★ क्या आपने "एक दिन का लघु शिविर" लगाने का निर्णय लेकर योजना बनाई है?

★ क्या आप पत्रिका के नये सदस्य बना कर 'सिद्धाश्रम साधक परिवार' का विस्तार करने की ओर गतिशील हैं?

★ आपने १-११-६५ से ३०-११-६५ तक कितने नये पत्रिका सदस्य बनाये? इससे सम्बन्धित रसीद, प्रमाण व सूची जोधपुर के पते पर तथा दिल्ली के पते पर भी भेजें। कम से कम दस पत्रिका सदस्य बनाना जरूरी है। जिससे कि हम आपका फोटो व आपके कार्य प्रकाशित करें।

★ क्या आपने १-११-६५ से ३०-११-६५ तक प्राचीन दुर्लभ पत्रिकाएं जोधपुर से मंगा कर धर्मार्थ अस्पताल के रोगियों, मित्रों, भक्तों और स्वजनों में वितरित की है। आपने जितनी पत्रिकाएं मंगाई हैं, यदि धनराशि मनिऑर्डर या ड्राफ्ट से भेजी हो, तो उसकी रसीद व फोटो स्टेट कॉपी हमें भेज दें; कम से कम ३० पत्रिका मंगाने वाले ही पत्र भेजें।

★ क्या आपके यहां बुक स्टॉल है, क्या आपने उसे पत्रिका रखने के लिये प्रेरित किया है, क्या आपके कहने से वह स्टॉल पर पत्रिका रखने लगा है?

★ भविष्य में आपकी इस परिवार की वृद्धि हेतु क्या योजना है? अपनी योजना से अवगत करायें।

★ क्या आपके गांव या शहर में 'सिद्धाश्रम' संस्था का गठन हुआ है? तो संस्था सदस्यों की सूची भेजें।

विशेष सूचना

प्रत्येक विवरण के साथ आप अपना फोटो या कार्यक्रम का फोटो, पूरा पता, विस्तार से विवरण निम्न पते (**सिद्धाश्रम, ३०६, कोहाट एन्क्लेव पीतमपुरा, नई दिल्ली-३४**) पर लिफाफे से या रजिस्टर्ड डाक से भेजें। लिफाफे के ऊपर लिखा हो **"आंखिन देखी"**।

पूज्यपाद गुरुदेव ने समस्त शिष्यों को शुभ कामनाएं व आशीर्वाद प्रदान किया है।

संकटमोचन हनुमानाष्टक

बाल समय रवि भक्ष लियो
तब तीनहुं लोक भयो अंधियारो।
ताहि सों त्रास भयो जग को
यह संकट काहु सों जात न टारो।।
देवन आनि करी विनती
तब छांड़ि दियो रवि कष्ट निवारो।
को नहिं जानत है जगमें
कपि संकटमोचन नाम तिहारो।।१।।
बालि की त्रास कपीस बसै गिरि,
जात महाप्रभु पंथ निहारो।
चौंकि महा मुनि साप दियो
तब चाहिये कौन विचार विचारो।।
लै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु
सो तुम दास के सोक निवारो।।को०-२।
अंगद के संग लेन गये सिय
खोज कपीस यह बैन उचारो।
जीवत ना बचिहौं हम सों जु
विना सुधि लाए इहां पगु धारो।।
हेरि थके तट सिंधु सबै तब लाय
सिया-सुधि प्रान उबारो। को०-३।।
रावन त्रास दई सिय को सब
राक्षसि सों कहि सोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु
जाय महा रजनीचर मारो।।
चाहत सीय असोक सो आगि सु
दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो। को०-४।।
वान लग्यो उर लछिमन के तब
प्रान तजे सुत रावन मारो।
लै गृह वैद्य सुषेन समेत
तबै गिरि द्रोन सु वीर उबारो।।
आनि सजीवन हाथ दई तब
लछिमन के तुम प्रान उबारो। को०-५।।
रावन जुद्ध अजान कियो तब
नाग की फांस तबै सिर डारो।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल
मोह भयो यह संकट भारो।।
आनि खगेस तबै हनुमान जु
बंधन काटि सुत्रास निवारो। को०-६।।
बंधु समेत जबै अहिरावन
लै रघुनाथ पताल सिधारो।
देवहिं पूजि भली विधि सों
बलि देउ सबै मिलि मंत्र विचारो।।
जाय सहाय भयो तब ही
अहिरावन सैन्य समेत संहारो। को०-७।।
काज किये बड़ देवन के तुम
वीर महाप्रभु देखि विचारो।
कौन सो संकट मोर गरीब को
जो तुमसों नहिं जात है टारो।।
वेगि हरो हनुमान महाप्रभु
जो कछु संकट होय हमारो।। को०-८।।

दोहा

लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लंगूर।
वज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर।।

सिया वर रामचन्द्र की जय
पवन सुत हनुमान की जय
उमापति महादेव की जय
बोलो भई सब संतन की जय
पूज्य गुरुदेव की जय

।। इति संकटमोचन हनुमानाष्टक सम्पूर्ण।।

अपनों से अपनी बात

❊ पिछला महीना सिद्धाश्रम साधक परिवार के लिये काफी व्यस्त रहा। १२ से २० अगस्त के बीच **प्रगति मैदान, नई दिल्ली में** गुरुदेव की पुस्तकों, पत्रिकाओं व ऑडियो, वीडियो कैसेट्स की स्टॉल लगी और उसमें अनपेक्षित सफलता मिली।

हैदराबाद में डॉ० श्रीमाली साहित्य की प्रदर्शनी लगी, जिसमें पूरे सप्ताह भीड़ छाई रही।

मद्रास में **वेल्लर कम्यूनिकेशन्स हॉल** में **डॉ० श्रीमाली जी** की पुस्तकों की प्रदर्शनी लगी और पहले ही दिन सारी की सारी पुस्तकें बिक गई, फिर भी मांग बनी रही।

इसी प्रकार **पटना (बिहार)** में पुस्तकों के साथ-साथ मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका के प्राचीन दुर्लभ अंकों की मांग बहुत अधिक रही। यह सब गुरुदेव डॉ० श्रीमाली जी की पुस्तकों के प्रति पूरे भारत में पाठकों की चाह का द्योतक है।

❊ हमने ३०६ कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली (टेलीफोन - ७१८२२४८, ७१६६७००) **में नित्य रात्रि को** ७ बजे से १० बजे के बीच एक नई साधना सम्पन्न कराने, समझाने तथा सिखाने की परम्परा प्रारम्भ की है। साधकों तथा आसपास के शिष्यों ने आगे बढ़कर इसे अपनाया और सन्तोष अनुभव किया, **दीपावली के बाद से यह समय सायं ६ से ७ बजे के बीच रहेगा,** जिसमें नित्य एक नई साधना विधि को वहीं सम्पन्न कराया जायेगा।

❊ मद्रास के 'श्री हरी प्रसाद जी' जो कि एक समर्पित साधक हैं, पिछले एक वर्ष से उन्होंने संकल्प ले रखा है, कि वे प्रतिमाह दस नये पत्रिका सदस्य बनायेंगे और प्रतिमाह १० पत्रिका के दुर्लभ अंकों को मंगाकर निःशुल्क वितरण करेंगे, और वे पिछले एक वर्ष से बराबर यह कार्य कर रहे हैं; वे कहते हैं, कि इससे बड़ा "ज्ञान-दान" और क्या हो सकता है! अन्य साधकों को भी ऐसा संकल्प लेना चाहिए।

❊ **"नफिक्ट"** (डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली फाउण्डेशन इन्टरनेशनल चेरिटेबल ट्रस्ट) ने निश्चय किया है, कि अगले वर्ष यह ट्रस्ट भारत से **पांच साधकों का चयन कर योरोप के** पांच देशों — लन्दन, फ्रांस, पेरिस, ऑस्ट्रिया, रोम, जिनेवा (स्विट्जर लैण्ड) में अपने खर्चे पर भेजेगा, जहां जाकर वे "अध्यात्म" एवं गुरुदेव के कार्यक्रमों का प्रसार करेगें।

❊ पुस्तक प्रदर्शनी के लिए शिष्यों को ४० प्रतिशत कमीशन पर (अग्रिम धनराशि भेजने पर) गुरुदेव की पुस्तकें भेजते हैं, बशर्ते प्रत्येक पुस्तक १० या इससे ज्यादा मंगावें, इस चालीस प्रतिशत से वे प्रदर्शनी का खर्च आदि वहन करते हैं।

❊ **'नफिक्ट'** ने जोधपुर में **"लक्ष्मी नारायण"** का एक भव्य मन्दिर बनाने का निश्चय किया है, जिसका निर्माण कार्य दीपावली के बाद से प्रारम्भ करने की योजना बन चुकी है और यह लाखों का प्रोजेक्ट है, इस अवसर पर "नफिक्ट" प्रत्येक शिष्य और साधक का आहवान करता है, कि **वह बिना किसी स्वार्थ, इच्छा या आकांक्षा के** इस योजना में भागीदार बनें और प्रत्येक शिष्य या साधक मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट से धनराशि सहयोग दें, मनीऑर्डर या धनराशि **" डॉ० नारायण दत श्रीमाली फाउण्डेशन इन्टरनेशनल चेरिटेबल ट्रस्ट"** के नाम से भेजें, किसी व्यक्ति विशेष के नाम से नहीं। जो जोधपुर में देय हो (चैक स्वीकार्य नहीं होंगे) इस सहयोग को भेजने की अवधि १-११-९५ से ३१-१२-९५ के बीच ही निर्धारित है। एक-एक शिष्य, एक-एक साधक इस कार्य में भाग लेगा ही, ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास है।

प्रत्येक शिष्यों, साधकों और पाठकों को पूज्य गुरुदेव का आशीर्वाद।

जीवन में पहली बार आपके लिए

इस मास का

श्रेष्ठतम उपहार

प्रत्येक शिष्य, साधक और अध्येता को,

जो पूज्य गुरुदेव में पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास रखते हैं,

सिद्धाश्रम के सिद्ध योगियों से आशीर्वाद युक्त

सर्व सिद्धि प्रदायक

सम्पूर्ण तिब्बती यंत्रों में सर्वश्रेष्ठ
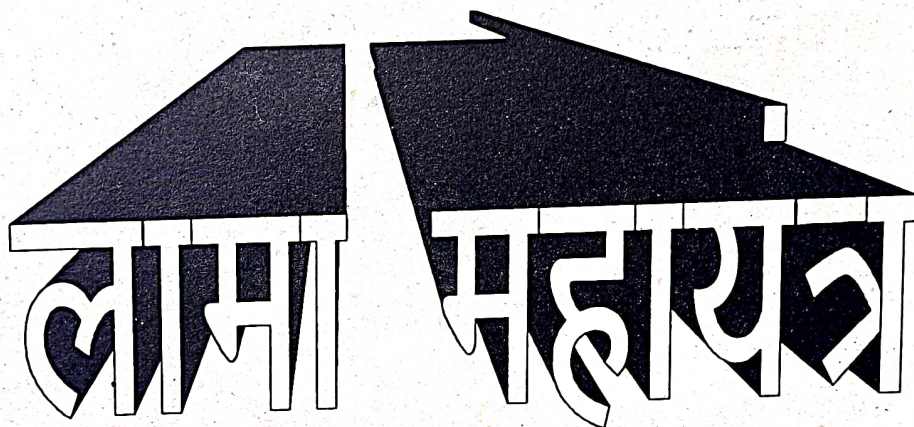
जो अद्भुत, आश्चर्यजनक

एवं

समस्त धन, यश एवं मनोकामना सिद्ध

करने में समर्थ है . . .

आप क्या करें–

आप पत्रिका में दिया हुआ पोस्टकार्ड भली प्रकार से भर लें . . . अपने किन्हीं दो मित्रों या स्वजनों का पूरा पता एवं नाम भर कर हमें भेज दें, पोस्टकार्ड प्राप्त होने पर हम आपको 360/- रुपये दो वर्षीय पत्रिका सदस्यता शुल्क + 30/- रुपये वी० पी० पी० चार्ज, इस प्रकार मात्र 390/- की वी० पी० पी० से **'लामा महायंत्र'** भेज देंगे, और यह यंत्र आपको सुरक्षित रूप से प्राप्त हो जायेगा। वी० पी० पी० छूटने पर आपके दोनों मित्रों को अगले महीने से एक-एक वर्ष का पत्रिका सदस्य बना कर रसीद आपको भेज दी जायेगी।

नोट :
- इस योजना का लाभ केवल भारत में रहने वाले पत्रिका सदस्य ही ले सकते हैं।
- **इससे आप अपनी सदस्यता का नवीनीकरण नहीं कर सकते।**

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका के प्रारम्भिक पृष्ठों पर प्रकाशित नियमों के अन्तर्गत।

: प्राप्ति स्थान :

सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन : 011-7182248, फेक्स : 011-7196700

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन : 0291-32209, फेक्स : 0291-32010

पोस्टल-डी.एल.नं० 19052/93

A.W.H.

रजिस्ट्रेशन नं० 55791/93

दीक्षाओं के द्वारा मन को
शान्त और शुद्ध किया जा सकता है।

इस माह में पड़ने वाले विशेष दिवस जिनका महत्त्व अपने-आप में सर्वोपरि है, इन विशेष दिनों में पूज्य गुरुदेव निम्न दीक्षाएं प्रदान करेंगे-

दिनांक : 7 से 10 दिसम्बर 1995

7.11.95	ब्रह्मत्व सिद्धि दीक्षा
8.11.95	कृष्णत्व सौन्दर्य प्राप्ति दीक्षा
9.11.95	अष्ट लक्ष्मी प्राप्ति दीक्षा
10.11.95	सम्पूर्ण रोग निवारण दीक्षा

दिनांक : 21 से 24 नवम्बर 1995

21.11.95	ब्रह्माण्ड सम्मोहन दीक्षा
22.11.95	सर्व ग्रह शांति दीक्षा
23.11.95	ऐश्वर्य लक्ष्मी प्राप्ति दीक्षा
24.11.95	शीघ्र ऋण मुक्ति दीक्षा

दुर्लभ दीक्षाएं

भैरव दीक्षा, यक्षिणी दीक्षा, राजयोग दीक्षा, सम्मोहन दीक्षा, धन्वन्तरी दीक्षा, लक्ष्य भेद दीक्षा, महालक्ष्मी दीक्षा, आत्म-ज्ञान दीक्षा, तंत्र सिद्धि दीक्षा, काल ज्ञान दीक्षा, ध्यान सिद्धि दीक्षा, वैवाहिक योग दीक्षा, अभीष्ट सिद्धि दीक्षा, पूर्ण वीर वैताल दीक्षा, ब्रह्मदर्शन सिद्धि दीक्षा, भूत-भविष्य ज्ञान दीक्षा, मंगली दोष निवारण दीक्षा, गर्भस्थ बालक चेतना दीक्षा, आत्मा-वार्तालाप सिद्धि दीक्षा, वशीकरण दीक्षा

– विशेष –

प्रत्येक विशेष दीक्षा लेने वाले साधक को उसी स्थान पर लगभग आधे घंटे की साधना सम्पन्न करा कर, फिर शक्तिपात से युक्त विशेष मनोवांछित दीक्षा देने का प्रावधान. . . और साथ में साधना-सिद्धि से सम्बन्धित गोपनीय तथ्यों का रहस्योद्घाटन गुरुदेव के द्वारा. . .

सम्पर्क :
306, कोहाट एन्क्लेव, नई दिल्ली - 110034
फोन : 011-7182248, फेक्स: 011-7196700

अंक 11
वर्ष 15

नोट : ये दीक्षाएं पूज्यपाद गुरुदेव केवल "गुरुधाम" दिल्ली में ही उपरोक्त दिवसों में प्रदान करेंगे।